जैन ग्रन्थ माला

भक्तिगीताञ्जलि

प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन

प्रो. डॉ. पुष्पलता जैन

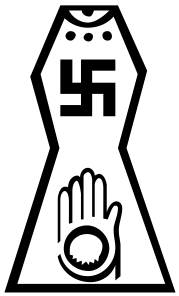

२००८

सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर

कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी

जैन ग्रन्थ माला

भक्तिगीताञ्जलि

प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर

प्रो. डॉ. पुष्पलता जैन

डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी
मानद निदेशक
कला एवं धर्म शोध संस्थान
बी. ३३/३३, ए-१, न्यू साकेत कालोनी
बी.एच.यू., वाराणसी-२२१००५
फोन नं. ०५४२-२३१०६८२

डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर
मानद निदेशक
सन्मति प्राच्य शोध संस्थान
न्यू एक्टेंशन एरिया, १३, तुकाराम चाल,
सदर, नागपुर - ४४०००१
फोन नं. ०७१२-२५४१७२६
ई-मेल : drbcjain@hotmail.com

ISBN No. 81-85783-33-0

@ लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण २००८

मूल्य :

कला प्रकाशन
बी. ३३/३३, ए-१, न्यू साकेत कालोनी
बी.एच.यू., वाराणसी-२२१००५
फोन नं. ०५४२-२३१०६८२

आलोक प्रकाशन
न्यू एक्टेंशन एरिया, १३, तुकाराम चाल,
सदर, नागपुर - ४४०००१
फोन नं. ०७१२-२५४१७२६
ई-मेल : drbcjain@hotmail.com

अनुक्रमणिका

	णमोकार महामंत्र	९
	अपनी बात	१०-१३

१. भजन

		पृष्ठ संख्या
१.	अरिहन्तों को नमस्कार	१
२.	णमोकार मंत्र यह महामंत्र	२
३.	मोह जाल में फँसे हुये हैं	३
४.	भावना दिन-रात मेरी	४
५.	एक णमोकार महामंत्र	५
६.	तेरे दर को छोडकर किस दर जाऊं मैं	६
७.	वीर भज ले रे भाया	७
८.	पाप खपाने आये है आज	८
९.	ऐ सोच जरा नर चेतन	९
१०.	पल पल बीती जाए उमरिया	१०
११.	करती हूँ वन्दना मोक्षगामी	११
१२.	बाजे कुंडलपुर में बधाई	१२
१३.	हो... प्रभु सुमरण करले प्राणी	१३
१४.	इतनी शक्ति हमें दे दो वीरा	१४-१५
१५.	नरकों में नरकों में जाना नहीं	१६
१६.	ओ मुनिवर, ओ मुनिवर जाना नहीं	१७
१७.	वीर स्वामी मोक्षगामी हो गये	१८
१८.	जैनी हो के पानी न छाना	१९
१९.	कभी प्यासे को पानी पिलाया नही	२०
२०.	केशरिया केशरिया आज.....	२१
२१.	मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा	२२
२२.	दयालु प्रभु से दया मांगते हैं	२३
२३.	हम अगर वीर वाणी में श्रद्धा करें	३२
२४.	प्रभुवर ! स्वीकारो अभिवादन ये हमारा	३३
२५.	सिद्धारथ रो राज दुलारो	२६
२६.	ओ भक्ति दीप जलाए	२७
२७.	हो प्रभु मनवा के खोले हैं द्वार	२८
२८.	महावीर नाम बोलो	२९
२९.	मीठो-मीठो बोल थारो	३०
३०.	ओ जगत के शांति दाता	३१
३१.	मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ	३२
३२.	तुम अगर दर्श देने का वादा करो	३३
३३.	जीवन को यों न गवाँ	३४
३४.	मिलती है साधुओं की संगत कभी-कभी	३५
३५.	पारस प्रभु जी पार लगा दो	३६
३६.	फेरो इक माला ओ....	३७
३७.	मेरे मन मन्दिर में आन पधारो	३८
३८.	प्रभु भक्ति में शक्ति बड़ी	३९
३९.	ऐ स्वामी तेरे भक्त हम	४०
४०.	आतम की जोत जगाते चलो	४१
४१.	सोते-सोते में निकल गई सारी जिन्दगी	४२
४२.	सिद्धार्थ नन्दन त्रिशला के प्यारे	४३
४३.	पंखीड़ा हो पंखीड़ा हो पंखीड़ा...	४४

४४.	निरखों अंग-अंग जिनवर के	४५
४५.	महिमा अपार है	४६
४६.	तुम से लागी लगन	४७
४७.	नवकार मंत्र ही महामंत्र	४८
४८.	मंत्र जपो नवकार मनवा	४९
४९.	रंगमा रंगमा रंगमा रे	५०
५०.	सांवलिया पारस नाथ शिखर पर	५१
५१.	त्रिशला मां के ललन	५२
५२.	णमोकार की महिमा न्यारी	५३
५३.	भक्तामर का पाठ करो नित प्रातः	५४
५४.	दिन रात मेरे स्वामी	५५
५५.	ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है	५६
५६.	सब मिलके आज जय कहा	५७
५७.	होली खेलें मुनिराजे	५८
५८.	मैंने तेरे ही भरोसे महावीर	५९
५९.	दो घड़ी है बावरे	६०
६०.	'ढूँढ ले ठिकाना'	६१
६१.	लिया प्रभू अवतार	६२-६३
६२.	महावीरा झूले अखियन में	६४-६५
६३.	भीनी-भीनी उड़े रे फुहार	६६
६४.	मंत्र णमोकार	६७
६५.	हे प्रभो ! आनंददाता	६८
६६.	बीतीं घड़ियां जीवन की	६९
६७.	उमरिया रह गयी थोड़ी (तर्ज)	७०

२. आरती

१.	ओम जय जय जय जिनदेव	७१
२.	इह-विधि मंगल आरती कीजे	७२
३.	जय महावीर प्रभो	७३
४.	पूजा-पाठ रचाऊं मेरे स्वामी	७४
५.	जय सन्मति देवा	७५
६.	जय पारस देवा प्रभु	७६
७.	जय शांतिनाथ स्वामी	७७
८.	मैं तो आरती उतारूं रे	७८
९.	हे शारदे माँ, हे शारदे माँ	७९

३. अध्यात्म पद

१.	चेतन तू तिहुंकाल अकेला	८०
२.	कित गये पंच किसान हमारे	८१
३.	चिन्तामन स्वामी सांचा साहिब मेरा	८२
४.	दुविधा कब जैहै या मन की	८३
५.	रे मन ! कर सदा सन्तोष	८४
६.	वो दिन को कर सोच जिय मनमें	८५
७.	मानत क्यों नहिं रे, हे नर सीख सयानी	८६
८.	तुम प्रभु कहियत दीन दयाल	८७
९.	आयो सहज वसन्त खेलैं सब होरी होरा	८८
१०.	चेतन खैलै होरी	८९
११.	मिथ्या यह संसार है रे	९०

१२. अरहंत सुमरि मन बावरे ९१
१३. अब हम नेमिजी की शरन ९२
१४. मेरी बेर कहा ढील करीजे ९२
१५. अे मन भज भज दीन दयाल ९३
१६. चरखा चलता नाही रे ९४
१७. सुनि ठगनी माया ९५
१८. भगवंत भजन क्यों भूला रे ९६
१९. होरी खेलूंगी घर आए चिदानंद ९७
२०. चेतन खेलो सुमति संग होरी ९८
२१. निजपुर में आज मची होरी ९९
२२. उत्तम नर भव पायकै १००
२३. आतम रूप अनुपम अद्भुत १०१
२४. जाऊं कहां तज शरन तिहारो १०२
२५. मेरो मन ऐसी खेलत होरी १०३
२६. हमतो कबहुं न निजघर आये १०४
२७. सांची तो गंगा यह वीतराग वानी १०४
२८. महिमा है अगम जिनागम की १०५
२९. आयौ सरन तिहारी, जिनसुर १०६
३०. करौं आरती आतम देवा १०७
३१. प्रभु विन कौन उतारै पार १०८
३२. जनमें नाभि कुमार १०९

४. स्वरचित काव्य

१. णमोकार मंत्र ११०-११२
२. ओंकार ११३
३. मेरी भावना ११४-११८
४. भक्तामर स्तोत्र ११९-१२४
५. कल्याण मन्दिर स्तोत्र १२५-१३०
६. एकीभाव स्तोत्र १३१-१३६
७. विषापहार स्तोत्र १३७-१४१
८. जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र १४२-१४८
९. अकलंक स्तोत्र १४९-१५२
१०. महावीराष्टक स्तोत्र १५३-१५४
११. सरस्वती स्तोत्र १५५-१५७
१२. गोमटेश स्तुति १५८
१३. मंगलाष्टक स्तोत्र १५९-१६०
१४. बारह भावना १६१-१६३
१५. आचार्य शान्तिसागर के प्रति विनयांजलि १६४-१६५
१६. पणमामि णिच्चं हे अज्झिमाअं १६६-१६८
१७. ऐसा हो जीवन-दर्शन १६९-१७०
१८. कैसे गाऊँ मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में १७१-१७३
१९. तुमको मेरा शत्-शत् वंदन १७४
२०. उन गणेश वर्णी के चरणों में १७५-१७६
२१. श्रद्धा के गौरीशंकर १७७-१७८

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

अपनी बात

आत्मकल्याण और लोक कल्याण का नाम धर्म है। धर्म और भक्ति भावना परस्पर संवेदात्मक हैं। भक्ति और धर्म का संबंध आत्मा और शरीर से है। देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति धर्माचरण के अतिरिक्त कुछ नहीं। भक्ति भाव धर्म परिपालन में रोचकता प्रदान करता है। कोरा शास्त्रज्ञान और कोरी तपो-साधना, श्रद्धावान् साधक के मन में नीरसता लाती है। भक्त को पूजा-पाठ, स्तुति, विनती आदि के माध्यम से परमात्मा का सामीप्य प्राप्त करने में आसानी होती है, उसका मन रमा रहता है। वह एकदम भाव विभोर होकर घंटों शुभोपयोग में अपना समय व्यतीत कर सकता है। यही व्यवहारनय है जिसके बिना परमात्मपद प्राप्त नहीं हो सकता।

यह तथ्य है कि हमारे वीतराग भगवान प्रत्यक्ष रूप से अपने साधक भक्तों-श्रावकों को न कुछ देते हैं और न उनसे कुछ लेते हैं। वैसे भी भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं रहता। भक्ति के बदले उत्तम गति मिलेगी, इस भावना को लेकर भक्ति हो ही नहीं सकती। भक्त के लिए भक्ति का आनंद ही उसका फल है। भक्त भगवान के सामीप्य और सान्निध्य में ही अपने फल की सिद्धि मानता है। स्वार्थ और सकाम भावना से युक्त होकर भक्त भगवान की भक्ति कर ही नहीं सकता क्योंकि स्वार्थ और कामना की परितृप्ति पर उसका भक्ति भाव समाप्त हो जायेगा। इसलिए

निस्वार्थ और निष्काम भाव से ही भक्त भगवान की भक्ति में समर्थ हो सकता है। ऐसे भक्त के लिए भक्ति से प्राप्त आनंद, प्रफुल्लता और प्रसन्नता ही भक्ति का फल है।

नवधा भक्ति के लक्षण माने गये हैं - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चना, वंदना, दास्यभाव, सख्यभाव और आत्मनिवेदन। कविवर बनारसीदास ने नाटक समयसार में कुछ अंतर करके नवधा भक्ति के ये लक्षण इस प्रकार बताये हैं -

श्रवण, कीरतन, चिंतवन, सेवन बन्दन ध्यान ।
लघुता, समता, एकता नौधा भक्ति प्रमान ।।

नवधा भक्ति के लक्ष्य का साधक है संगीत। संगीत एक अन्तरनाद है जिसके हर स्वर पर गायक के भाव थिरकते रहते हैं और उसकी तन्मयता जब समरसता का रूप ले लेती है तो उसे ब्रह्मानंद की अनुभूति होती है। भक्ति गीतों में इस प्रकार का आनंद सहज है, स्वाभाविक है। यही ब्रह्मानन्द सरोवर है और यही शान्तरस की परिणति है ।

विगत अनेक वर्षो से हमारी दिली तमन्ना थी कि भक्ति रस से ओतप्रोत हिन्दी जैन पद रूप भक्ति प्रसूनों को गूथा जाये और अंजुलि भरकर उसका रसास्वादन सामूहिक रूप से सभी श्रावक-श्राविकाओं और मुनिवर्ग को स्वानुभूतिपूर्वक आत्मविभोर होकर किया - कराया जाये । ७ वीं शताब्दी से लेकर

१९ वीं शताब्दी तक हिन्दी जैन साहित्य में बनारसीदास, भूधरदास, भैया भगवतीदास, बुधजन, द्यानतराय, दौलतराम, भागचन्द्र आदि अनेक अध्यात्मरसिक कवियों ने भक्ति और अध्यात्म रस से ओतप्रोत शताधिक पदों की रचना की है जो विभिन्न रागरागनियों में गाये जा सकते हैं। इन पदों में संगीतात्मकता, संक्षिप्तता, अनुभूति की गहराई और भावप्रवणता है। जिस प्रकार कबीर, सूर, तुलसी, मीराबाई के पद बहुप्रचलित हैं, उसी प्रकार उक्त जैन कवियों के पद भी प्रचलित हो सकते हैं, बशर्ते हम सब शास्त्रीय संगीत पर आधारित उनकी धुने तैयार करके अन्य भजनों के समान सामूहिक रूप से गाते रहें। हमने ऐसे ही कुछ प्राचीन और आधुनिक आध्यात्मिक पद संकलित किये हैं।

हमने अपने इस संकलन में ऐसे भजनों को स्थान दिया है जिन्हें तल्लीनता के साथ गाने पर भक्ति भावना स्वतः स्फुटित होगी। भगवद्गुण कीर्तन, प्रभुःनाम स्मरण, चिंतवन, चरण सेवन, स्तुति, वंदन आदि तत्त्वों से ओतप्रोत ये भजन न केवल गायक को ब्रह्मानंद की अनुभूति करायेंगे, वरन् शांत रस से परिपूर्ण वातावरण का भी निर्माण करेंगे। साथ ही संसार-मुक्ति में भी वे सहायक सिद्ध होंगे।

आधुनिक युग के फिल्मी तर्जो पर आधारित भजन बड़ी सुगमता से भक्ति भावपूर्वक सामूहिक रूप से गाये जा सकते हैं।

ऐसे ही भजनों और आरतियों को यहाँ सम्मिलित किया गया है। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक इन भजनों को गायेगा, गुनगुनायेगा, उसे परम सुख की प्राप्ति होगी। सुधी पाठक और गायक हमारी पुस्तक "हिन्दी जैन साहित्य में रहस्यभावना" देखें तो ऐसे पद्यों का रसास्वादन कर सकते हैं।

हमने अपनी इस पुस्तक "भक्ति गीतांजलि" को तीन भागों में विभक्त किया है। पहले भाग में संगीतमय भजनों और आरतियों को संयोजित किया है। दूसरे भाग में मध्यकालीन हिन्दी जैन भक्त कवियों के आध्यात्मिक पद्यों को रखा है और तीसरे भाग में स्वरचित मेरी भावना, पंचस्तोत्रों, महावीराष्टक, गोमटेश स्तुति, मंगलाष्टक आदि का हिन्दी पद्यानुवाद तथा आध्यात्मिक कविताओं को सम्मिलित किया है। आशा है, सुधी पाठकों को इसका संगीतात्मक पाठ करने से आत्मरस का आनन्द आयेगा और मानसिक तनावों से मुक्त होकर सांसारिक वासनाओं से दूर होने की आकांक्षा उनमें जागेगी।

प्रो. भागचन्द्र पुष्पलता जैन

तुकाराम चाल, सदर, नागपूर - ४४० ००१
दिनांक : २८-०७-२००८
फोन : ०७१२-२५४१७२६

१. भजन

१. अरिहन्तों को नमस्कार

अरिहन्तों को नमस्कार, सिद्धों को नमस्कार,
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार
जग में जितने साधुगण हैं उनको वन्दन बार-बार...
जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या आदीश्वर का अवतार
वीतराग है जिनका अम्बर, उनको मेरा नमस्कार।
अरिहन्तों का...१
ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन,
सुमति, पद्म, सुपार्श्व, जिनराय,
चन्द, पुष्प, शीतल, श्रेयांस, नमो,
वासूपूज्य पूजित सुरराय, विमल, अनन्त, धर्म, जस उज्वल
शांति, कुन्थ, अर मल्लि मनाय
मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व प्रभु
वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।
इन चौबीसों के चरण कमल में मेरा वन्दन बारम्बार।
अरिहन्तों को..२

२. णमोकार मंत्र यह महामंत्र

णमोकार मंत्र यह महामंत्र, इस मंत्र की महिमा भारी है ।
आगम ने कही, गुरुवर से सुनि, अनुभव में इसे उतारी है ।
अरिहंताणं पद पहला है और आरति दूर भगाता है ।
सिद्धाणं सुमिरण करने से मन इच्छित सिद्धि पाता है ।
आयरियाणं तो अष्ट सिद्धि नव निधि के भंडारी है ।।
णमोकार मंत्र यह महामंत्र.....

उवज्झायाणं अज्ञान तिमिरहर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है।
सब्ब साहूणं सब सुखदाता, तन-मन को स्वस्थ बनाता है ।
पद पांच के सुमिरन करने से मिट जाती सकल बीमारी है ।।
णमोकार मंत्र यह महामंत्र....

श्रीपाल सुदर्शन मैना सती, जिसने भी जपा आनंद पाया ।
जीवन के सूने पतझड़ पर फिर फूल खिले सौरभ छाया।
मन नंदनवन में केली करे यह ऐसा मंगलकारी है ।।
णमोकार मंत्र यह महामंत्र.....

३. मोह जाल में फँसे हुये हैं

मोह जाल में फँसे हुये हैं कर्मो ने आ घेरा,
कैसे तिरेंगे भव-सागर से, तुम बिन कौन है मेरा ।
भूल हुई क्या हमसे भगवन क्या है दोष हमारा,
लिखा विधाता ने किन घड़ियों ऐसा लेख हमारा ।।
लेख लिखा था शुभ घड़ियों में, शुभ घड़ियां हैं आई ।
आत्मज्ञान की ज्योति जगा दो भव से पार उतरना है ।।
मोह जाल में.....

पहले रिषभनाथ जिन बंदों, दूसरे अजितनाथ देवजी ।
तीसरे संभवनाथ जिन बंदों, चौथे अभिनंद देवजी ।।
पाचवें सुमतीनाथ जिन बंदों, छठवें पदमप्रभु देवजी ।
सातवें सुपार्श्वनाथ जिन बंदों, आठवें चंदप्रभु देवजी ।।
मोह जाल में.....

नववें पुष्पदंत जिन बंदों, दसवें शीतलनाथ देवजी ।
ग्यारवें श्रेयांसनाथ जिन बंदों, बारवें वासुपूज्य देवजी ।।
तेरवें विमलनाथ जिन बंदों, चौदवें अनंतनाथ देवजी ।
पंद्रवें धरमनाथ जिन बंदों, सोलवें शांतिनाथ देवजी ।।
मोह जाल में.....

सतरहवें कुथूंनाथ जिन बंदों, अठारहवें अरहनाथ देवजी ।
उन्नीसवें मल्लिनाथ जिन बंदों, बीसवें मुनिसुव्रत देवजी।।
एक्किसवें नमिनाथ जिन बंदों, बाविसवें नेमिनाथ देवजी।
तेवीसवें पार्श्वनाथ जिन बंदों, चोबिसवें महावीर देवजी।।
मोह जाल में.....

卐卐卐

४. भावना दिन-रात मेरी

भावना दिन-रात मेरी सब सुखी संसार हो ।
सत्य, संयम, शील का व्यवहार हर घरबार हो ।। टेक।।

धर्म का प्रचार हो, अरु देश का उद्धार हो ।
और ये बिगड़ा हुआ भारत चमन गुलजार हो ।।टेक।।

ज्ञान के अभ्यास से जीवों का पूर्ण विकास हो ।
धर्म के प्रचार से हिंसा का जग से ह्रास हो ।।टेक।।

शांति और आनंद का हर-एक घर में वास हो ।
वीर वाणी पर सभी संसार का विश्वास हो ।।टेक।।

रोग अरु भय शोक होवे दूर सब परमात्मा ।
कर सके कल्याण ज्योति सब जगत की आत्मा।।टेक।।

५. एक णमोकार महामंत्र

(तर्ज-एक तेरा साथ हमको...)

एक णमोकार (२) एक णमोकार महामंत्र सुखकारा है।
जिनवाणी धारकर पाप से छूटकारा है ।।
मंगलमय दुखहारा है।एक णमोकार.....(१)

चार घातिया कर्म नाशक र, जो अरिहन्त कहलाते हैं।
फिर अघातिया कर्म घातक र, सीधा मोक्ष जो पाते हैं ।
उन्हीं को नमस्कार (२) किया, मन के ही द्वारा है ।।
मंगलमय दुख हारा है।एक णमोकार.....(२)

छत्तीस मूलगुण आचार्य हैं धरते और नायक कहलाते हैं।
करते स्वयं साधना उवज्झाय संघ में और मार्ग बतलाते हैं।
बनता अविकार (२) इनका, नाम जिन उच्चारा है ।।
मंगलमय दुख हारा है।एक णमोकार.....(३)

अठवीस मूलगुण साधु हैं पालते, दिगम्बर रूप धारी।
शिव राह के राही वन्दना है जो निज पर के हितकारी।
नैया मझधार (२) है तू एक ही किनारा है ।।
मंगलमय दुख हारा है।एक णमोकार.....(४)

६. तेरे दर को छोडकर किस दर जाऊं मैं

तेरे दर को छोडकर किस दर जाऊं मैं,
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं
जब से याद भूला हूँ तेरी लाखों कष्ट उठाये हैं -२
क्या जानूं इस जीवन अंदर कितने पाप कमाये हैं -२
हूँ शर्मिंदा आप से क्या बतलाऊ मैं । तेरे दर को..(१)
मेरे पाप कर्म ही मुझको, प्रीत न करने देते हैं -२
कभी जो चाहूँ मिलूं आपसे, रोक मुझे वो लेते हैं -२
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं। तेरे दर को..(२)
बीत चुकी सो बीत चुकी शरण तिहारी आया हूं -२
दर्शन दीक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया हूँ -२
मन में अपने ज्ञान का दीप जलाऊं मैं। तेरे दर को..(३)
जो बीती सो बीत गयी अब बाकी उमर सॅवारूं मैं
चरणों में जो बैठ आपके गीत भक्ति के गाऊं मैं
जीवन प्रभुजी देह को सफल बनाऊं मैं, तेरे दर को..(४)
तू है स्वामी वरों का दाता तुझसे ही सब वर पाते हैं ।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं ।।
छीटा दे दो ज्ञान का होश में आऊं मैं। तेरे दर को..(५)

७. वीर भज ले रे भाया

(तर्ज-पल्लो लटके रे म्हारो...)

वीर भज ले रे भाया वीर भज ले, जरा सो.....२
जरा सो कहणो म्हारो मान भाया वीर भज ले।
मुट्ठी बांध्यो आयो रे भाया हाथ पसारे जासी।
दया धर्म की करले कमाइ या ही आडे आसी ।
भाया वीर.....।।टेक।।

मोह माया में झूम रहयो तू कर रह्यो थारी म्हारी।
ज्ञान धरम री बात केवे तो थारे लागी खारी ।।टेक।।

मोटी मोटी बनी हवेल्या अठे पड़ी रह जासी।
दो गज कफन दो टुकडो थारो साथे जासी ।।टेक।।

जवानी री अकड़ाई मा तेरो तेरो जाने ।
थारे इतना नहीं मालूम थारे कोई होवेला काले।।टेक।।

जैन मंडल केवे रे भायला ओ मोको नाहीं आस।
प्रभु भजन तू नहीं कियो तो अन्त काल पछतासी।।टेक।।

नाटक देखे सिनेमा जाय रे सारी रात गमाने।
प्रभु भज ले री बेला नींद घणेरी आवे ।।टेक।।

८. पाप खपाने आये हैं आज

(तर्ज - आने से उसके आये बहार...)

पाप खपाने आये हैं आज, पुण्य कमाने आये हैं आज।
भादों का महिना है आया पर्यूषण ।।
भक्ति रस पीना है आया पर्यूषण.....(१)

कोई हाथ जोडे, कोई माला जपे हैं प्रभु की।
कोई गीत गाये, कोई पूजा करे हैं प्रभु की।
भक्तों का ये मेला है, मेला ये सुहाना है ।।
आया पर्यूषण.....(२)

कल्पसूत्र सुनकर, नर नारी है आनन्द से झूमे।
क्षमापन करे सब, फिर अपने ही दुश्मन को पूछे।
गुरुवाणी सुन करके, दोषों को मिटाना है ।।
आया पर्यूषण.....(३)

जी में आये जितनी, तुम पुण्य की करलो कमाई।
बुरे कर्मो को छोड़ो, करो प्रीत प्रभु संग से भाई।
हाथो में वीणा है, भक्ति का तराना है ।।
आया पर्यूषण.....(४)

९. ऐ सोच जरा नर चेतन

(तर्ज - ए मेरे वतन के लोगो.....)

ऐ सोच जरा नर चेतन, कुछ दिन का जीवन सपना ।
बडे पुण्य से पाया नर-भव, आतम का चिन्तन करना।
धन दौलत कुटुम्ब कबीला, स्वारथ के हैं सब साथी -२
कर्मो के पुद्गल से है - २, इस जन्म बने तेरे साथी
माया की रंगीली दुनियां, जीवन से तू बिसराना
बड़े पुण्य से.....(१)

कर्मो की हवाएं तूफानी जीवन को डिगाती रहतीं - २
बेड़ीं हैं कषायों की जो - २, जीवन को बांधे रखतीं
अरहन्त देव गुरु शरणा, जीवन के क्षण को बिताना
बडे पुण्य से.....(२)

जीवन के लम्बे सफर में नवकार सदा है सहायक - २
नवपद का ध्यान लगाना -२, तन प्राण रहे तेरे जब तक
जिनवर ने बताई राहे, भव जीवन से न बिसराना
बड़े पुण्य से.....(३)

सत्संगति सच्ची औषधी, शुभ भाव हृदय में फैलाती - २
जीवन की डगर डगर में - २, सूरज की किरण बन जाती
सुख शांति मलय पवन-सी, जिनवर के शरण में पाना
बड़े पुण्य से.....(४)

१०. पल पल बीती जाए उमरिया

(तर्ज : रिमझिम बरसे बादरवा)

पल पल बीती जाए उमरिया, मस्त जवानी जाये,
प्रभु गीत गाले, गाले, प्रभु गीत गाले ।। पल-पल..१
प्यारा प्यारा बचपन पीछे खो गया, खो गया,
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया, हो गया,
बार बार नहीं आवे रे, गंगा बहती है प्यारे,
मौका है न्हाले, गाले प्रभु गीत गाले ।। पल-पल..२
कैसे कैसे बांके जग में, हो गये, हो गये,
खेल खेल में अंत जमीं पर सो गये, सो गये,
कोई अमर नहीं आया, पंछी ये फूल रंगीले,
मुरझाने वाले, गाले, प्रभु गीत गाले ।। पल-पल..३
तेरे घर में माल मसाले, होते हैं होते हैं,
भूख के मारे कई बिचारे, रोते हैं, रोते हैं,
उनकी कौन खबर ले रे, जिनके नहीं तन पर कपड़ा,
रोटियों के लाले लाले, प्रभु गीत गाले ।। पल-पल..४
गोरा गोरा देख बदन क्यों, फूला है, फूला है,
चार दिनों की जिंदगानी में, भूला है, भूला है,
जीवन सफल बना ले रे, ज्ञानी मुनि यह समझाये,
ओ जानेवाले गाले, प्रभु गीत गाले ।
पल-पल बीती जाए उमरिया..५

११. करती हूँ वन्दना मोक्षगामी

(तर्ज - आधा है चन्द्रमा रात आधी...)

करती हूँ वन्दना मोक्षगामी ।
रहना जाये कोई मेरी साध स्वामी, प्रभु पार्श्व स्वामी।
करती हूँ वंदना.....

मैं तो आयी हूँ आस लगा के, अब जाऊंगी दर्शन पाके २
मेरे प्यासे नयन कैसे होगे मगन २
बिन दर्शन तेरे त्रिभुवन स्वामी, मोक्षगामी ।।टेक।।

तेरे चरणों में शीश झुका के, करूं वन्दन तेरे गुण गाके २
तूं ही तारण तरण, मुझे दे दो शरण २
मेरे कष्ट हरो अन्तर्यामी मोक्षगामी ।।टेक।।

तेरे जनम जनम के पुजारी दर पर आये हैं बन के भिखारी
प्रभु दर्शन दिखा, अब पार लगा २
है ये जैन मंडल की पुकार स्वामी,मोक्षगामी.....
करती हूँ वंदना.....

१२. बाजे कुंडलपुर में बधाई

(तर्ज - उड़े जब-जब-जब जुल्फे तेरी..)

होऽऽऽ हो ऽ ऽ ऽ बाजे कुंडलपुर में बधाई (२)
हो ऽ ऽ के नगरी में वीर जनमें २ महावीरजी
जागे भाग्य हो त्रिशला माँ के,
त्रिभुवन के नाथ जनमें २ महावीर जी ।
हो ऽ ऽ ऽ ऽ शुभ घड़ी जनम की आई - २
के स्वर्ग से देव आये २ महावीरजी
तेरा नमन करे मेरु पर, इंद्र जल भर लाए महावीरजी
हो ऽ ऽ ऽ तेरे देवियां झुलावे पलना (२) हो.....
के मन में मगन होके (२) महावीरजी
तेरे पलने में हीरा मोती के डोरियों में लाल लटके
महावीरजी (२)
हो ऽ ऽ ऽ अब ज्योति तेरी जागी (२) हो.....
के सूरज चाँद छिप जाये महावीरजी
तेरे पिता लुटावे मोहरे, २ खजाने सारे खुल जायेंगे (२)
महावीरजी
हो ऽ ऽ ऽ दर्शन को तेरे आयें (२)
पाप सब कट जायेंगे महावीरजी बाजे कुंडलपूर..ऽऽऽ

१३. हो... प्रभु सुमरण करले प्राणी

(तर्ज - उड़े जब जब जुल्फे तेरी)

हो..... प्रभु सुमरण कर ले प्राणी २
के दुख दूर हो जायेगें २ सब तेरे
ओ.....भाई मात-पिता मतलब के २ ओ.....
के काम नहीं वो आयेंगे २ सब तेरे
ओ.....तेरे महल मकान अटारी २ ओ.....
के यही पर रह जायेंगे २ सब तेरे
ओ..... सब छोड प्रभु को ध्याओ ओ.....
के काम आगे आयेंगे २ ये सब तेरे
कहे भगत सुनो नर नारी ओ .....
के सब पाप टल जायेंगे २ सब तेरे
ओ..... मेरे प्रभु जी का मन्दिर निराला २
के भगतो के मेले लग गये २ ये सब तेरे
ओ.....तुझे कौन बहाने देखूँ
के सपने में आओ प्रभुजी कभी मेरे.....

१४. इतनी शक्ति हमें दे दो विरा

(तर्ज : इतनी शक्ति हमें देना दाता)

इतनी शक्ति हमें दे दो वीरा,
मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना ।
इतनी शक्ति.....१
दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बचते चलें हम,
जितनी भी दे भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना ।
हम चलें.....२
हम अंधेरे में हैं रोशनी दे,
खो न दें खुद को ही दुश्मनी से
हम सजा पाएं अपने किए की,
मौत भी हो तो सह लें खुशी से
कल जो गुजरा है फिर से ना गुजरे,
आने वाला वो कल ऐसा हो ना। हम चलें.....३

हम ना सोंचे हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों से बांटे सभी को,
सब का जीवन ही बन जाए मधुवन
अपनी करुणा का रस तू बहा के,
करले पावन हर एक मन का कोना।
हम चलें.....४
हर तरफ जुल्म है बेबसी है,
सहमा-सहमा-सा हर आदमी है
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए,
जाने कैसे ये धरती थमी है
बोझ ममता से तू ये उठा ले,
तेरी रचना का वो अंत हो ना ।
हम चलें.....५

ॐ

१५. नरकों में नरकों में जाना नहीं

(तर्ज - परदेशी परदेशी जाना नहीं)

नरकों में नरकों में जाना नहीं - २
धर्म - छोड़ के धर्म छोड़ के।
ये जीवन प्यारा - प्यारा मिले न दुबारा।
प्रभु नाम लेना कहीं भूल न जाना ।।

नरकों.....१

मैंने धन को चाहा धन से प्यार किया,
पड़ कर माया में जीवन बेकार किया।
ये जीवन प्यारा - २ मिले न दुबारा।
प्रभु नाम लेना कहीं भूल न जाना ।।

नरकों.....२

लख चौरासी योनी में फिर आया है।
पुण्य उदय से फिर ये नर तन पाया है।
ये जीवन प्यारा - २ मिले न दुबारा।
प्रभु नाम लेना कहीं भूल न जाना।।

नरकों.....३

१६. ओ मुनिवर, ओ मुनिवर जाना नहीं

(तर्ज : परदेशी परदेशी जाना नही....)

ओ मुनिवर, ओ मुनिवर जाना नहीं.....२
हमें छोड के, हमें छोड़ के।
गुरुवर तुम जहां भी जाना, हमें ना भुलाना ।
जब भी पुकारे, मुनिवर लौट के आना ।।टेक।।

वर्षाकाल का मौसम जब भी आता है,
संतों के दर्शन को मन ललचाता है ।
चातुर्मास की खुशियों में खो जाता है,
चार महिने बाद बहुत पछताता है ।
मन कहता गुरु रुक जाना, हमें ना भुलाना ।
जब भी पुकारे मुनिवर लौट के आना ।।टेक।।

जब-जब मुनिवर याद तुम्हारी आयेगी,
प्यासी अंखियां रो रो नीर बहायेंगी ।
जहां रहोगे दौडे-दौडे आयेंगी,
दर्शन करके मन की शांति पायेंगी ।
शांति का पथ बतलाना, हमें ना भुलाना ।
जब भी पुकारें मुनिवर लौट के आना ।।टेक।।

नगर-नगर और डगर-डगर अब आओगे,
जाओगे-जाओगे ना रुक पाओगे ।
मुनिवर तुमको भक्त कई मिल जाऐंगे,
मगर आप सा गुरु कहां हम पाऐंगे ।
सपनों में दर्श दिखाना, हमें ना भुलाना ।
जब भी पुकारें मुनिवर लौट के आना ।।
ओ मुनिवर.... ओ मुनिवर जाना नहीं,
हमें छोड के..... हमें छोड के ।।

१७. वीर स्वामी मोक्षगामी हो गये

(तर्ज - दिल के अरमॉ.....)

वीर स्वामी मोक्षगामी हो गये
जिसने देखा सब उन्ही में खो गये, जिसने देखा.....
राज छोड़ा विश्व प्रगति के लिये (२)
देखो एक राज सन्यासी हो गये (२) जिसने देखा .....
नम्रता का वो अचल भंडार थे (२)
सह के हर दुख प्रेम अंकुर बो गये (२) जिसने देखा....
पाते ही संकेत मुक्ति मार्ग का (२)
विश्व के वो पथ प्रदर्शक हो गये (२) जिसने देखा ....
स्थापना करके वो जैन धर्म की (२)
जैनियों के पूज्य ईश्वर हो गये (२) जिसने देखा....

१८. जैनी हो के पानी न छाना

(तर्ज - दीदी तेरा देवर दीवाना....)

जैनी हो के पानी न छाना।
हाय ! राम रातों का खाये खाना।।
मूरख तूने इतना न जाना।
हाय ! राम रातों को खाये खाना।।
मैं बोला न खाना तुम रातों को खाना।
मगर तुमने लाखों बनाया बहाना।।
जो रातो में खाये, निशाचर कहलाये ।
अगर तुमने खाया तो कहेगा जमाना।।
लगता है इसको नरको में जाना । हाय राम ।.....१
सुनो तुमको गुरुवर ये क्या-क्या बताये ।।
कि एक बूंद पानी में क्या जीव पाये ।
हजारों जीव का तो पाप लगेगा ।।
अगर छाने से जो न पानी छनाये ।
मुश्किल है यूं भव सागर तर जाना।।
हाय ! राम रातों को खाये खाना।
जैनी हो के.....२

१९. कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं
बाद आंसू बहाने से क्या फायदा
मैं मंदिर गया पूजा आरती की,
पूजा करते हुए ये खयाल आ गया
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं,
सिर्फ पूजा ही कर लूं तो क्या फायदा ।।कभी प्यासे....
मै मंदिर गया गुरुवाणी सुनी,
गुरुवाणी को सुनकर खयाल आया
जैन कुल में हुआ जैनी बन ना सका,
सिर्फ जैनी कहलाने से क्या फायदा ।। कभी प्यासे.....
मैं काशी बनारस मथुरा गया,
गंगा नहाते हुए ये खयाल आ गया
तन को धोया बहुत मन को धोया नहीं,
सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा ।। कभी प्यासे .....
मैंने दान किया मैंने तप जप किया,
दान करते हुए ये खयाल आ गया
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं,
दान लाखों का कर लूं तो क्या फायदा ।।कभी प्यासे ..

२०. केशरिया केशरिया आज.....

केशरिया केशरिया आज हमारो रंग केशरिया
तन भी केशरिया मन भी केशरिया
गाने वाले भी हैं केशरिया
हम भी केशरिया तुम भी केशरिया
भक्ति के हैं भाव केशरिया
श्री जी का है रंग केशरिया
केशरिया केशरिया.....
जैन धर्म झंडा केशरिया
इंद्र इंद्राणी भी केशरिया
नाचने वाले हैं केशरिया
केशरिया केशरिया.....
मुनि विद्यासागर केशरिया
मुनि संग भी है केशरिया
सब भक्तों के हैं भाव केशरिया
केशरिया केशरिया.....

२१. मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा

मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा,
सबकी आंखों का तारा।
ध्यान करत मन आनन्द पावे,
ऐसा प्रभु का अतिशय न्यारा ।।१।।
सात सुरों के सरगम में,
प्रभु तेरे गुण को गावें रे।
सुमरन करते नाम प्रभु का,
भव-भव कर्म छुड़ावें रे।
घर-घर मंगल होवे सबके,
पाकर प्रभु का अमर सहारा ।।२।।
अष्ट कर्म की जंजीरों को,
तोड़ के मोक्ष सिधारे हो।
ज्ञानज्योति से सबके स्वामी,
सम्यक् ज्योति देते हो।
मन-मन्दिर में ध्यान लगावे,
लेकर तेरा नाम निराला ।।३।।
अमृतमय सन्देश तुम्हारा,
धर्म की ज्योति जलावेगा ।।४।।
मानवता में शान्ति फैलाकर, सद्बुद्धि फैलावेगा।
भव-भव में हम शरणा पावे,
जो है सबका तारणहारा ।।५।।

२२. दयालु प्रभु से दया मांगते हैं

(तर्ज - तुम्ही मेरी मंजिल तुम्हीं मेरी पुजा.....)

दयालु प्रभु से दया मांगते हैं
अपने दुखों की दवा मांगते हैं ।

दयालु प्रभु.....

नहीं हम सा कोई अधर्म और पापी
सत्कर्म हमने ना किये हैं कदापी
किये लाख हमने अपराध भारी
उनकी हृदय से क्षमा मांगते हैं

दयालु प्रभु.....

दुनियां के भोगों की न कुछ कामना है
स्वर्ग के सुखों की न कुछ चाहना है
मिले सन्त संयम कर आत्म चिंतन
वरदान भगवन से सदा चाहते हैं ।

दयालु प्रभु.....

प्रभु तेरी भक्ति में मन ये मगन हो
निजात्म चिंतन की हरदम लगन हो
सोना न चांदी न टका मागते हैं

दयालु प्रभु.....

२३. हम अगर वीर वाणी में श्रद्धा करें

(तर्ज : तुम अगर साथ देने का वादा करो...)

हम अगर वीर वाणी में श्रद्धा करें,
ज्ञान के दीप जलते चले जायेंगे !
गर जले ज्ञान के दीप हृदय में तो,
मार्ग संयम के खुलते चले जायेंगे !! हम अगर.....१
हमने पाया है मुश्किल से यह नर का तन,
देव तरसें जिसे ऐसा पाया रतन !
गर इसे हमनें विषयों में खो ही दिया,
भूल पर ही हम अपनी खुद पछतायेंगे !! हम अगर २
अब मिला हैं ये जिनधर्म जिनवर शरण,
गुरु मिले हैं दिगम्बर और अमृत वचन !
मोह ममता से थोडा ही गर हम हटें,
मार्ग कल्याण के खुलते चले जायेंगे !! हम अगर.....३
जब नहीं सच्ची श्रद्धा तो क्या अर्थ है,
इस बिन ज्ञान और आचरण व्यर्थ है !
हम पुजारी बने या वीतरागी बने,
कर्म के बंधन कटते चले जायेंगे !! हम अगर ४
गर जले ज्ञान के दीप हृदय में तो,
मार्ग संयम के खुलते चले जायेंगे !! हम अगर ५

२४. प्रभुवर ! स्वीकारो अभिवादन ये हमारा

(तर्ज - छूकर मेरे मन को.....)

प्रभुवर स्वीकारो अभिवादन ये हमारा २
तुमरे चरणों में बीते जीवन ये हमारा २
प्रभु तेरी धुन हमें जीना सिखायेगी, जीना सिखायेगी
भटकेंगे जब हम ये राह दिखायेगी, राह दिखायेगी
कर देगी मेरी राहों में उज्ज्वल उजियारा,
प्रभुवर स्वीकारो.....
संयम खोकर मैं खूब पछताया हूँ खूब पछताया हूँ
फैलाकर झोली तेरे द्वारे आया हूँ द्वारे आया हूँ
ले लो शरण में मुझको दूर करो अंधियारा
प्रभुवर स्वीकारो.....
बीत गया जीवन टूट गये सपने, टूट गये सपने
लुट गये, मुझको साथी मेरे अपने, साथी मेरे अपने
मैं हूँ संकट में मुझे दे दो तुम सहारा
प्रभुवर स्वीकारो.....

२५. सिद्धारथ रो राज दुलारो

(तर्ज - प्यासे पंछी नील गगन में)

सिद्धारथ रो राज दुलारो, झूल रयो पालनिये (२)
त्रिशला माँ री आँख रो तारो झुल रयो पालनिये (२)
सोना रो पालनिये प्रभु रो हीरा सु जडीयोडो
मोती मानक पन्ना नीलम सु देखो जडीयोडो
रेशम डोरी लटक रही है, सोना रो पालनिये (२)
सिद्धारथ .....

इन्द्र - इन्द्राणी प्रेम से प्रभु ने हालरियो है गावे
हर्ष मगन छप्पन दी कुमारी प्रभुजी ने डुलरावे
सूरज सोना रो उग आयो, त्रिशला रे आगनिये (२)
सिद्धारथ .....

मंगल गीत गनीजे घर घर हर्ष है घर घर छाय
पूर्व जनम रो पुण्य है त्रिशला माता फल है पाये
बाज रही शहनाई देखो, त्रिशला रे आगनिये (२)
सिद्धारथ .....

२६. ओ भक्ति दीप जलाए

(तर्ज - ओ नींद न मुझको .....)

ओ ऽ ऽ ऽ ऽ भक्ति दीप जलाए, मन में प्रीत जगाये
तड़पत हूँ मैं दर्शन दो प्रभु, सांसें टूटी जायें ...ओ
ओ ऽ ऽ ऽ ऽ भक्ति दीप जलाए.....१
जीवन तेरा उपहार है (२)
इसे कैसे जिऊँ, आसु मैं क्यों पिऊं
क्यों ये मुझ को तू ना बताए .....
ओ ऽ ऽ ऽ ऽ भक्ति दीप जलाएं २
बचपन तुम्हारी देन था, यौवन तुम्हारी देन (२)
आई कैसी घड़ी, कैसी विपदा पड़ी
काहे मुझको तू ना बचाए.....
ओ ऽ ऽ ऽ ऽ भक्ति दीप जलाएं ३
हर साँस में महावीर है, हर बात में महावीर (२)
तुम मुस्कानों में प्रभु तुम प्राणों में
वही तुम हो जहाँ हम जाएं.....
ओ ऽ ऽ ऽ ऽ भक्ति दीप जलाएं.....४

२७. हो प्रभु मनवा के खोले हैं द्वार

(तर्ज - मैं तो भूल चली बाबुल का देश.....)

हो प्रभु मनवा के खोले हैं द्वार,
कभी तो आके बस जाओ
हो भावनाओं के ऽ ऽ ऽ ऽ (२) लाए हैं हार,
कभी तो आके बस जाओ ।। हो प्रभु .....
दुनियां भी प्यारी है जीवन भी प्यारा, (२)
पर सबसे प्यारा है पूजन तुम्हारा (२)
हो ऽ ऽ ऽ ऽ पूजा देती है जीवन सँवार ऽ ऽ ऽ ऽ (२)
कभी तो आके बस जाओ ।। हो प्रभु .....
श्रद्धा के फूलों से तुमको सजा दूँ (२)
तन मन का कण कण मैं तुमपे लुटा दूँ
हो ऽऽऽऽ सुन लो प्यासे ऽऽ (२) जिया की पुकार,
कभी तो आके बस जाओ ।। हो प्रभु .....
आया रे आया पर्युषण आया (२)
सुख-शान्ति समृद्धि है संग लाया (२)
हो ऽ ऽ ऽ ऽ इसकी महिमा को ऽ ऽ (२) कोई न पार,
कभी तो आके बस जाओ हो प्रभु .....

२८. महावीर नाम बोलो

महावीर नाम बोलो, महावीर नाम बोलो - २
ओ ऽ ऽ ऽ जीवन है दो दिन का रे पगले,
दो दिन का है ये खेल
महावीर, महावीर नाम जपो रे, छूटे जनम का ये खेल ।
महावीर, महावीर नाम बोलो .....
जब जब संकट की आयी घडी, सुमरन प्रभु से विपदा टरी।
हरदम जो उसे ध्याये, मन चाहा फल पावे
ओ ऽ ऽ ऽ जीवन की नैया लागे किनारे,
छूटे करम झकझोर
महावीर महावीर नाम रटो रे, छूटे जनम का फेर
महावीर, महावीर नाम बोलो .....
पल पल जीवन है अनमोल, काहे करे मन को डावा डोल
प्रभु संग प्रीत लगा ले, मोह माया को भुला दे
ओ ऽ ऽ ऽ महावीर नाम की धुनी लगा के,
मन का अन्तर्पट खोल
महावीर महावीर नाम रटो रे, छूटे जनम का फेर
महावीर, महावीर नाम बोलो .....

२९. मीठो-मीठो बोल थारों

(तर्ज - धीरे -धीरे बोल कोई सुन ना ले.....)

मीठो - मीठो बोल थारो काई बिगडे,
काई बिगडे, यारो काई बिगडे
या जीवनमा दम नहीं,
कब निकले प्राण मालुम नहीं । मीठो.... २
सोच समझ ले स्वारथ रो संसार,
लाख जतन कर छूटेला घरबार २
तू जान ले, पहचान ले,
संसार किसी का घर नहीं
कब निकले प्राण मालूम नहीं, मीठो.....
प्रभुवर की है महिमा अपरंपार,
डोलती नैया की है पतवार - २
तू जान ले .....
भक्ति की जो ज्योति जलायेगा,
कर्मो से वो मुक्ति पायेगा - २
तू जान ले.....
गुरुवर ये कहते हैं बारंबार,
तप संयम ही जीवन का आधार - २
तू जान ले .....

३०. अहो जगत के शांति दाता

(तर्ज : ओ बसंती पवन पावन)

अहो जगत के शांति दाता, शांति जिश्वर,
जय हो तेरी, जय हो तेरी, जय हो.....
किसको मैं, अपना कहूँ, कोई नजर आता नहीं
इस जहाँ में, आप बिन, कोई मुझे भाता नहीं
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शांति जिनेश्वर ।
जय हो तेरी, जय हो तेरी, जय हो.....
तेरी ज्योति से जहान में, ज्ञान का दीपक जला
तेरी अमृत वाणी से ही, राह मुक्ति का मिला
शीश चरणों में झुकाता, शांति जिनेश्वर ।
जय हो तेरी, जय हो तेरी, जय हो.....
मोह माया में फंसा, तुमको भी पहचाना नहीं
ज्ञान है न ध्यान दिल में, धर्म को जाना नहीं
दो सहारा मुक्ति दाता, शांति जिनेश्वर ।
जय हो तेरी, जय हो तेरी, जय हो.....
बन के सेवक हम खड़े हैं, स्वामी तेरी राह में
हो कृपा तेरी तो बेड़ा पार हो, संसार से
तेरे गुण हम सब हैं गावें शांति जिनेश्वर ।
जय हो तेरी, जय हो तेरी, जय हो.....

३१. मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ ।
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शर्माऊँ ।।
मैली चादर ओढ़ के कैसे.....

तूने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया ।
आकर के संसार में मैंने, इसको दाग लगाया ।।
जन्म-जन्म की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ ।।१।।
मैली चादर ओढ़ के कैसे.....

निर्मल वाणी पाकर तुमसे, नाम न तेरा गाया ।
नैन मूँदकर हे परमेश्वर, कभी न तुमको ध्याया ।।
मन-वीणा की तारें टूटी, अब क्या गीत सुनाऊँ ।।२।।
मैली चादर ओढ़ के कैसे.....

इन पैरों से चलकर तेरे, मन्दिर कभी न आया ।
जहाँ-जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया ।।
हे जिनवर मैं हार के आया, अब लो हार चढ़ाऊँ।।३।।
मैली चादर ओढ़ के कैसे.....

३२. तुम अगर दर्श देने का वादा करो

(तर्ज : तुम अगर साथ देने का वादा करो)

तुम अगर दर्श देने का वादा करो ।
मै यूँ ही तेरे दर्शन को आता रहूँ ।।
तुम मुझे अपना आशीष देते रहो ।
मैं यूँ ही शीश अपना झुकाता रहूँ ।। तुम...

जबसे देखा तुम्हें मन ये कहने लगा ।
प्रेम और त्याग के तुम तो अवतार हो ।।
सुनके उपदेश हमको तो ऐसा लगा ।
प्रेम और ज्ञान के तुम तो भण्डार हो ।।
हो कृपा गर इधर भी कर दो नजर ।
मैं यूँ ही शीश अपना झुकाता रहूँ ।। तुम...

मैं अनादि से भव में भटकता रहा ।
मुझको यहाँ पर ना अब तक किनारा मिला ।।
तुमको देखा तो दिल को तसल्ली हुई ।
मानो मंझधार में एक सहारा मिला ।।
अब नैया को मेरी तिरा दो अगर ।
मैं यूँ ही गीत तेरा गाता रहूं ।। तुम...

जितना वैभव मिला मुझको संसार में ।
दूर उतना ही मैं खुद से होता गया ।।
मोह और माया के वश में ऐसा फंसा ।
व्यर्थ ही जीवन अपना मैं खोता गया ।।
अब मुझको भी मुझमें रमा दो अगर ।
मैं यूँ ही शीश अपना झुकाता रहूँ ।। तुम....

ॐ ॐ ॐ

३३. जीवन को यों न गवाँ

(तर्ज : खुशी खुशी कर दो बिदा....)

जीवन को यों न गवाँ, के ऐसी गति फिर ना मिलेगी ।।२।।
क्यों करता है मेरा मेरा ऽऽ२, इस दुनियाँ में कोई न तेरा
सब स्वारथ के पुत्र-पिता, कि ऐसी गति फिर....
इस दूनियाँ का खेल सबसे निराला ऽऽ२
इन खेलों से कोई न छूटा ऽऽ
अरे पुण्य तु अपना कमा, कि ऐसी गति फिर..
पाप और पुण्य का खेल निराला ऽऽ२
इन खेलों ने सबको फॉसा
पुण्य करता है सब का भला
कि ऐसी गति फिर ना मिलेगी.....

३४. मिलती है साधुओं की संगत कभी-कभी

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में...)

मिलती है साधुओं की संगत कभी-कभी ।
चढ़ती है मन पे धर्म की रंगत कभी-कभी ।।
मिलती है ....
निर्धन के घर में, शहंशाह मुश्किल से आते हैं । २
नदिया पे जैसे हंसों की, पंक्ति कभी-कभी ।।
मिलती है....
आये उदय में भाग तो, मिलते हैं महात्मा । २
जी भर के कर लो दोस्तो संगत अभी-अभी ।।
मिलती है ....
बन्दे को रहना चाहिए, ऐबों से दूर ही । २
पल में ले डूबती है कुसंगत कभी-कभी ।।
मिलती है ...
गुरुओं की शरण में आकर, कर लो सफल जनम । २
मिलती है आदमी को, संगत कभी-कभी ।।
मिलती है .....

३५. पारस प्रभु जी पार लगा दो

(तर्ज : नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे)

पारस प्रभु जी पार लगा दो, मेरी ये नावरिया ।
बीच भँवर में आन फँसी है, काढ़ो जी साँवरिया ।।
पारस प्रभु....
धर्मी तारे बहुत ही तूमने, एक अधर्मी तार दो ।
वीतराग है नाम तिहारा तीन जगत् हितकार हो ।।
अपनो विरद निहारो स्वामी, काहे को विसरिया
पारस प्रभु....
चोर भील चांडाल हैं तारे, ढील क्यों मेरी बार है ।
नाग-नागिनी जरत उभारे, मंत्र दिया नवकार है ।।
दास तिहारा संकट में है लीजो जी खबरिया ।
पारस प्रभु....
लोहे को जो कंचन करदे, पारस नाम प्रमाण है ।
मैं हूं लोहा तुम प्रभु पारस, क्यों न फिर कल्याण हो ।
नाथ मिटा दो अब तो मेरी भव-भव की घुमरिया ।
पारस प्रभु....
भटक रहा हूं मै भवसागर, आपका मुक्ति निवास है ।
अपने पास बुला लो मुझको, एक ये ही अरदास है ।
भूल रहा हूँ नाथ बता दो, शिवपुर की डगरिया ।
पारस प्रभु....

३६. फेरो इक माला ओ....

सुबह और शाम की प्रभुजी के नाम की,
फेरो इक माला, ओ .... फेरो इक .....
सकल सार नवकार मंत्र है, परमेष्ठी की माला,
नरक गति और तिर्यन्च गति का, सचमुच ढक दिया ताला
करम की ज्वाला मेटो तत्काला,
फेरो इक माला, ओ.. फेरो....
सेठ सुदर्शन सीता सती ने फेरी एक माला,
सूली का सिंहासन हो गया और शीतल हो गयी ज्वाला
धरम का प्याला पियो मेरे लाला,
फेरो इक माला, ओ ...फेरो...
सोना सती ने सुमिरण करके नाग उठाया काला,
महाभयंकर विषधर से भी हुयी फूल की माला,
शील जिसने पाला सत रखवाला,
फेरो इक माला, ओ ....फेरो....
द्रोपदी का चीर बढ़ाया दुस्सासन मदगाला,
मैना सती और श्रीपाल का हुआ जीवन विशाला,
सुभद्रा ने खोला चष्मा द्वार तोला,
फेरो इक माला, ओ...फेरो....

राजकुमारी बालकुमारी देखो चन्दनबाला,
महाभयंकर संकट पड़ गया सिर जिसका है काला,
धर्म का तोला सब दुःख झोला,
फेरो इक माला, ओ... फेरो....
समय बीतता जाये भय्या जीवन सफल बना लो,
काल गया फिर हाथ न आये जो करना सो कर लो,
भोला गुण गाओ अनन्त गुण गाओ,
फेरो इक माला, ओ... फेरो...

३७. मेरे मन मन्दिर में आन पधारो

मेरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान ।
भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर,
निशिदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान ।
सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते,
गाते सब तेरा यश गान, पधारो महावीर भगवान ।
जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया,
तुम हो दयानिधि भगवान, पधारो महावीर भगवान ।
भगत जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें,
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान ।

३८. प्रभु भक्ति में शक्ति बड़ी

(तर्ज : जिन्दगी की न टूटे लड़ी)

प्रभु भक्ति में शक्ति बड़ी, भक्ति कर लो घडी दो घडी,
महावीर के चरणो में आओ २
भजलो वीर को तुम इक घडी,
भक्ति कर लो .....
उस मानव का जीवन भी क्या,
जिसने जिनवर की भक्ति न की
वो जैनी ही जैनी नहीं जिसने जिनवर की पूजा न की
ओ.... पूजा न की, पूजो वीरा को चित से सभी,
भक्ति कर लो....
जैन मंडल तो सबसे कहे, ज्ञान प्रभु बिन नाहीं मिले
बिन ज्ञान के भक्ति कहाँ, कोई कितनी भी खटपट करे
ओ... खटपट करे, जिनवाणी पर कर लो अमल,
भक्ति कर लो...
लाख चौरासी का हो भ्रमण, चाहे बांधे हो कितने करम,
कट जायेंगे सारे करम, जो धर लोगे जैन धरम,
ओ...जैन धरम, जैन धरम की महिमा बडी,
भक्ति कर लो....

३९. ऐ स्वामी तेरे भक्त हम

(तर्ज : ऐ मालिक तेरे बन्दे हम)

ऐ स्वामी तेरे भक्त हम, तेरी भक्ति से काटे करम
सब पाप तजे तेरा नाम भजे हम अपना सुधारे जनम
सब पाप तजे.....
हमें हर एक से प्यार हो, नहीं दुष्ट का अपकार हो
गुणी जन को सदा, देख हर्षे पिया,
प्रेम भावों का संचार हो
हर दुखिया का दुःख हम, दूर दुनिया के कर दे जुलम,
सब पाप तजे.....
है मन की यही कामना, हर मुश्किल का हो सामना
कोई नहीं दुःखी, रहे सब ही सुखी,
हो दिन रात ये भावना
दुःखों को तू कर दे खतम, माने दुनियाँ अहिंसा धरम,
सब पाप तजे....
नित शास्त्रों का होवे पठन, हम करे गुणों का ग्रहण
मुनि सेवा करे, सत्संग करे,
आतम ज्ञान का हो चिंतवन
फैले सर्व प्रेम हर कदम, जाने जैन धर्म को सब हम,
सब पाप ते.....

४०. आतम की जोत जगाते चलो

(तर्ज : जोत से जोत जगाते चलो)

आतम की जोत जगाते चलो,
ज्ञान की गंगा बहाते चलो
सत्गुरु दयालु जगाते तुम्हें,
मोह की निन्दिया भगाते चलो
काल अनन्ता सोते ही बीता, अब तो आंख उघारो
कर्म लुटेरे पड़े हैं पीछे, अब तो होश संभारो
ज्ञान सुधन को बचाते चलो.... मोह.....
कठिन कठिन कर नर भव पाया, इसको सफल बनाओ
अवसर तो मिला है सुनहरी, मत ना व्यर्थ गवाओ
भक्ति में मन लगाते चलो.... मोह.....
सत्य अहिंसा का कर पालन, शान्ति सुधा बरसाओ
पर धन पर वनिता त्यागो, तृष्णा वेग घटाओ
आप में आप रमाते चलो..... मचेह.....

४१. सोते-सोते में निकल गई सारी जिन्दगी

सोते-सोते में निकल गई सारी जिन्दगी
सारी जिन्दगी हो तेरी प्यारी जिन्दगी ।
बोझा ढ़ोते में निकल गई ।।
जन्म लेते ही इस धरती पर तूने रुदन मचाया ।
आँखे भी न खुलने पाई, भूख-भूख चिल्लाया ।।
हो रोते-रोते में निकल गई ।।१।।

खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया ।
धर्म कर्म का मर्म न जाना, विषय भोग मस्ताया ।।
भोगों-भोगों में निकल गई ।।२।।

धीरे-धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमग डोले काया ।
सब के सब रोगों ने देखो डेरा खूब जमाया ।।
रोगों-रोगों में निकल गई ।।३।।

जिसको तू अपना समझे वा, वह दे बैठा धोखा ।
प्राण गए फिर जल जाएगा ये माटी का खोका ।।
खोका ढ़ोते में निकल गई ।।४।।

४२. सिद्धार्थ नन्दन त्रिशला के प्यारे

(तर्ज : यशोमती मैय्या से...)

सिद्धार्थ नन्दन त्रिशला के प्यारे
महावीर तुम भये जग उजियारे २
धरती पे आनन्द छाया, जब तुम पधारे
जली ज्योति ऐसी जग में, ज्ञान जो जगाये
मिटे अंधियारे प्रभुजी हो ऽ ऽ २ पाप कटे सारे,
जग उजियारे....

माया के बन्धन तुम्हें बांध नहीं पाये
चले आप प्रभुजी मन में दया को बसाये
हिंसा मिटायी प्रभुजी हो ऽ ऽ २ बने तारण हारे,
जग उजियारे.....

अमर हुये चन्दनबाला दर्श जो पाया
चन्द्र कोष विषधर को संयम धराया
दिया उपदेश उसको हो ऽ ऽ२ बन के सहारे,
जग उजियारे.....

पाया निर्वाण तुमने पावापुरी जाके
कही जैन मंडल ने तेरी कथा गाके
दरश दिखाओ प्रभुजी हो ऽ ऽ२ सब मिल पुकारे,
जग उजियारे.....

४३. पंखीड़ा हो पंखीड़ा हो पंखीड़ा...

पंखीड़ा हो पंखीड़ा हो पंखीड़ा
पंखीड़ा तू उड़कर जाना कुण्डलगिरी रे - २
बड़े बाबा से कहना, तेरे भक्त आये हैं
पंखीड़ा हो.....
मेरे गांव के पुजारी भाई जल्दी आओ रे-२
मेरे बाबा के अभिषेक को जल ले आओ रे-२
चंदन लाओ, पानी लाओ, कलशा लाओ रे-२
मेरे प्रभु के सुन्दर सर पर कलशा ढारो रे-२
पंखीड़ा हो .....
मेरे गाँव के श्रावक भाई जल्दी आओ रे-२
मेरे बाबा के पूजन को द्रव्य लाओ रे-२
श्रद्धा से आठों सुन्दर द्रव्य धोओ रे-२
मेरे प्रभु के पूजन की थाल सजाओ रे-२
पंखीड़ा हो .....
कुण्डलपुर के माली भाई जल्दी आओ रे-२
मेरे बाबा की आरती करने आरती लाओ रे-२
बाती लाओ घी भी लाओ कपूर भी लाओ रे-२
मेरे बाबा की मिलकर सारे आरती गाओ रे-२
पंखीड़ा हो .....
बाबा के भक्त भाई जल्दी आओ रे-२
मेरे बाबा के सुन्दर भजन गाओ रे-२
ढोलक बजाओ झांझ बजाओ ताली बजाओ रे-२
मेरे बाबा की भक्ति में नाचो गाओ रे-२
छंखीड़ा हो.....

४४. निरखो अंग-अंग जिनवर के

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार।
चरण कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार,

पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्म तत्व ही सार,
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।

हस्त युगल जिनवर कहें, पर का करता होय,
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय,

यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।
लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार,

पर दुःख मय गति चतुर में, ध्रुव आत्म तत्व ही सार,
यातें नाशा दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।

अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्म तत्व दरशाय,
जिनदर्शन कर निज दर्शन पा, सद्गुरु वचन सुहाय,
यातें अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।

४५. महिमा अपार है

(तर्ज : जिया बेकरार है)

महिमा अपार है सुख का यह आधार है।
महावीर भगवान का यह सच्चा दरबार है।।
कंचन मणिमय थाल सजाकर रतन ज्योति जलाया जी।
मोह महातम हरने स्वामी आरती करने आया जी।
तेरी जय जयकार है सुख का यह आधार है ।।

महावीर.....

इस दुनियां से जी घबराया शरण तिहारी आये हैं।
तीन लोक की चतुर्गति में हमने बहु दुख पाये हैं।
नैया मझधार है तेरा ही आधार है ।।

महावीर.....

जो भी आया चरण शरण में उसका दुःख मिटाया है।
अंजन जैसे लाखों तारे दास चरण में आया है।
तेरी जय जयकार है छाई बहार है ।।

महावीर.....

४६. तुम से लागी लगन

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण -
पारस प्यारा, मेटो-मेटो जी संकट हमारा
निश दिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ ।
जीवन सारा तेरे चरणों में बीते हमारा ।। तुम से ।।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे ।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुख को मोड़ा, संयम धारा ।
।।१ मेटो.।।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये ।
आशा पूरो सदा, दुख नहीं पावे कदा, सेवा थारा ।
।। २ मेटो. ।।
जग के दुःख की तो परवाह नहीं है,
स्वर्ग सुख भी की चाह नहीं है ।
मेटो जामन-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ।
।। ३ मेटो. ।।
लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
''पंकज'' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया लागे खारा ।
।। ४ मेटो. ।।

४७. नवकार मंत्र ही महामंत्र

नवकार मंत्र ही महामंत्र, निजपद का ज्ञान कराता है ।
नित जपो शुद्ध मन वच तन से, मनवांछित फल का दाता है ।।१।।
पहला पद श्री अरिहंताणं, यह आत्म ज्योति जगाता है ।
यह समोसरण की रचना की, भव्यों को याद दिलाता है ।।२।।
दूजा पद श्री सिद्धाणं है, यह आत्म शक्ति बढ़ाता है ।
इससे मन होता है निरमल, अनुभव का ज्ञान कराता ।।३।।
तृतीय पद श्री आयरियाणं, दीक्षा में भाव जगाता है ।
दुःख से छुटकारा शीघ्र करे, सुख सागर में पहुंचाता है ।।४।।
है उपाध्याय यह चौथा पद, जिन धर्म को यह चमकाता है ।
करमास्रव को ढीला करता, यह सम्यक् ज्ञान बढ़ाता है ।।५।।
हैं पांचवा पद श्री साधु का, यह जैन तत्त्व सिखलाता है ।
दिलवाता है यह ऊँचा पद, संकट में शीघ्र छुड़ाता है ।।६।।
यह अनादि निधन है महामंत्र, जिन शासन यह बतलाता है ।
प्रभु के चरणों में जपने से कर्मो को शीघ्र नशाता है ।।७।।
तुम जपो निरन्तर महामंत्र, अनुपम वैराग्य बढ़ाता है ।
जपता भविजन को श्रद्धा से, मन को बहु शान्त बनाता है ।।८।।
सम्पूर्ण रोग को शीघ्र हरे, जो मंत्र भाव से ध्याता है ।
हित 'भव' की शिक्षा ग्रहण करे यह जामन मरण मिटाता है ।।९।।

४८. मंत्र जपो नवकार मनवा

मंत्र जपो नवकार मनवा, मंत्र जपो नवकार ।
पांच पदों के पैंतीस अक्षर, हे सुख के आधार
हो मनवा, है सुख के आधार । मुत्र.....
अरिहन्तों का सुमरन कर ले...
सिद्ध प्रभु का नाम तू जप ले ।

आचार्य है सुखकार, रे मनवा, मंत्र जपो नवकार....
उपाध्याय को मन से ध्याले,
सर्व साधु को शीश नवा ले....
होवे भव से पार, रे मनवा, मंत्र जपो नवकार....

धनहीन सुख सम्पत्ति पावे, मन वांछित हर का बनावे
सुखी रहे परिवार रे मनवा, मंत्र जपो नवकार....
रोग शोक को दूर भगावे, जन्म जरामृत दोष मिटावे
भव दुख भंजन हार, रे मनवा मंत्र जपो नवकार....

४९. रंगमा रंगमा रंगमा रे

प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....
आया परव दिन मंगल अवसर
भक्तिमा तारी हूँ नाची रहयो रे.....रंगमा
गावो रे गाणा आज वीतराग देवना
आतमदेव बतावी रहयो रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....रंगमा
आतमदेव ने अंतरमा देखो
सुख सरोवर उछली रहयो रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....रंगमा
भाव भरीने एमे भावना भावीजे
आप समान बनावी दीयो रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....रंगमा
समवशरण मा वीतराग देवा
जिनवाणी मा गणधर देवा
भगवान कहीने बोलावी रहयो रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....रंगमा

५०. सांवलिया पारस नाथ शिखर पर

सांवलिया पारस नाथ शिखर पर भला विराजा जी ।
भला विराजा जी, हो बाबा देखो भला विराजा जी ।
वैभव काशी का ठुकराना, राज पाठ तोहे बांध ना पाया,
तूं सम्मेद शिखर पर मुक्ति पाने आया ।

वो पर्वत तेरे मन भाया, -२ जहाँ भीलों का वासा जी ।।
टोंक-टोंक पर ध्वजा फहरावे झालर घंटा बाजे,
चरण कमल जिनवर के टोंक-टोंक पर साजे-२
दूर-दूर से यात्री आवे, आनन्द मंगल खासा जी ।।

झर-झर बहता शीतल नाला शान्त करे भव-भव की ज्वाला,
तीर्थ कहीं-नहीं जग में इतने जिनवर वाला ।
वन्दन करके पूरन होती, भक्तगणों की आशा जी ।।
हमको अपनी भक्ति का वर दो, समता भाव से अंतर भर दो,
हे पारसमणि भगवन हमको कंचन कर दो ।
तो असीस मिट जाये हमारा, जनम-जनम का रासा जी ।।

५१. त्रिशला मां के ललन

त्रिशला मां के ललन, ले लो अपनी शरण महावीर प्यारे ।
सारी दुनियां के आंखों के तारे ।।

तुम्हीं तारन तरन, मुझे पे कर दो कर्म, महावीर प्यारे ।
मेटो-मेटो जी संकट हमारे ।।

राज-पाठ सभी, तुमने छोड़ा, जाके, जंगल से नाता है जोड़ा,
घोर तपस्या है की शिक्षा जीने की दी भाग्य हमारे ।।

तुमने दुनियां का कष्ट बनाया, तेरे दर्शन को नाथ मैं आया,
एक किरण है जगी, दिल में लगन लगी महावीर प्यारे ।।

धर्म ध्यान का ज्ञान नहीं है, मोक्ष जाने का द्वार तूं ही है,
मुझ में कर दो करम, दिल में रखो भरम, महावीर प्यारे ।।

तुमने लाखों अधर्मी है तारे, मैं भी तिर जाऊँ नाथ सहारे,
हाथ जोड़ खड़ा, ये विनोद पड़ा, दर पे तुम्हारे ।।

५२. णमोकार की महिमा न्यारी

णमोकार की महिमा न्यारी मैं बतलाऊँ भली-भली ।
जिसने इसको ध्याया मन से नैया भव से पार चली।
णमोकार ऐसा है मंत्र जो-पैसे से नहीं पाते हैं।
इसको पढ़कर ऋषिमुनि-सब सिद्ध शिला को जाते हैं।
कोढ़ सरीख महा भयंकर - सब रोग मिटाते गली-गली ।
जिसने...

भव के योगी बनकर रोगी सिद्ध शिला को जाते हैं ।
बैल सरीखे सेवन करके स्वर्गो का सुख पाते हैं।
श्रद्धा इस पर करने से चौरासी की ना भटके गली-गली।
जिसने...

बड़े-बड़े आचार्यो ने भी इसकी महिमा गाई है।
इसकी महिमा इतनी है कि जिव्हा ना कह पाई है।
महामंत्र की महिमा गाकर मैं शोर मचाऊँ गली-गली ।।
जिसने...

सुबह शाम जपता जो इसको श्रद्धा इस पर रखता है।
इच्छित वस्तु पाता है या शिव रमणी को वरता है।
एक सौ आठ बार जपने से मिलती सुख की परम डली ।।
जिसने....

५३. भक्तामर का पाठ करो नित प्रातः

भक्तामर का पाठ करो नित प्रातः भक्ति मन लाई,
सब संकट जाय नशाई ।
जो ज्ञान मान मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे ।
उन चतुराई से नृपति ने लिया बहकाई सब संकट...

मुनिजी को नृपति बुलाया था सैनिक जा हुक्म सुनाया था।
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई सब संकट....

उपसर्ग घोर जब आया था, बलपूर्वक पकड़ मंगाया था ।
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बंधाई सब संकट....

मुनि कारागृह भिजवाए थे अड़तालीस ताले लगाये थे ।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई सब संकट....

मुनि शांत भाव अपनाया था, श्री आदिनाथ जी को ध्याया था ।
हो ध्यानमग्न भक्तामर दिया बनाई सब संकट....

सब बंधन टूट गये मुनि के ताले स्वयं खुले उनके ।
कारागृह से मुनि बाहर दिये दिखाई सब संकट...

राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था ।
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई सब संकट...

जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋषभ उचरण चित धरता है।
जो ऋद्धि मंत्र का विधिवत् जाप कराई सब संकट...

भयविघ्न उपद्रव टलते हैं, विपदा के दिवस बदलते हैं ।
सब मनवांछित हो पूर्ण शांति छा जाई सब संकट...

जो वीतराग आराधन है, आतम उन्नति का साधन है ।
उससे प्राणी का भवबंधन कट जाई सब संकट...

कौशल सुभक्ति को पहिचानो, संसार दृष्टि बंधन जानो ।
जो भक्तामर से आत्मज्योति प्रगटाई सब संकट...
श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रातः भक्ति मन लाई
सब संकट जाय नशाई ।

५४. दिन रात मेरे स्वामी

दिन रात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ ।
देहान्त के समय में तुमको न भूल जाऊं ।।
शत्रु अगर कोइ हो संतुष्ट उनको कर दूं ।
समता का भाव धरकर सबसे क्षमा कराऊं ।।
त्यागूं आहार पानी औषध विचार अवसर ।
टूटे नियम न कोई दृढ़ता हृदय में लाऊं ।।
जागें नहीं कषायें नहीं वेदना सतावें ।।

९५. ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है

ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा २
तीर्थ हमारा ये जग से न्यारा -२
मधूवन मांही बरसे रे, अमृत की ये धारा -२
ऊँचे-२ शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा-२
भाव सहित बंदें जो कोई -२
ताही नरक पशु गति ना होई-२
उनके लिए खूल जाए रे सीधा स्वर्ग का द्वारा-२
स्वर्ग का द्वारा हो स्वर्ग का द्वारा, उनके लिए
खुल जाए रे सीधा स्वर्ग का द्वारा....
ऊँचे-२ शिखरों वाला है ये तीर्थ हमारा
जहाँ तीर्थंकर ने वचन उचारे-२
कोटि-२ मुनि मोक्ष पधारे-२
पूज्य परम पद पायो रे जन्में ना दुबारा-२
जन्में ना दुबारा वो जन्में ना दुबारा-२
पूज्य परम पद पायो रे जन्मे ना दुबारा-२
ऊँचे-२ शिखरों वाला है ये तीर्थ हमारा-२
हरे-२ वृक्षों की झूमें डाली-२

समोंशरण की रचना निराली-२
पर्वत राज पे शीतल झरना बहता सुप्यारा-२
ऊँचे-ऊँचे शिखरों पर हैं ये तीर्थ हमारा-२
सारे जिनालयों में धोक लगाकर-२
कर लो जी स्वीकार प्रभू ये वंदन हमारा-२
वन्दन हमारा ये वन्दन हजारा-२
कर लो जी स्वीकार प्रभू ये वन्दन हमारा-२
ऊँचे-२ शिखरों वाला है ये तीर्थ हमारा-२

९६. सब मिलके आज जय कहो

सब मिलके आज जय कहो, श्री वीर प्रभू की
मस्तक झुका कर जय कहो, श्री वीर प्रभू की
विघ्नों का नाश होता है, लेने से नाम के
माला सदा जपते रहो, श्री वीर प्रभू की...सब...
ज्ञानी बनो दानी बनो, बलवान भी बनो
अकलंक सब बन कर कहो, जय वीर प्रभू की...सब...
होकर स्वतंत्र धर्म की रक्षा सदा करो
निर्भय बनो और जय कहो, श्री वीर प्रभू की...सब...
तूमको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है दास
जिनवाणी पे श्रद्धा करो, श्री वीर प्रभू की...सब...

५७. होली खेलें मुनिराज

होली खेलें मुनिराज, अकेले वन में, हो अकेले
काहे का रंग काहे की पिचकारी
काहे गुलाल उड़ावै वन में.... होली
समता रंग क्षमा पिचकारी
ज्ञान गुलाल उड़ावें वन में... होली
काहे की कीच काहे का गारा
काहे की धूल उड़ावें वन में...होली
धर्म की कीच, ज्ञान का गारा
कर्मो की धूल उड़ावें वन में....होली
ऐसी होली जो कोई खेले
पाप कटें उस के क्षण में.....होली

५८. मैंने तेरे ही भरोसे महावीर

मैंने तेरे ही भरोसे महावीर, भंवर में नैया डार दई
जन्म-जन्म का मैं दुखियारा, भव भव में दुःख पाया ।
सारी दुनिया से निराश हो,
शरण तुम्हारी आया ।। मैंने।।१।।
चारों गतियों में भरमाया कष्ट अनन्तों भोगें ।
आज मुझे विश्वास हो गया,
मेरी सुधि भी लोगे ।। मैंने ।।२।।
नाम तुम्हारा सुनकर आया, मेरे संकट हर लो ।
आत्म ज्ञान का दीपक दे दो,
मुझ को निज सम कर लो ।। मैंने।।३।।
बड़े भाग्य से तुमको पाया, अब न कहीं जाँऊगा ।
मुझे मोक्ष पहुँचा दो स्वामी,
फिर न कभी आँऊगा ।। मैंने।।४।।

५९. दो घड़ी है बावरे

दो घड़ी है बावरे, कभी तो ईश्वर ध्याया कर।
मन-मंदिर में गाफिले, झाड़ू रोज लगाया कर।।
नर तन के चोले को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जनमजनम के अशुभ कर्म का, जब तक मिलता मेल नहीं।।
नर तन पाने के लिए, उत्तम पुण्य कमाया कर।
दो घड़ी है बावरे, कभी तो ईश्वर ध्याया कर ।।१।।

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद हे बंदे, करता अपने आप रहा।।
प्रातःकाल उठ प्रेम से, सत्संगति में आया कर।
दो घड़ी है बावरे, कभी तो ईश्वर ध्याया कर।।२।।

भूखा - प्यासा रहा पड़ोसी, तूने रोटी खायी क्या ?
दुःखिया पास खड़ा है तेरे, तूने मौज उड़ायी क्या ?
पहले सबसे पूछकर, भोजन फिर तू खायाकर।
दो घड़ी है बावरे, कभी तो ईश्वर ध्याया कर ।।३।।

देख दया उस वीर प्रभू की कितनों को सत्ज्ञान दिया।
अरे सोचले अपने मन में कितनों का कल्याण किया।।
दो घड़ी हैं बावरे कभी तो ईश्वर ध्याया कर,
मन-मंदिर में गांफिले, झाड़ू रोज लगाया कर ।।४।।

६०. "ढूँढ ले ठिकाना"

आया कहाँ से कहाँ है जाना ?
ढूँढ ले ठिकाना चेतन ! ढूँढ़ ले ठिकाना।
सब कुछ तो जाना, निज को न जाना,
कैसा ज्ञानधारी तूने, आपा न पहचाना ।।टेक।।
इक दिन तेरा गोरा तन ये, मिट्टी में मिल जायेगा।
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा, कोई बचा न पायेगा।
नहीं चलेगा कोई बहाना, ढूँढ ले ठिकाना चेतन..१ ।।

जब तक तन में सांस है चलती, सब तुझको अपनायेंगे।
जब न रहेंगे प्राण ये तन में, देख इसे घबड़ायेंगे।
कहीं तो उसको पड़ेगा जाना, ढूँढ ले ठिकाना चेतन..२।।

धन-दौलत और रूप खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा।
दौलत के दीवानो सुन लो, कुछ भी साथ न जायेगा।
आया अकेला, अकेला ही जाना, ढूँढ ले ठिकाना चेतन..३।।

सत्गुरु जगा रहे हैं चेतन, सुन, भव से तर जायेगा।
सम्यक् दर्शनज्ञान से चेतन, दुःख सारा मिट जायेगा।
सच्चे सुखों का, यह है खजाना, ढूँढ ले ठिकाना चेतन..४ ।।

६१. लिया प्रभू अवतार

लिया प्रभु अवतार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार।
त्रिशलानंद कुमार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार ।।१ ।।
आज खुशी है, आज खुशी है,
हमें खुशी है, तुम्हें खुशी है।
खुशिया अपरम्पार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार ।।२ ।।
पुष्प और रत्नों की वर्षा,
सुरपति करते हरषा हरषा,
बजे दुन्दभी सार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार।।३ ।।
उमड़-उमड़ नर-नारी आते,
नृत्य भजन संगीत सुनाते।
इन्द्र शचि ले सार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार।।४ ।।

पुत्र का रूप अनूप सुहाया,
निरखि-निरखि छवि हरि ललचाया।
कीजे नेत्र हजार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार।।४ ।।
जन्मोत्सव की शोभा भारी,
देखो प्रभु की लगी सवारी।
जुड़ रही भीड़ अपार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार।।५।।
आओ, हम सब मिल गुण गावैं,
सत्य अहिंसा ध्वज लहरायें,
जो जग मंगलकार, जय जयकार,
जय जयकार, जय जयकार।।६ ।।

६२. महावीरा झूले अखियन में

महावीरा झूले मेरे नयनन में,
महावीरा झूले अंखियन में
अरे अखियन में, मेरे नयनन में,
महावीरा झूले मेरे नयनन में ।।१।।
अरे, मेरे मन में ऐसी आवे, ऐसी आवे,
भैया ऐसी आवे जन्म मनाऊँ कुंडलपुर में,
अरे अखियन में, मेरे नयनन में,
महावीरा झूले अखियन में।
महावीरा झूले मेरे नयनन में ।।२।।
मेरे मन में ऐसी आवे, ऐसी आवे, ऐसी आवे,
पूजा रचाऊँ चांदनपुर में,
अरे अखियन में, मेरे नयनन में....
महावीरा झूले अखियन में।
महावीरा झूले मेरे नयनन में ।।३।।

मेरे मन में ऐसी आवे, ऐसी आवे, ऐसी आवे,
ज्ञान सुनु विपुलाचल में,
अरे अखियन में, मेरे नयनन में,
महावीरा झूले अखियन में।।
महावीरा झूले अखियन में।।४।।
मेरे मन में ऐसी आवे, ऐसी आवे, ऐसी आवे,
लाडू चढाऊँ पावापुर में,
अरे लाडू चढ़ाये पावापुर में ।।
अरे अखियन में, मेरे नयनन में,
महावीरा झूले अखियन में।
महावीरा झूलें अखियन में।।५।।
मेरे मन में ऐसी आवे, अरे ऐसी आवे ऐसी आवे
अरे जाय बसूँ शिखरजी में, अरे शिखरजी में
महावीरा झूलें अखियन में,
अरे अखियन में, मेरे नयनन में,
अरे अखियन में, मेरे नयनन में,
महावीरा झूले अखियन में।
महावीरा झूलें अखियन में ।।६।।

६३. भीनी-भीनी उड़े रे फुहार

भीनी-भीनी उड़े रे फुहार, चलो रे भाई मंदिर में
चलो रे भाई मंदिर में, चलो रे भाई मंदिर में।
भीनी-भीनी उड़े रे फुहार।
आज का दिन है मंगलकारी, वीर प्रभु की महिमा न्यारी,
वीर प्रभु की महिमा न्यारी
उत्सव मनाओ रे आज, चलो रे भाई मंदिर में
चलो रे भाई मंदिर में, चलो रे भाई मंदिर में।।१।।
म्हारे प्रभुजी की सुंदर मूरतिया
दर्शन से छूटे भव-भव की डगरिया
पुण्य कमाओ रे आज चलो रे भाई मंदिर में
चलो रे भाई मंदिर में ।।२।।
मस्तों की दुनिया में, तू मस्त होजा,
आतम के रंग में ऐसे तू रंग जा।
आतम को ध्याओ रे आज, चलो रे भाई मंदिर में
चलो रे भाई मंदिर में, चलो रे भाई मंदिर में ।।३।।
जब म्हारे प्रभुजी को जनम भयो है।
घर-घर ढोल मृदंग बजो है।
तब देव करें जय जय कार, चलो रे भाई मंदिर में,
चलो रे भाई मंदिर में ।।४।।
भीनी-भीनी उड़ी रे फुहार....।

६४. मंत्र णमोकार

मंत्र णमोकार हमें, प्राणों से प्यारा
ये है वह जहाज, जिसने लाखों को तारा।।
मंत्र णमोकार हमें, प्राणों से प्यारा।
अरिहंतों को नमन हमारे, अशुभ कर्म-अरि हनन करें
सिद्धों के सुमिरन से आत्मा, सिद्धक्षेत्र को नमन करे।।
भव-भव में नहीं भ्रमे दुबारा ।।
मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा ।।१।।
आचार्यों के आचारों से निर्मल निज आचार करें
उपाध्याय का ध्यान करें हम, संवर का सत्कार करें।
सर्व साधु को नमन हमारा।।
मंत्र णमोकार हमें, प्राणों से प्यारा।।२।।
सोते-जागते चलते-फिरते, इसी मंत्र का जाप करो
आप कमाये पाप तो उसका, क्षय भी अपने आप करो।
इस महामंत्र का ले लो सहारा ।।
मंत्र णमोकार हमें, प्राणों से प्यारा ।।३।।
इसी मंत्र से नाग-नागिनी, पद्मावती धरणेन्द्र हुए
सेठ सुदर्शन की शूली से, मुक्ति मिली राजेन्द्र हुए।
अंजन चोर का कष्ट निवारा ।।
मंत्र णमोकार हमें, प्राणों से प्यारा।।४।।

६५. हे प्रभो ! आनंददाता

हे प्रभो, आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए ।।१।।

लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें ।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें ।।२।।

प्रेम से हम गुरुजनों की, नित्य ही सेवा करें ।
सत्य बोलें, झूठ त्यागें, मेल आपस में करें ।।३।।

निंदा किसी की हम किसी से, भूलकर भी न करें ।
धर्म बुद्धि मन लगाकर, वीर गुण गाया करें ।।४।।

ऐसा अनुग्रह और किरपा, हम पै परमात्मा ।
हो सभासद सब यहाँ के, शीघ्र ही परमात्मा ।।५।।

हे प्रभो, यह प्रार्थना है, आप इसे मंजूर करें ।
सब सुखी संसार हो, यह भाव रग-रग में भरें ।।६।।

घर हमारा देश हो, जनता कुटुम्बी हों सभी ।
गान गावें नित्य तेरा, धर्मरत हों हम सभी ।।७।।

६६. बीतीं घड़ियां जीवन की

बीती घड़ियां जीवन की, खबर नहीं है पल छिन की।
जग में लाखों आते हैं, करनी का फल पाते हैं
रीत यही है कर्मण की,
खबर नहीं है पल छिन की ।।१।।
धन बल मद रूप का मान करे, नश्वर तन अभिमान करे,
बलिहारी मन चंचल की,
खबर नहीं है पल छिन की ।।२।।
मीठे बोल न बोल सका, समता रस भी न घोल सका
चाह बढ़ी है विषयन की,
खबर नहीं है पल छिन की। ।३।।
जो भी देखा ललचाया, मन वश में नहीं कर पाया,
खबर नहीं है अपने धन की, बीती घड़िया जीवन की ।
खबर नहीं है पल छिन की। ।४।।
आतम अनुभव न जाना, बना पुजारी दीवाना
भटके गलियाँ भव वनकी, खबर नहीं है पल छिन की।
बीती घड़ियां जीवन की ।।५।।

६७. उमरिया रह गयी थोड़ी (तर्ज)

आये महावीर भगवान, माँ त्रिशला के आंगन में
मां त्रिशला के आंगण में, सिद्धार्थ के आंगन में,
आये महावीर भगवान।।१।।
जब गर्भकल्याणक आये सुरनर मुनि हरषाये,
फिर रतन दिये वरषाय, मां त्रिशला के आंगन में,
आये महावीर भगवान.।।२।।
जब जन्म कल्याणक आये, तब ऐरावत सज लाये,
फिर कलशा दिये ढराय, मां त्रिशला के आंगन में.।।३।।
जब तप कल्याणक आये, तब रत्न पालकी लाये
फिर केशलोंच तत्काल, मां त्रिशला के आंगन में.।।४।।
जब ज्ञानकल्याणक आये, तब समोशरण रचवाये,
फिर वाणी दई खिराय, समोशरण में आके
आये महावीर भगवान, मां त्रिशला के आंगन में।।५।।
जब मोक्षकल्याणक आये, तब पावा पुरते सुहाये,
कार्तिक अमावस की रात, फिर घर-घर दीप जलाये,
मां त्रिशला के आंगन में ।।६।।

२. आरती

१. ओम जय जय जय जिनदेव

ओम जय जय जय जिनदेव ! २ जय श्री जिन स्वामी,
हाँ प्रभु, जय जिनवरनामी
करुणा के सागर ! २ त्रिय जग के नामी !!
ओम जय जय जय जिनदेव.....
चिर मिथ्यात्व मिटाया, सत्संयम ध्याया,
हाँ प्रभु सत् संयम ध्याया,
पंच महाव्रत धारी ! २ केवल पद पाया !! ओम जय जय...
लोकालोक निहारे, दर्पण वत् सारे, हाँ प्रभु दर्पण वत् सारे
मोक्ष महल के राजा ! २ परम शांति धारे !! ओम जय जय..
जगतारण तुम दीनी स्याद्वाद् वाणी, हाँ प्रभु स्याद्वाद् वाणी,
अधम अनंते तारे ! २ हो तुम सो दानी !! ओम जय जय...
इंद्र नरेन्द्र करे हैं, तुम पद की सेवा, हाँ प्रभु तुम पद की सेवा,
तिहूँ जग विपद विदारक ! २ तुम देवन देवा !!
ओम जय जय.....
नित नित आरती गाऊं ध्यान धरुं तेरा,
हाँ प्रभु ध्यान धरुं तेरा,
मैं हूँ चरण शरण में, सेवक चरण शरण में !
मैटो भव फेरा !! ओम जय जय जय जिनदेव....

२. इह-विधि मंगल आरती कीजे

इह-विधि मंगल आरती कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजै ।
पहली आरती श्रीजिनराजा । भव-दधि पार उतार जिहाजा ।।
इह विधि ...।।
दूसरी आरती सिद्धन केरी । सुमरन करत मिटे भव फेरी ।।
इह विधि ...।।
तीसरी आरती सूर मुनिंदा । जनम-मरण दुःख दूर करिंदा ।।
इह विधि ...।।
चौथी आरती श्री उवझाया । दर्शन देखत पाप पलाया ।।
इह विधि ...।।
पांचमी आरती साधुतिहारी। कुमति-विनाशकशिवअधिकारी।
इह विधि ...।।
छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी । श्रावक वंदों आनंदकारी ।।
इह विधि ...।।
सातवीं आरती श्रीजिनवाणी 'द्यानत' सुरग-मुकति सुखदानी ।
इह विधि ...।।
संध्या करकेआरती कीजे । अपनो जनम सफल कर लीजे ।।
इह विधि ...।।
सोने का दीप कपूर की बाती । जगमग ज्योत जले सारी रात।
इह विधि ...।।

३. जय महावीर प्रभो

जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो ।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ।।
।। जय महा. प्रभो ।।
सिद्धारथ घर जन्में, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत पाल्यो तपधारी ।।
।। जय महा. प्रभो।।
आतम ज्ञान विरागी, समदृष्टि धारी ।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी ।।
।। जय महा. प्रभो ।।
जग में पाठ अहिंसा, आप ही विस्तारयो ।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचारयो ।।
।। जय महा. प्रभो ।।
यह विधि चांदनपुर में, अतिशय दर्शायो ।
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दूध गाय पायो ।।
।। जय महा. प्रभो ।।
प्राणदान मन्त्री को, तुमने प्रभु दीना ।
मन्दिर तीन शिखर का निर्मित है कीना ।।
।। जय महा. प्रभो ।।

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी ।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी ।।
।। जय महा. प्रभो ।।
जो कोई तेरे दर पर इच्छा कर आवे ।
धन सुत सब कुछ पावे, संकट मिट जावै ।।
।। जय महा. प्रभो ।।
निश दिन प्रभु मन्दिर में, जगमन ज्योति जरै ।
हरिप्रसाद चरणों में, आनन्द मोद भरै ।।
।। जय महा. प्रभो ।।

४. पूजा-पाठ रचाऊं मेरे स्वामी

पूजा-पाठ रचाऊं मेरे स्वामी, आतम ध्यान लगाऊं मैं ।
चन्दाप्रभु के दर्शन करने, सोनागिरि को जाऊं मैं ।।
पूजा-पाठ रचाऊं मेरे स्वामी, आतम ध्यान लगाऊं मैं ।
पार्श्व प्रभु के दर्शन करने, सम्मेद शिखर को जाऊं मैं ।।
पूजा-पाठ रचाऊं शुभ मन से, आतम ध्यान लगाऊं मैं ।
सन्मति स्वामी के दर्शन करने, सोनगिर को जाऊं मैं ।।

५. जय सन्मति देवा

जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा
वीर महा अतिवीर प्रभु जी, वर्धमान देवा... टेक
त्रिशला उर अवतार लिया, प्रभु सुर नर हर्षाए
पन्द्रह मास रतन कुण्डलपुर धनपति बरसाये... टेक
शुक्ल त्रयोदशी चैत्र मास की आनंद करतारी
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव ठाठ रचे भारी... टेक
तीस वरस तक रहे वन में, बाल ब्रह्मचारी
रात त्याग कर भर यौवन में, मुनि दीक्षा धारी... टेक
द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया
झलके लोकालोक ज्ञान में, सुख भरपूर लिया... टेक
कार्तिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष बसे
पर्व दिवाली चला तभी से, घर घर दीप जले ... टेक
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, शिवमग परकाशी
हरि-हर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो, जय जय अविनाशी ... टेक
दीन दयाला जग प्रतिपाला, सुर नर नाथ जजें
सुमरत विघ्न टरे इक छिन में पातक दूर भजें... टेक
चोर भील चांडाल उभारे, भव दुःख हरण तुम्हीं
पतित जान 'शिवराम' उभारो, हे जिन शरण गही... टेक

६. जय पारस देवा

जय पारस देवा प्रभु जय पारस देवा ।
सुर नर मुनि जन तव चरनन की करते नित सेवा ।।जय.।।
पौष बदी ग्यारह काशी में आनन्द अति भारी ।
अश्वसेन घर बामा के उर लीनो अवतारी ।।जय.।।
श्याम वर्ण नव हाथ काय पग उरग लखन सोहे ।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण सबका मन मोहे ।।जय. २।।
जलते देखे नाग नागनी पढ़ नवकार दिया ।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भान प्रकाश किया ।। जय. ३।।
मात पिता तुम स्वामी मेरे आस करूं किसकी ।
तुम बिन दूजा और न कोई शरण गहूं जिसकी ।। जय. ४।।
तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी ।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता त्रिभुवन के स्वामी ।।जय. ५।।
दीनबन्धु दुःखहरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे ।
दो शिवपुर का वास दास यह द्वार खड़ा तेरे ।।जय. ६।।
विषय विकार मिटाओ मन का अर्ज सुनो दाता ।
'भक्तगण' कर जोड़ प्रभु के चरणों चित लाता ।।जय. ७।।

७. जय शांतिनाथ स्वामी

जय शांतिनाथ स्वामी, प्रभु जय शांतिनाथ स्वामी ।
मन-वच-तन से बन्दों-२, जय अन्तरयामी ।। जय।।
गर्भ जन्म जब हुआ आपका, तीन लोक हर्षे।। स्वामी ।।
इन्द्र कियो अभिषेक शिखर पर-२, शिवमग के स्वामी ।
।। जय।।

पंचम चक्री भये आप ही षट्खण्ड के स्वामी ।
राज्य वैभव को भोगे -२, कामदेव नामी ।। स्वामी ।।
।। जय।।

अतुल वैभव तृणवत् त्यागा, हुये कर्मनाशी ।। स्वामी।।
भये आप तीर्थकर - २, शिवरमणी स्वामी ।।
।। जय।।

वीर सिन्धु को नमस्कार कर, तब आरती स्वामी ।
सूरज शिवपुर पावो -२, महावीर सुधामी ।। स्वामी ।।
।। जय।।

जय शांतिनाथ स्वामी, प्रभु जय शांतिनाथ स्वामी ।।

८. मैं तो आरती उतारूं रे

मैं तो आरती उतारूं रे, जिनवाणी माता की
जय जय जिनवाणी माता, जय जय मां ।। २।।
बड़ा अद्भूत है अगम अपार, मां के अन्तर में ।
बड़े ज्ञान के भरे हैं भण्डार, मां के अन्तर में ।
प्रीति करूं, भक्ति करूं, प्रेम सहित पठन करूं ।
जीवन सुधारूँ रे, हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारूँ रे ।।
मैं तो.....
नये प्रमाण से किया है विस्तार, प्रभु केवलज्ञानी ने ।
सप्त भंग का समुद्र है अपार, मां के अन्तर में ।
राग तजूँ, मोह तजूँ वीतराग शरण गहूं भव-भव सुधारूँ रे ।
हो प्यारा प्यारा भव सुधारूं रे ।
मैं तो .....
आज पाया है वैभव अपार, मां के अन्तर में ।
मिटे भव-भव का दुख अपार, मां की सेवा में ।।
पठन तजूँ, मनन तजूँ पर से अब भ्रमण तजूँ ।
निज को निहारूँ रे हो प्यारा प्यारा जीवन सवारूँ रे ।
मैं तो.....

९. हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तार देना ।
मुनियों ने समझी, मुनियों ने जानी
शास्त्रों की भाषा, आगम की वाणी,
हम भी तो जानें, हम भी तो समझें
विद्या का फल तो हमें मात देना । हे शारदे...
तू ज्ञानदायी हमें ज्ञान दे दो ।
रत्नत्रयों का हमें दान दे दो ।
मन से हमारे मिटा दो अंधेरे ।
हमको उजालों का शिवद्वार देना । हे शारदे...
तू मोक्षदायी, ये संगीत तुझ में ।
हर शब्द तेरा है हर भाव तुझ में ।
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे ।
तेरी शरण हम हमें तार देना । हे शारदे...

३. अध्यात्म पद

१. चेतन तू तिहुंकाल अकेला

चेतन तू तिहुंकाल अकेला,
नदी नाव संजोग मिले ज्यों, त्यों कुटंब का मेला ।।
।।चेतन०।।१।।

यह संसार असार रूप सब, ज्यों पटपेखन खेला।
सुख सम्पति शरीर जल बुद बुद, विनसत नाहीं बेला ।।
।।चेतन० ।।२।।

मोह मगन आतम गुन भूलत, परि तोहि गल जेला।।
मैं मैं करत चहूँ गति डोलत, बोलत जैसे छेला ।।
।।चेतन०।।३।।

कहत 'बनारसि' मिथ्यामत तज,होइ सुगुरु का चेला।
तास वचन परतीत आन जिय, होइ सहज सुरझेला।।
।।चेतन०।।४।।

२. कित गये पंच किसान हमारे

कित गये पंच किसान हमारे,

बोयो बीज खेत गयो निरफल, भर गये खाद पनारे ।।

कपटी लोगों से साझा कर कर हुये आप विचारे ।।

कित० ।।१।।

आप दिवाना गह गह बैठो, लिख लिख कागद डारे।।

बाकी निकसी पकरे मुकद्दम, पांचों हो गये न्यारे।।

कित० ।।२।।

रुक गयो शबद नहिं निकसत, हा हा कर्म सों हारे।।

बनारसि या नगर न बसिये, चल गये सीचन हारे ।।

कित० ।।३।।

३. चिन्तामन स्वामी सांचा साहिब मेरा

चिन्तामन स्वामी सांचा साहिब मेरा ।।

शोक हरै तिहुँ लोक को, उठ लीजतु नाम सबेरा।।

चिन्तामन० ।।१।।

सूरसमान उदोत हैं, जग तेज प्रताप घनेरा।

देखत मूरत भाव सौं, मिट जात मिथ्यात अंधेरा ।।

चिन्तामन० ।।२।।

दीनदयाल निवारिये, दुख संकट जो निस वेरा।

मोहि अभय पद दीजिये, फिर होय नहीं भव फेरा ।।

चिन्तामन० ।।३।।

बिंब विराजत आगरे, थिर थान थयो शुभ वेरा।

ध्यान धरै विनती करैं, 'बनारसि' बंदा तेरा ।।

चिन्तामन०।।४।।

४. दुविधा कब जैहै या मन की

दुविधा कब जैहै या मन की ।।

कब निजनाथ निरंजन सुमिरों, तज सेवा जन-जन की।।

दुविधा०।।१।।

कब रुचि सौं पीवैं दृग चातक, बूंद अखयपद धन की।

कब सुभ ध्यान धरौं समता गहि, करूं न ममता तन की।।

दुविधा०।।२।।

कब घट अन्तर रहै निरन्तर, दिढता सुगुरु वचन की।

कब सुख लहौं भेद परमारथ, मिटै धारना धन की।।

दुविधा०।।३।।

कब घर छाँडि होहुं एकाकी, लिये लालसा वन की।

ऐसी दशा होय कब मेरी, हौं बलि बलि वा छन की।।

दुविधा०।।४।।

५. रे मन ! कर सदा सन्तोष

रे मन ! कर सदा सन्तोष,
जातैं मिटत सब दुख दोष ।।
।।रे मन०।।१।।

बढत परिग्रह मोह बाढत, अधिक तृषना होति।
बहुत ईंधन जरत जैंसै, अगनि ऊंची जोति ।।
।। रे मन०।।२।।

लोभ लालच मूढ जन सो, कहत कंचन दान।
फिरत आरत नहिं विचारत, धरम धन की हान ।।
।। रे मन०।।३।।

नारकिन के पाय सेवत, सकुचि मानत संक।
ज्ञान करि बूझै 'बनारसी', को नृपति को रंक ।।
।। रे मन०।।४।।

६. वो दिन को कर सोच जिय मनमें

वा दिन को कर सोच जिय मनमें ।।
वनज किया व्यापारी तूने, टांडा लादा भारी रे।
ओछी पूंजी जूआ खेला, आखिर बाजी हारी रे।।
आखिर बाजी हारी, करले चलने की तय्यारी।
इक दिन डेरा होयगा वन में ।।वा दिन०।।१।।
झूठैं नैना उलफत बांधी, किसका सोना किसकी चांदी।।
इक दिन पवन चलेगी आंधी, किसकी बीबी किसकी बांदी।।
नाहक चित्त लगावै धन में ।।वा दिन०।।२।।
मिट्टी सेती मिट्टी मिलियौ, पानी से पानी।
मूरख सेती मूरख मिलियौ, ज्ञानी से ज्ञानी।।
यह मिट्टी है तेरे तन में ।।वा दिन०।।३।।
कहत बनारसि सुनि भवि प्राणी, यह पद है निरवाना रे।।
जीवन मरन किया सो नांही, सिर पर काल निशाना रे।।
सूझ पड़ेगी बुढापे पन में ।।वा दिन०।।४।।

७. मानत क्यों नहिं रे, हे नर सीख सयानी

मानत क्यों नहिं रे, हे नर सीख सयानी।।
भयो अचेत मोह मद पीके, अपनी सुध बिसरानी।।
मानत० ।।१ ।।

दुखी अनादि कुबोध अव्रत तैं, फिर तिनसौं रति ठानी।
ज्ञान सुधा निज भाव न चाख्यों, पर परनति मति सानी।।
मानत० ।।२ ।।

भव असारता लखै न क्यों जहं, नृप है कृमि विट थानी।
सधन निधन नृप दास स्वजन रिपु, दुखिया हरि से प्रानी।।
मानत० ।।३ ।।

देह येह गदगेह नेह इस है, बहु विपति निशानी।
जड मलीन छिन छीन करम कृत, बन्धन शिव सुखहानी।।
मचनत० ।।४ ।।

८. तुम प्रभु कहियत दीन दयाल

तुम प्रभु कहियत दीन दयाल।।
आपन जाय मुकति में बैठे, हम जु रुलत जग जाल।।
तुम०।।१।।

तुमरो नाम जपैं हम नीके, मन बच तीनों काल।
तुम तो हमको कछू देत नहिं, हमरो कौन हवाल ।।
तुम०।।२।।

बुरे भले हम भगत तिहारे, जानत हो हम चाल।
और कछू नहिं यह चाहत हैं, राग-दोष कौ टाल।।
तुम०।।३।।

हमसौं चूक परी सो बकसो, तुम तो कृपा विशाल।
द्यानत एक बार प्रभु जनतैं, हमको लेहु निकाल।।
तुम०।।४।।

९. आयो सहज वसन्त खेलैं सब होरी होरा

आयो सहज वसन्त खेलैं सब होरी होरा ।।
उत बुधि दया छिमा बहु ठाढी,
इत जिय रतन सजे गुन जोरा ।।आयो० ।।१ ।।
घान ध्यान डफ ताल बजत हैं,
अनहद शब्द होत घनघोरा ।।
धरम सुराग गुलाल उडत है,
समता रंग दुहूँनें घोरा ।।आयो० ।।२ ।।
परसन उत्तर भरि पिचकारी,
छोरत दोनों करि करि जोरा ।।
इततैं कहै नारि तुम काकी,
उततैं कहै कौन को छोरा ।।आयो० ।।३ ।।
आठ काठ अनुभव पावक में,
जल बुझ शांत भई सब ओरा ।।
द्यानत शिव आनन्द चन्द छवि,
देखैं सज्जन नैन चकोरा ।।आयो० ।।४।।

१०. चेतन खेलै होरी

चेतन खैलै होरी।
सत्ता भूमि छिमा वसन्त में, समता प्रान प्रिया संग गोरी ।।
चेतन०।।१।।

मन को माट प्रेम को पानी, तामें करुना केसर घोरी।
ज्ञान ध्यान पिचकारी भरि भरि, आप में छारै होरा होरी।।
चेतन०।।२।।

गुरु के वचन मृदंग बजत हैं, नय दोनों डफ ताल टकोरी।
संजम अतर विमल व्रत चोवा, भाव गुलाल भरैभर झोरी।।
चेतन० ।।३।।

धरम मिठाई तप बहुमेवा, समरस आनन्द अमल कटोरी।
द्यानत सुमति कहै सखियन सों, चिरजीवों यह जुग जुग जोरी ।।
चेतन।।४।।

११. मिथ्या यह संसार है रे

मिथ्या यह संसार है रे, झूठा यह संसार है रे ।।
जो देही वह रस सौं पोशै, सो नहि संग चलै रे।
औरन कौं तोहि कौन भरोसौ, नाहक मोह करै रे ।।
मिथ्या ।।१।।

सुख की बातें बूझै नाहीं, दुख कौं सुख लेखै रे।
मूढौ मांही माता डोलै, साधौ नाल डरै रे।।
मिथ्या ।।२।।

झूठ कमाता झूठी खाता, झूठी जाप जपै रे।
सच्चा सांई सूझै नाहीं, क्यौ कर पार लगै अै।।
मिथ्या ।।३।।

जम सौं डरता फूला फिरता, करता मैं मैं मैरे।
द्यानत स्याना सोइ जाना, जो जप ध्यान धरै अै।।
मिथ्या ।।४।।

१२. अरहंत सुमरि मन बावरे

अरहंत सुमरि मन बावरे ।
ख्याति लाभ पूजा तजि भाई, अंतर प्रभु लौं जाव रे ।।
अरहंत० ।।१।।

नर भव पाय अकारथ खोवै, विषै भोग जु घटाव रे।
प्राण गए पछितै है मनुवां, छिन छिन छीजै आव रे ।।
अरहंत०।।२।।

जुवती तन धन सुत मित परिजन, गज तुरंग रथ चाव रे।
यह संसार सुपन की माया, आंखि मीच दिखराव रे ।।
अरहंत०।।३।।

ध्याव रे ध्याव रे, अब यह दाव रे, श्री जिन मंगल गाव रे।।
द्यानत बहुत कहा लौं कयि, फेर न कछु उपाव रे ।।
अरहंत०।।४।।

१३. अब हम नेमिजी की शरन

अब हम नेमिजी की शरन।
और ठौर न मन लागत है, छांडि प्रभु के संग ।। अव०।।१।।
सकल भवि-अघ-दहन वारिद, विरद तारन तरन।।
इन्द्र चन्द फनिन्द ध्वावै, पाय सुख दुख हरन ।। अव०।।२।।
भरम-तम-हर-तरनि, दीपति, करम गन खय करन।।
गनधरादि सुरादि जाके, गुन सकत नहि वरन ।। अव०।।३।।
जा समान त्रिलोक में हम, सुन्यौं और न करन ।।
दास द्यानत दयानिधि प्रभु, क्यों तजैंगे परन ।। अव०।।४।।

१४. मेरी बेर कहा ढील करीजे

मेरी बेर कहा ढील करीजे।
सूली सों सिंहासन कीना, सेठ सुदर्शन विपत हरीजे।।१ ।।
सीता सती अगनि में बैठी, पावक नीर करी सगरी जी।
वारिषेण पै खडग चलायो, फूलमाल कीनी सुथरीजी।।२।।
धन्या वापी पस्यो निकालों, ता घर रिद्ध अनेक भरी जी।
सिरीपाल सागर तैं तारयो राजभोग कै मुकती वरी जी ।।३।।

१५. अे मन भज भज दीन दयाल

रे मन भज भज दीन दयाल।।
जाके नाम लेत इक खिन में,
कटै कोटि अघ जाल ।।रे मन०।।१।।
पार ब्रह्म परमेश्वर स्वामी,
देखत होत निहाल।
सुमरण करत परम सुख पावत,
सेवत भाजै काल ।।रे मन०।।२।।
इन्द्र फणिंद्र चक्रधर गावैं,
जाकौ नाम रसाल।।
जाके नाम ज्ञान प्रकासै,
नासै मिथ्या चाल ।।रे मन०।।३।।
जाके नाम समान नहीं कछु,
ऊरध मध्य पताल ।।
सोई नाम जपौ नित द्यानत,
छांडि विषै विकराल ।।रे मन०।।४।।

१६. चरखा चलता नाही रे

चरखा चलता नाही रे, चरखा हुआ पुराना वे।।
पग खूंटे दो हालन लागे, उर मदरा पखराना।
छीदी हुई पांखड़ी पांसू, फिरै नहीं मनमाना ।।१।।

रसना तकलीने बल खाया, सो अब कैसें खूटै।
शबद सूत सुधा नहिं निकसै, घड़ी घड़ी पल टूटै ।।२।।

आयु मालका नहीं भरोसा, अंग चलाचल सारे।
रोज इलाज मरम्मत चाहै, वैद बाढ़ ही हारे ।।३।।

नया चरखला रंगा चंगा, सबका चित्त चुरावै।
पलटा वरन गये गुन अगले, अब देखैं नहिं भावै ।।४।।

मौटा मही कातकर भाई !, कर अपना सुरझेरा।
अंत आग में ईंधन होगा, 'भूधर' समझ सवेरा ।।५।।

१७. सुनि ठगनी माया

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया।
टूक विश्वास किया जिन तेरा,
सो मूरख पछताया ।। सुनि०।।१।।
आभा तनक दिखाये बिज्जु,
ज्यों मूढमती ललचाया।
करि मद अंध धर्म हर लीनों,
अन्त नरक पहुँचाया ।। सुनि०।।२।।
केते कंथ किये तैं कुलटा,
तो भी मन न अघाया।
किस ही सौं नहिं प्रीति निभाई,
वह तजि और लुभाया ।। सुनि०।।३।।
'भूधर' छलत फिरत यह सबकों,
भौंदू करि जग पाया।
जो इस ठगनी को ठग बैठे,
मैं तिनको शिर नाया ।। सुनि० ।।४।।

१८. भगवंत भजन क्यों भूला रे

भगवंत भजन क्यों भूला रे।।
यह संसार रैन का सुपना, तन धन वारि-बबूला।
भगवन्त०।।१।।

इस जीवन का कौन भरोसा, पावक में तृणपूला रे।
काल कुदार लिये सिर ठांडा, क्या समझै मन फूला रे।।
भगवन्त०।।२।।

स्वारथ साधै पांच पाँव तू, परमारथ को लूला रे।
कहु कैसे सुख पैहैं प्राणी काम करै दुखमूला रे।।
भगवन्त०।।३।।

मोह पिशाच छल्यो मति मारै निजकर कंध वसूला रे।
भज श्रीराजमतीवर 'भूधर' दो दुरमति सिर धूला रे।।
भगवन्त०।।४।।

१९. होरी खेलूंगी घर आए चिदानंद

होरी खेलूंगी घर आए चिदानंद।।
शिशर मिथ्यात गई अब,
आइ काल की लब्धि वसंत ।।होरी०।।१।।
पीय संग खेलनि कौं,
हम सइये तरसी काल अनन्त।।
भाग जग्यो अब फाग रचानौ,
आयौ विरह को अंत ।।होरी०।।२।।
सरधा गागरि में रुचि रूपी,
केसर घोरि तुरन्त।।
आनन्द नीर उमंग पिचकारी,
छोडूंगी नीकी भंत ।।होरी०।।३।।
आज वियोग कुमति सौतनिकौं,
मेरे हरश अनंत।।
भूधर धनि एही दिन दुर्लभ,
सुमति राखी विहसंत ।।होरी०।।४।।

२०. चेतन खेलो सुमति संग होरी

चेतन खेलो सुमति संग होरी ।।चेतन०।।
तोरी आन की प्रीति सयाने,
भली बनी या जोरी ।।चेतन०।।१।।
डगर डगर डोलत है यौं ही,
आव आपनी पोरी।।
निज रस फगुवा क्यौं नहि बांटो,
नातरि ख्वारी तोरी ।।चेतन०।।२।।
छार कषाय त्याग या गहि लै
समकित केसर घोरी।।
मिथ्या पाथर डारि धारि लै,
निज गुलाल की झोरी ।।चेतन०।।३।।
खोटे भेष धरैं डोलत है,
दुख पावै बुधि भोरी।।
बुधजन अपना भेष सुधारो।
ज्यौं विलसो शिव गोरी ।।चेतन०।।४।।

२१. निजपुर में आज मची होरी

निजपुर में आज मची होरी।।
उमंगि चिदानंदजी इत आये,
इत आई सुमती गोरी ।।निज०।।१।।

लोकलाज कुलकाणि गमाई,
ज्ञान गुलाल भरी झोरी ।।निज०।।२।।

समकित केसर रंग बनायो,
चारित की पिकी छोरी ।।निज०।।३।।

गावत अजपा गान मनोहर,
अनहद झरसौं बरस्यो री ।।निज०।।४।।

देखन आये बुधजन भीगे,
निरख्यौ ख्याल अनोखी री ।।निज०।।५।।

२२. उत्तम नर भव पायकै

उत्तम नर भव पायकै, मति भूलै रे रामा ।।
उत्तम०।।

कीट पशू का तन जब पाया, तब तू रह्या निकामा।
अब नरदेही पाय सयाने, क्यौं न भजै प्रभु नामा।।
उत्तम।।१।।

सुरपति याकी चाह करत उर, कब पाऊं नरजामा।
ऐसा रतन पायकैं भाई, क्यौं खोवत विन कामा।।
उत्तम०।।२।।

धन जोबन तन सुन्दर पाया, मगन भया लखि भामा।
काल अचानक झटक खायगा, परे रहैंगे ठामा।।
उत्तम०।।३।।

अपने स्वामी के पद पंकज, करो हिये विसरामा।
मेटि कपट भ्रम अपना बुधजन, ज्यौं पावै शिव धामा।।
उत्तम०।।४।।

२३. आतम रूप अनुपम अद्भुत

आतम रूप अनुपम अद्भुत,
याहि लखैं भव सिंधु तरो ।।आतम०।।
अल्प काल में भरत चक्रधर,
निज आतम को ध्याय खरो।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे,
तत छिन पायौ लोक सिरो ।।आतम०।।१।।
या बिन समुझे द्रव्य लिंग मुनि,
उग्र तपन कर भार भरो।
नव ग्रीवक पर्यन्त जाय चिर,
फेर भवार्णव मांहि परो ।।आतम०।।२।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप,
येहि जगत में सार नरो।
पूरव शिव को गये जांहि अब,
फिर जै हैं यह नियत करो ।।आतम०।।३।।
कोटि ग्रन्थ को सार यही है,
ये ही जिनवानी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतम को,
मुक्ति-रमा तव बेग वरो ।।आतम०।।४।।

२४. जाऊं कहां तज शरन तिहारो

जाऊं कहां तज शरन तिहारो ।।

चूक अनादि तनी या हमारी,

माफ करौं करुणा गुन धारे ।।जाऊं०।।१।।

डूबत हों भव सागर में अब,

तुम बिन को मोहि पार निकारे ।।जाऊं।।२।।

तुम सम देव अबर नहि कोई,

तातैं हम यह हाथ पसारे ।।जाऊं।।३।।

मोसम अधम अनेक ऊबारे,

बरनत हैं गुरु शास्त्र अपारे ।।जाऊं।।४।।

'दौलत' को भवपार करो अब,

आयो है शरनागत थारे ।।जाऊं०।।५।।

२५. मेरो मन ऐसी खेलत होरी

मेरो मन ऐसी खेलत होरी।।

मन मिरदंग साज करि त्यारी, तन को तमूरा बनोरी।

सुमति सुरंग सरंगी बजाई, ताल दोउ कर जोरी।।

राग पांचौं पद कोरी ।।मेरो मन०।।१।।

समकित रूप नीर भरि झारी, करुना केशर छोरी।

ज्ञानमई ले कर पिचकारी, दोउ कर मांहि सम्होरी।।

इन्द्री पाचौं सखि बोरी ।।मेरो मन०।।२।।

चतुरदान को है गुलाल सो, भरि भरि मूठ चलोरी।

तप मेवा की भरि निज झोरी, यश को अबीर उडोरी ।।३।।

रंग जिन धाम मचो री ।।मेरो मन०।।३।।

दौलत बाल खेलें अस होरी, भव भव दुख टलोरी।

शरना ले इक श्री जिन को री, जग में लाज हो तोरी।।

मिलै फगुआ शिव होरी ।।मेरो मन०।।४।।

२६. हमतो कबहु न निजघर आये

हमतो कबहु न निजघर आये,
पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।
परपद निजपद मान मगन है, पर परणति लिपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुख कंद मनोहर, चेतन भाव न भाये ।।१।।
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, आतम गुण नहिं गाये ।।२।।
हित अनहित कछु समझयौ नाहीं, मृग जल बुध ज्यौं धाए।।
द्यानत अब निज निज पर है, सत्गुरु बैन सुनाये ।।४।।

२७. सांची तो गंगा यह वीतराग वानी

सांची तो गंगा यह वीतराग वानी।
अविच्छन्न धारा निज धर्म की कहानी।।सांची०।।
जामें अति ही विमल अगाध ज्ञान पानी।
जहां नहीं संशयादि पंक की निशानी।।सांची०।।१।।
सप्त भंग जहं तरंग उछलत सुखदानी।
संत चित्त मरालवृंद रमैं नित्य ज्ञानी।। सांची०।।२।।
जाके अवगाहन तैं शुद्ध होय प्रानी।
'भागचन्द' निहचै घट मांहि या प्रमानी।।सांची०।।३।।

२८. महिमा है अगम जिनागम की

महिमा है अगम जिनागम की।।
जाहिं सुनत जड भिन्न पिछानी,
हम चिन्मूरति आतम की ।।महिमा०।।१।।

रागादिक दुखकारन जानें,
त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की।।
ज्ञान ज्योति जागी घट अन्तर,
रुचि वाढी पुनि शम दम की ।।महिमा०।।२।।

कर्म बन्ध की भई निरजरा,
कारण परम्परा क्रम की।।
भागचन्द शिव लालच लागो,
पहुँच नहीं है जहां जम की ।।महिमा०।।३।।

२९. आयौ सरन तिहारी, जिनेसुर

आयौ सरन तिहारी, जिनेसुर।।
कृपा कर राखौ निज चरनन,
आवागमन निवारी ।।जिने०।।१।।

करम वेदना च्यारों गति की,
सो नहिं परत सहारी।।
तारण विरद तिहारो कहिये,

भुगति मुकति दातारी ।।जिने०।।२।।
लख चौरासी जौनि फिरयौ हूँ,
मिथ्यामति अनुसारी।।
दरसन देहु नेह करि मो पर,

अब प्रभु लेहु उबारी ।।जिने०।।३।।
जादोवंश मुकट मणि जिनवर,
नेमिनाथ अवतारी।।
तुम तौ हो त्रिभुवन के पालक,
कितीयक बात हमारी ।।जिने०।।४।।

३०. करौं आरती आतम देवा

करौं आरती आतम देवा।
गुण परजाय अनन्त अभेवा ।।करू०।।१।।
जामैं सब जग वह जग मांही।

बसत जगत मैं जग सम नाही ।।करू०।।२।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ध्यावै।

साधु सकल जिह के गुण गावै ।।करू०।।३।।
बिन जानै जिय चिर भव डोलै।

जिहि जानै छिन सिव-पट खोलै ।।करू०।।४।।
व्रती अव्रती विध व्यौहारा।

सो तिहुँ काल करम सौ न्यारा ।।करू०।।५।।
गुरु शिष्य उभै वचन करि कहियै।

बचनातीत दसा तिस लहियै ।।करू०।।६।।
सु-पर भेद कौ खेद न छेदा।

आप आप मैं आप निवेदा ।।करू०।।७।।
सो परमातम पद सुखदाता।
हौह बिहारीदास विख्याता ।।करू०।।८।।

३१. प्रभु विन कौन उतारै पार

प्रभु विन कौन उतारै पार।
भव जल अगम अपार ।।प्रभु०।।
कृपा तिहारी तै हम पायौ।

नाम मंत्र आधार ।।प्रभु०।।१।।
तुम नीकौ उपदेस दीयौ।
इह सब सारन कौ सार।।
हलके होइ चले तेई निकसे।

बूडे तिन सिर भार ।।प्रभु०।।२।।
उपगारी कौं ना बिसरिये।
इह धरम सुखकार।
'धरमपाल' प्रभु तुम मेरे तारक।
किम प्रभु लौ उपगार ।।प्रभु०।।३।।

३२. जनमें नाभि कुमार

जनमें नाभि कुमार, बधाई जग मैं छा रही है।।
मरुदेवी कै आंगन माहीं, गावत मंगलाचार ।।
बधाई०।।१।।
इन्द्राणी मिलि चौक पुरावत, भर भर मोतियन थाल।।
तांडव नृत्य हरी जहां कीनौं, आनंद उमंग अपार ।।
बधाई०।।२।।
नरनारी पुरकैं आंगन माहीं, बांधत बांदरवार।।
नीर जु अगर अर्गजा बहु विधि, छिडकत घर घर द्वार।।
बधाई०।।३।।
अश्व गज रतन बटत पाटंवर, जांचक जन कूंसार।।
इहि विधि हर्ष भयो त्रिभुवन मैं, इत न आवत पार ।।
बधाई०।।४।।
कारण स्वर्ग मुक्ति को है यक, सब जीवन हितकार।।
'साहिव' चरण लागि नित सेवों, ज्यों उतरो भवपार ।।
बधाई०।।५।।

४. स्वरचित काव्य

१. णमोकार मंत्र

णमोकार मन्त्र,
धर्म की निष्पत्ति है
प्राणों का स्पन्दन है
आभा मण्डल को बदलने की
आमूल प्रक्रिया है
कर्मो को निर्मूल करने का
अहिंसक महाशस्त्र है
भगवत्ता का निर्माण है
आत्म समर्पण से
अहंकार के विगलन से
अन्तर्द्वन्द्वों के पार होने से
आचरण और ज्ञान के समन्वय से
श्रद्धा और आत्मशक्ति के
उद्घाटन की दिशा में
वीतरागी उपदेश से
अपवर्ग दृष्टा रूप
निमित्त पाने से ।।१।।

यह नमन है उन महात्माओं को
जिन्होंने कुछ पाया है जाना है
शरीर के पार पहचाना है ज्योति को पाया है
काल, जाति, संप्रदाय वर्ग
लिंगातीत होकर
प्राणि मात्र की शक्ति को
परमात्मा तक पहुँचाया है
पूर्ण अहिंसा को विधेय बताया है ।।२।।
यह सत्संग है, चिरन्तन सान्निध्य है
अशुभ से शुभ की ओर जाने का
अमंगल से मंगल की यात्रा का
स्रोत रहित चेतना के
विशुद्ध स्वरूप को पाने का
बन जायें इससे परम परमात्मा
जहां निषेध असीमित होता है
विधेय ससीम,असीम और ससीम
जीवन के दो छोर,
समन्वय के सूत्रधारक
कर्मो के उपघातक,
उपशामक, प्रशान्तचित्त,
अरिहंत और सिद्ध ।।३।।

नमन उन्हें इसलिए कि
उनके विचारों को पकड़ने की क्षमता पैदा हो
टेलिपैथिक जगत में प्रवेश हो
सभी पापों का नाश हो
कर्मों का विनाश हो
देख सकें उन पुण्यात्माओं को
भाव कर सकें उनके चरण पाने को
प्राण और ऊर्जा पा सकें
उन्हें हृदय में बैठाने को
आचार्यों को
उपाध्यायों और सभी साधुओं को ।।४।।
मंगल का यह भाव
संस्कारों का निर्माण है
पवित्र भावन है, शुभ बीज है
मूल रूप पाने की आकांक्षा है
धारणा के पीछे, चलने की छाया है
एसे वर्तुल चिन्तन के
जो स्वप्न में भी उतर जायें
अवचेतन मन में, समा जायें साँसों में
मात्र सही चेतना रह जाये
वासना के निर्मूल हो जाने से
सहज स्वभाव पाने से ।।५।।

२. ओंकार

ओंकार अनाहद नाद है,
अर्थातीत पुकार है ।
अजपा जाप भले ही हो,
महामृत्यु का द्वार है ।।१।।
महामन्त्र णमोकार यह,
परमात्मा का सार है ।
निर्विवाद है इसकी छाया,
शुद्ध स्वरूपी तार है ।।२।।
मन मिटने का नाज है,
शुद्ध ध्वनि का साज है।
अन्तरखोजी ताज है,
महिमा अपरंपार है ।।३।।
ऊर्जा का आधार है,
कंठों का श्रृंगार है ।
अखंड ज्योति की धार में,
मुक्ति का मणिहार है ।।४।।
साधना का पाठ है,
दिव्य-ध्वनि का गीत है।
अमृत का रसधार है,
जीवन का संगीत है ।।५।।
अर्हन्त सिद्ध का वास है,
आचार्य उपाध्याय का मीत है।
साधु का शरण स्थल है,
वीतरागता की जीत है ।।६।।

३. मेरी भावना

इष्टदेव हो वही हमारा, वीतरागता जिसमें हो ।
नहीं किसी से राग-द्वेष हो, आप्त और परमातम हो ।।
स्वाध्यायी बनकर दृढ़ता से, पूजा उसकी नित्य करुँ ।
परोपकार व्रत को साधूं मैं, अपना भी कल्याण करुँ ।।१।।

सत्य अहिंसा का व्रत ले लूँ, कभी प्रमादी नहीं बनूँ ।
कभी न कोई भेदभाव हो, साधु भाव में लीन रहूँ ।।
भौतिकता से दूर रहूँ मैं, आतम रस का पान करूँ ।
सृजनशीलता मुखरित होवे, सहज भाव व्यवहार करूं ।।२।।

संयम अनुशासन से शासित, रहें वृत्तियां जीवन भर ।
भक्ति रहे निष्काम ज्ञानमय, अन्तर वीणा हो सस्वर ।।
समता से अनुप्राणित हो मन, सर्वोदय का चिन्तन हो ।
द्रव्य स्वरूप विचारूँ प्रतिपल, सन्तों का अभिवन्दन हो ।।३।।

सदाचार की पौध फले नित, धर्म चेतना बनी रहे ।
क्रियाकाण्ड में ही नहिं उलझूँ, धार्मिकता का ध्यान रहे ।।
प्रामाणिक व्यवहार रहे नित, लोभ-पाप से दूर रहूँ ।
कर्तव्य भावना से पूरित हो, कदाचार से मुक्त रहूँ ।।४।।

आतिथ्य दान में निरत रहूँ मैं, कभी न संग्रह भाव रहे ।
प्रेम रहे सब धर्मों से नित, द्वेष न मन में आ पाये ।।
सदाचार से ही मण्डित हो, निर्विकार जीवन-शैली ।
मानवता पर आधारित हो, हो न कभी चादर मैली ।।५।।

सामाजिकता हो कर्मों में, सहिष्णुता का भाव रहे ।
सेवाव्रत का साधक होऊं, पद-लोलुपता नहीं रहे ।।
संकल्पी दृढता आ जाये, निर्भय बिल्कुल हो जाऊँ ।
अनासक्त हो निराकांक्ष बन, इच्छायें सीमित कर लूँ ।।६।।

राजनीति में धर्मनीति हो, ऊँच-नीच के भाव न हों ।
करुणा के सब निर्झर फूटें, ममता पुष्प प्रफुल्लित हों
समता और समन्वय भक्ति, शान्ति रहे परिवारों में ।
कोई कभी नहिं विचलित होवे, मुद्रा के व्यापारों में ।।७।।

मैत्री चित्त रहे जीवों पर, औषधि निर्भय दान करूँ ।
तृष्णा और परिग्रह से मन, हरदम कोसों दूर रखूँ ।।
सदा कृतज्ञ रहूं निर्दोषी, ईर्ष्या-द्वेष न मन में हो ।
सद्भावों से पूरित होऊं, परोत्कर्षी भावधरूं ।।८।।

जिह्वा संयम को पालूँ मैं, चक्षु न आक्रामक होवे ।
काम वासना पर संयम कर, दृष्टि न विकृत हो पावे ।।
भक्ष्य न हो मादक उत्तेजक, शाकाहारी पूर्ण रहूँ ।
शुद्ध और सात्विक भोजन हो, श्रम सीकर से आर्द्र रहूँ ।।९।।

इन्द्रिय संयम का पालन हो, सब के मन के कोनों में ।
व्यसन मुक्त हो जीवन सब का, जागरूक हों अपने में ।।
नहीं दहेज का विष हो मन में, नारी का उत्थान करूँ ।
रूढ़िमुक्त हो, शीलयुक्त हो, नहीं कभी परतन्त्र बनूँ ।।१०।।

चारित्र साधना हो मेरी अब, मन भी निश्छल बना रहे।
परधन से ममता ना होवे, पशु-पक्षी पर प्रेम रहे ।।
मायावी व्यवहार न होवे, गुणग्रहण की कोशिश हो ।
न्याय मार्ग पर सदा चलूँ मैं, व्रत पालन में दृढ़ता हो ।।११।।

पर पदार्थ को बीच न लाऊँ, आत्मा का स्पर्श करूं ।
चंचल मन के वश न होऊँ, सम्यक् भाव सदा रक्खूँ ।।
धर्म नीति पालन करने को, मैं अपना कर्तव्य कहूँ ।
आत्मनिरीक्षण सदा करूं मैं, भटकावों से दूर रहूँ ।।१२।।

सभी स्वावलम्बी हों जग में, विग्रह भाव नहीं होवे ।
मानवीय पहलू हो मन में, दृष्टिकोण सम्यक् होवे ।।
मंगलमय जीवन हो सब का, आपस में सहयोग रहे ।
शोषण मुक्त समाज बने सब, हम सब का संकल्प रहे ।।१३।।

राग-द्वेष से मुक्त तपस्वी, बनकर निज कल्याण करूँ ।
अर्हं इष्ट हमारा होवे, परमेष्ठी का ध्यान धरूँ ।।
जाति, वर्ण, वृष, सम्प्रदाय के,भेदभाव से दूर रहूँ ।
भाषा-संयम सदा रहे मम, भेदज्ञान सदा रक्खूँ ।।१४।।

सुख-दुःख से भरपूर जगत में, समता से व्यवहार करूं ।
आत्मा से आत्मा को देखूँ, नहीं स्वार्थ का ध्येय रखूँ ।।
नहीं करूँ अपमान किसी का, अहंकार से दूर रहूँ ।
प्रज्ञा चक्षु हमारा होवे, भाव प्रशस्त सदा रक्खूँ।।१५।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरितमय, जीवन का हर पल होवे ।
दुर्लभ मानव जीवन पाकर, मृत्यु बोध गहरा होवे ।।
विश्व शान्ति हो, समतावादी, भ्रष्टाचार न हो पावे ।
दुर्भिक्ष कहीं भी नहिं हो जग में, चेतनता जागृत होवे ।।१६।।

आक्रमण करे नहिं कोई पर पर, सभी देश विकसित होवें ।
आपस में विश्वास करें हम, हिंसक युद्ध नहीं होवें ।।
पंचशील का पालन करके, जन-जन का कल्याण करें ।
वैर भाव से मुक्त रहें हम, निर्धनता से युद्ध करें ।।१७।।

'भास्कर' वत् हम सब धर्मों को समभावी आदर देंवें।
कलह विवाद न हो आपस में, नहीं किसी से द्वेश करें ।।
सब मिलकर सुख-दुःख भी बाँटे, आपस में सम्मान करें ।
राष्ट्रचेतना भावचेतना से सिंचित हो कर्म करें ।।१८।।

४. भक्तामर स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

जिनके चरणों में देवों के मुकुटमणी भासित होते ।
पाप विनाशक भव -जल -तारक, आदियुगहिं द्योतक पुजते ।।
द्वादशांगवाणी से बोधित, इन्द्रों ने जिन को ध्याया ।
चितहारी उन आदिदेव को, प्रणमत थुति करने आया ।।१-२।।

जल-प्रतिबिम्बित शशि को जैसे, बालक हस्त -ग्रहण करता ।
निर्लज्जित मति-हीन तथा मैं, भी तब प्रभु थुति करता ।।३।।

सुरगुरु सम भी कौन तुम्हारे, चन्द्रकान्त-गुण कह सकता ।
प्रलयकाल-वायु से उद्धत, पार कौन सागर करता ।।४।।

शावकमोही मृग मृगेन्द्र से, जैसे साहस से भिड़ता ।
हूं असमर्थ भक्ति वश मैं भी, विगतशक्ति ही थुति करता ।।५।।

जैसे वसन्त में आम्रमंजरी, कोयल को मुखरित करती ।
मेरी अल्पबुद्धि भी तेरी, संस्तुति में प्रेरित होती ।।६।।

जैसे दिनकर भ्रमर-तमस-सी, सघन रात्रि विगलित करता ।
तेरी संस्तुति भी वैसे ही, पापों को क्षण में हरता ।।७।।

नलिनीदल पर मुक्ताफल-सी ,जल बूंदे सुन्दर होतीं ।
अल्पबुद्धि मेरी संस्तुति भी, सज्जन चित को हर लेती ।।८।।

तेरी स्तुति क्या स्मृति भी, जग-पापों को धुन देती ।
सूर्य भले ही दूर रहे पर, किरण कमल विकसित करती ।।९।।

नहीं कोई आश्चर्य यदि तुम, भक्तों को निजवत् करते ।
अर्थ नहीं उस स्वामी का जो, आश्रित को नहिं अपनाते ।।१०।।

अनिमेष तुम्हारी सुन्दर मूरत, देखत तोष कहां होगा ।
क्षीर-सिन्धु का जल मिलने पर, और कहां मन जायेगा ।।११।।

वीतराग अणुओं से तेरी, अनुपम काया सृजित हुई ।
भूतल पर वे और नहीं थे, तव सम कोई रूप नहीं ।।१२।।

कहां नेत्रहारी अनुपम-सा, निष्कलंक तेरा आनन ।
कहां कलंक मलीन चन्द्र का, तेजहीन -सा प्रतिबिम्बन ।।१३।।

पूर्ण चन्द्र की स्वच्छ कलावत्, तेरे गुण त्रिभुवन फैलें ।
कौन रोक पायेगा उनको, जब तेरे आश्रित होंवें ।।१४।।

अचरज क्यों यदि तेरे मन को, कोई नहीं डिगा पाया ।
मेरु शिखर को प्रलय पवन क्या, रंचहि मात्र हिला पाया ।।१५।।

निर्धूम वर्ति निस्नेह दीप तुम, नित त्रिलोक भासित करते ।
अचल-चलित मरुत् अगम्य हो, तुम अपूर्व दीप दिखते ।।१६।।

अस्त न होता, राहु न ग्रसता, सदा प्रकाशित जग करता ।
सूर्याधिक तव तेज मेघ से, रुका न तेजस्वी होता ।।१७।।

तेरा वदन अपूर्व चन्द्र है, मोहतमस नाशा करता ।
राहु - मेघ से गम्य नहीं है, उदित नित्य द्युति फैलाता ।।१८।।

तव मुखेन्दु से तमस भागता, सूर्य चन्द्र का अर्थ नहीं ।
धान्य खेत पकने पर जग में, जलधर का फिर अर्थ नहीं ।।१९।।

निर्मल विशुद्ध जो ज्ञान तुम्हारा, हरि-हरादि में नहिं दिखता ।
तेज निहित जो मणियों में है, काचशकल में नहिं होता ।।२०।।

हरि-हरादि अच्छे हैं क्योंकि, देख त्वयि मन तुष्ट हुआ ।
तेरे दर्शन का फल इतना, कोई न मन को हर पाया ।।२१।।

माताएं शत्पुत्र जनमतीं, तुम-सा पुत्र न जन पायीं ।
प्राची से ही सूर्य निकलता, किरणें सभी दिशा फैलीं ।।२२।।

परम पुरुष मुनि तुमको कहते, निर्मल तमस-हीन रवि-सा ।
मृत्यु जीतते वे तुमको पा, और न पथ कोई शिव का ।।२३।।

अचिन्त्य ब्रह्म अव्यय असंख विभु, तुम अनन्त हो आदीश्वर ।
नेक एक हो ज्ञानस्वरूपी, अमल अरूपी योगीश्वर ।।२४।।

तुम्हीं बुद्ध जग विवुधार्चित हो, तुम ही शंकर शंकर हो ।
तुम ही धाता मोक्ष प्रदाता, पुरुषोत्तम हो, भगवन् हो ।।२५।।

तुम्हें नमन त्रिभुवन दुःखहारी ! क्षितितल निर्मल तुम्हें नमन ।
जगपरमेश्वर! तुम्हेंनमन हो, भव -जल -शोषक! तुम्हेंनमन।।२६।।

नहीं कोई आश्चर्य यदि सब, गुण तुम में संश्रित होते ।
अहंकार गर्वित दुर्गुण भी, तुम्हें स्वप्न में नहिं पाते ।।२७।।

ऊंचे तरु अशोक के नीचे, अमल रूप तव आभासित ।
लगता सघन मेघ के नीचे, सूर्य -बिम्ब हो उल्लासित ।।२८।।

मणि मयूख सिंहासन पर, कनकावदात तव वपु शोभित ।
उदयाचल के तुंग शिखर पर, सहस्ररश्मि-सा आभासित ।।२९।।

कुन्द पुष्प सम निर्मल चामर, से शोभित स्वर्णिम काया ।
चन्द्रबिम्ब निर्झर जलधारा, से सुमेरु तट-सा भाया ।।३०।।

मुक्ताफल के शोभाधारक, सूर्यताप के आरोधक ।
तीन छत्र शोभित शशिधर-से, लोकेश्वर के प्रख्यापक ।।३१।।

गम्भीर नाद से पूरित दिग्जग, अमर विजय घोषित करती ।
शुभ संपत् त्रिभुवन की देती , दुन्दुभि तव यश फैलाती ।।३२।।

शुभ गन्धोदक मन्द हवा से, दिव्य पुष्प -वर्षा होती ।
तव वचपंक्ति गगन से गिरती, लगती जगत सृष्टि होती ।।३३।।

लोकत्रय की कान्ति जीतता, सूर्यप्रखर-सा भामण्डल ।
दिनकर-सा संतापक नहिं है, चन्द्रप्रभा सम शीतल कल ।।३४।।

तेरी दिव्यध्वनि से मिलता, स्वर्ग मोक्ष सद्धर्म कथन ।
विशदार्थक है सर्वग्राह्य है, स्वाभाविक परिणाम प्रवण ।।३५।।

पुष्पित स्वर्ण कमल कान्ति से, शोभित नख की किरण विभा ।
ऐसे चरण जहां पडते तव, रचते सुरपति पद्म प्रभा ।।३६।।

धर्मोपदेश सब कालहिं प्रगटा, तव विभूति अन्यत्र नहीं ।
तमस-विनाशी दिनकर आभा, अन्य ग्रहों में नहीं कहीं ।।३७।।

मदजल मलिन भ्रमित भौंरों के, शब्दों से उन्मत्त हुए ।
ऐरावत से भी नहिं डरते, भवदाश्रित जो भक्त हुए ।।३८।।

भिन्नेभ कुम्भ से गिरते उज्ज्वल, मणिशोणित से भू भूशित ।
आक्रामक जो हरिणाधिप भी, नहीं मारते चरणाश्रित ।।३९।।

प्रलय काल की प्रचण्ड अग्नि सम, दावानल के अंगारे ।
जगभक्षण -सी करती सम्मुख, नाम लेत तब बुझ जाते ।।४०।।

क्रोधोद्धत उत्फणी सर्प जो, कोकिल कण्ठ नील होता ।
तेरी नाम-नागदमनी से, वह भी लांछित हो जाता ।।४१।।

युद्ध क्षेत्र में भूपतियों की, सबल सैन्य भी यदि रहती ।
वह भी तेरी कीर्ति-किरण से, अन्धकार सम नश जाती ।।४२।।

तेरे पद-पंकज का आश्रय, लेकर युद्ध विजित करते ।
भाल विदीर्ण गजों से निकले, शोणित वेग उतर जाते ।।४३।।

क्षुभित नक्र चक्रों से भीषण, बडवानल प्रशान्त होता ।
चंचल लहरों पर जहाज भी, तव सुमरण से बच जाता ।।४४।।

अधिक जलोदर की पीडा से, जीवन-आशा नश जाती ।
तेरे चरण- कमल रज से प्रभु, मकरध्वज काया मिलती ।।४५।।

आपाद- कण्ठवेष्टित सांकल से, जंघायें जब घिस जातीं ।
तेरे नाम मन्त्र की माला, विगत बन्ध निर्भय करती ।।४६।।

मत्त हस्ति मृगराज दवानल, सर्प युद्ध भय नश जाता ।
आदिनाथ ! तेरी स्तुति से, मतिजन निर्भय हो जाता ।।४७।।

गुणनिबद्ध यह स्तुति-माला, विविध वर्ण है पुष्पों की ।
जो भी कण्ठहिं धरे पायेगा, मानतुंग गुरु की लक्ष्मी ।।४८।।

भागचन्द्र भास्कर भी यह, स्तुतिमाला धारण करता ।
और चाहता तव अनुकम्पा, जो उसके सब दुःख हरता ।।४९।।

५. कल्याण मन्दिर स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

पार्श्वनाथ! तुम हो कल्याणक, तुम उदार कल्मष-हर्ता ।
भवसागर डूबे जीवों को, पोत सदृश निर्भयकर्ता ।
कमठमान -भस्मक ! सुरगुरु भी, तेरी थुति नहिं कर पाते ।
गौरवनिधि अनिंद्य तीर्थेश्वर, विस्मित हम संस्तुति करते।।१-२।।

नहीं कोई मुझ जैसा तेरे, शुद्ध रूप को कह सकता ।
धीठ दिवान्ध उलूक शिशु क्या, सूरज वर्णन कर पाता ।।३।।

मोहक्षयी मर्त्य भी तेरे, गुण अनन्त नहिं गिन सकता ।
क्या कोई कल्पान्त काल में, रत्न राशि भी गिन पाता ।।४।।

असंख्य गुणों की फिर भी तेरे, जडाशयी मैं थुति करता ।
शक्तिहीन शिशु जैसे करयुग फैलाकर सागर कहता ।।५।।

जो योगी तेरे गुण-धन का कथन नहीं कर पाते हैं ।
वे भी असमीक्षित पक्षी वत्, निज वाणी से कहते हैं ।।६।।

नाथ ! तुम्हारी संस्तुति-महिमा, है अचिन्त्य नामस्मृति भी ।
तीव्रताप पीडित पथिकों को, होती सुखद सदानिल भी ।।७।।

जैसे मयूर आते ही चन्दन-तरु भुजंग ढीले पडते ।
वैसे तेरे हृदयहिं रहते, निबिड पाप क्षण नश जाते ।।८।।

तेजस्वी नृप देख यथा पशु, छोड चोर भग जाते हैं ।
तुमको देखत रौद्र उपद्रव, मनुजों के नश जाते हैं ।।९।।

भवजन तारक हे जिनवर तुम, वे नहिं, हृदि धरते ।
अन्तर्गत थित वायु हेतु वश, मसक सलिल तैरण करते ।।१०।।

हरित्यादि भी हतप्रभावी, रतिपति को भी क्षपित किया ।
जो जल अग्नि बुझाता उसको, बडवानल नहिं पी पाता ।।११।।

पा अनल्प गरिमाण आपको, क्यों भवसागर नहिं तरते ।
हिय में रख जन अतिलाघव से, भाव अचिन्त्य महत् रखते ।।१२।।

क्रोध प्रभो! यदि पहले नाशा, कर्मचोर कैसे नाशे ।
नील द्रुम विपिनों को भी तो, यहां तुषार जला देते ।।१३।।

हे जिन ! योगी सदा आपको, हृदयाम्बुज में खोजत हैं ।
निर्मल सरसिज-बीज कहां फिर, छोड कर्णिका पावत हैं ।।१४।।

ध्यान मात्र से देह छोड जन, परम दशा को पा जाते ।
तीव्रानल से उपल भाव को, छोड धातु सोना बनते।।१५।।

जिसमें भव्य तुम्हें ध्याते उस, काया को क्यों विनशाते ।
मध्यविवर्ती महापुरुष वस, विग्रह शान्त किया करते ।।१६।।

तव अभेद मेधा से भव जन, तव विशुद्धि पा जाता है ।
सुधा भाव से अनुमन्त्रित जल, विषविकार को नशता है ।।१७।।

हरि हरादिवत् परवादी भी, तेरी ही पूजा करते ।
काचकामला रोगी शंखहिं, विविध वर्ण देखा करते।।१८।।

तेरे उपदेशों से जन क्या, तरु अशोक हो जाता है ।
सूर्योदित होने पर तरु वत्, लोक प्रबोधित होता है ।।१९।।

नहीं कोई आश्चर्य यदि सुर-पुष्पवृष्टि अधमुख गिरती ।
सुमनसों की कर्म ग्रन्थि भी, तव प्रसाद से नश जाती ।।२०।।

अथाह हृदय सागर उद्भूतित, दिव्यध्वनि अमृत बनती ।
भव्य राशि उसको ही पीकर, तत्क्षण अजर अमर होती ।।२१।।

शुचि सुर चामर कहत जगत को, विनत उच्चपद पाते हैं ।
मुनि पुंगव भी शुद्ध नमन से, सदा ऊर्ध्वगति होते हैं ।।२२।।

श्याम धीरगिरि ! हेमसिंहासनि ! वर मयूर लख नच पडते ।
स्वर्णमेरु शिखरों पर गर्जित, नये मेघ हर्षित होते ।।२३।।

शिति द्युति मण्डल से अशोक तरु, लुप्तच्छद छविवान हुआ
वीतराग ! तेरी सन्निधि से, कौन न जीव विरक्त हुआ ।।२४।।

तज प्रमाद भज मुक्तिपुरी के, सार्थवाह को रे प्राणी ।
गगन बीच जग कहती दिखती, सुर दुन्दुभि तेरी वाणी ।।२५।।

तेरे उद्योदित होते शशि, स्वाधिकार से भ्रष्ट हुआ ।
मुक्ता नित सित छत्र व्याज से, तीन देह धर तब आया ।।२६।।

हे प्रभु ! चारों ओर तुम्हारे, रजत स्वर्ण मणि कोट बने ।
कान्ति ताप यश का संचय ही, जगतीतल पर ज्योति बने ।।२७।।

नमत् इन्द्र के रत्नमुकुट तज, तव पादाश्रित दिव्यस्रज ।
तेरा संगम होते सुमनस, अन्य कहीं कैसे विरमत ।।२८।।

भवसागर से पराङ्मुखी निज-पृष्ठित जन तारा करते ।
पार्थिव ! तुम्हें उचित पर कैसे, कर्म विपाकहीन करते ।।२९।।

विश्वेश्वर पर दुर्गम तुम प्रभु, अक्षर पर लिपिहीन विभो ।
सद्ज्ञानी पर विश्वविकासी, केवलज्ञान विभूषित हो ।।३०।।

क्रोधित दुष्ट कमठ ने नभ में, जो रजशैल उडाया था ।
उस से हत नहिं कान्ति तुम्हारी, वही कर्मरज जकडा था ।।३१।।

गर्जित ऊर्जित महामेघ की, मूसलधार बहायी थी ।
दुस्तर वारिधारकर उसने, निज तलवार चलायी थी ।।३२।।

ध्वस्त ऊर्ध्वकेशी विकृत नर, मूर्ध्व भाल अंगारी था ।
बना उसी को दुःख का कारण, प्रेतव्रज जो भेजा था ।।३३।।

धन्य वही भक्ति वश जो तव, पदवन्दन तिकाल करते ।
रोमांचित पुलकित काया से, विधिवत् आराधन करते ।।३४।।

अपार नाथ ! उस भव सागर में,कभी न तेरा नाम सुना ।
तेरे गोत्र मन्त्र के सुनते, विपत्सर्प क्या आ पाता ।।३५।।

जन्मान्तर सुखदायी तेरे, चरणयुगल नहिं पूजे हैं ।
इसीलिए तो उस भव मैंने, और पराभव पाये हैं ।।३६।।

निश्चित मैने मोहतिमिर वश, पहले तुमको नहिं देखा ।
नहीं अन्यथा मर्माविध यह, कर्म अनर्थ नहीं करता ।।३७।।

आकर्णित तुम महित निरीक्षित, फिर भी मैं दुःख पात्र विफल।
तुम्हें भक्ति से चित नहिं धारा, भावहिं शून्य क्रिया निष्फल ।।३८।।

तुम ही नाथ दुःखी जन वत्सल, शरणवशी करुणा धारो ।
भक्ति विनत मुझ पर करुणा कर, दुःखांकुर का दलन करो ।।३९।।

त्रिभुवन पालक शरणारक्षक, कर्म-विनाशक चरण मिले ।
फिर भी ध्यान न कर पाया हूं, हत निष्फल हा ! कर्म मिले ।।४०।।

हे सर्वज्ञ सुराधिप-पूजित, जगतारक त्रिभुवन स्वामी ।
करुणा-हृद ! मेरी रक्षा कर, भव-दुःख नाशो पूत धनी ।।४१।।

तेरी चरण भक्ति से संचित, यदि मुझ को फल मिल पाये ।
चाह यही वस तुम्हीं नाथ हो, हर भव में तुमको ध्याये ।।४२।।

हे जिनेन्द्र ! जो भविजन तेरा, निर्मल बिम्ब ध्यान करते ।
सघन भक्ति से स्तुति विधिवत्, कर वे भव-दुःख से तरते ।।४३।।

स्वर्ग संपदायें पाते वे, पुलकित हो हे भवतारक ।
विगलित मल हो जाते वे सब, कुमुदचन्द्र हे जननायक ।।४४।।

आज तुम्हारे पदपंकज में ''भागचन्द्र'' भी शरणागत ।
हे प्रभु ! तारो भवदु;ख हारो, और न कोई मेरा मत ।।४५।।

६. एकीभाव स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

एकीभाव प्राप्त मम आतम, सह वत् कर्मबन्ध नशते ।
स्वयं घोर दुःखदायी भव-भव, घूमत दुर्निवार करते ।।
अपार दुःख से तेरी भक्ति, यदि उन्मुक्त सदा करती ।
फिर वह कौन दुःख जो जिनरवि ! दूर न तव भक्ति करती ।।१।।

तत्वज्ञान प्रपूरित गणधर, दुरितनिवाहक कहते हैं ।
तम-विध्वंसी ज्योति रूप मम, नाथ ! आप हृदि बसते हैं ।।
हे जिनवर ! तेरे प्रकाश से, मम मिथ्यात्व तमस भागे ।
कैसे मुझ में वह रह सकता, तूं है चित, मेरा जागे ।।२।।

आनन्दित आंसू से जिसने, गदगद हो मुख प्रक्षाला ।
दृढ मन हो स्तुति-मन्त्रों से, स्वयं आपको चित धारा ।।
चिर परिचित उस देह-वामि से, विषम व्याधि मणिधर भगते ।
बडे पुरातन दुःखदायी भी, कष्ट स्वयं ही नश जाते ।।३।।

भव्य-पुण्य से स्वर्ग लोक से, देव ! यहां जब तुम आये ।
पहले ही इस भूमण्डल को, कनकमयी जिन ! करवाये ।।
रुचिकर मेरे स्वान्तगेह में, तूं जब बैठ गया है ।
नहीं कोई आश्चर्य यदि वह, स्वर्णमयी बन जाता है ।।४।।

बिना स्वार्थ के नाथ ! आप, जगबन्धु एक तो हैं ही ।
सकलार्थक यह कर्म शक्ति भी, निर्बाधक तव है ही ।।
भक्ति स्फीता मनशैय्या पर, तब जब आप विराजत हैं ।
आप नाथ ! मेरे दुःखों को, कैसे अब सह सकते हैं ।।५।।

संसार विषम अटवी में घूमा, काल अनन्त विताया है ।
दुर्लभ स्याद्वादमय तेरी, सुधा-वापिका पाया है ।।
चन्द्र और हिम-सी वह शीतल, उसके बीच डूब बैठा ।
मेरे दुःख दावानल को अब, क्यों तूं नष्ट नहीं करता ।।६।।

हे जिनेन्द्र ! तव पाद-न्यास से, सारा जग पावन बनता ।
कमल स्वर्ण-सी कान्ति सुगन्धित, श्री-निवास भी बन जाता ।।
मेरा मन सर्वांग रूप से, तव स्पर्श किया करता ।
कौन नहीं कल्याण शेष जो, प्रतिदिन स्वयं न मिल जाता ।।७।।

कर्मानन से अनुपम सुख में, नाथ ! प्रविष्ट हुए हो ।
दुर्जय कामदेव के मद को, हरण किये बैठे हो ।।
भक्ति पात्र से वचनामृत का, जिनने पान किया है ।
तव प्रसाद से क्रूर रोग क्या, पीडक कभी हुआ है ।।८।।

मानथंभ पाषाणरूप यदि, तो विशेष उसमें क्या है ।
अन्य रत्नवत् रत्नमूर्ति भी, वैसी ही है, फिर क्या है।।
शक्ति हेतु भवदीय निकटता, उसको जो मिल जाती है ।
मान रोग नश जाता जन का, नयी शक्ति मिल जाती है ।।९।।

देव ! तुम्हारे मूर्ति-शैल से, सौम्य पवन जो बहती है ।
वह भी सकल रोग-रज जग के, त्वरित दूर कर देती है ।।
ध्यानाहूत आप तब जिसके, हृदय-कमल में बैठे हैं ।
कौन लोक उपकार जगत में, जिसे न वे कर पाये हैं ।।१०।।

भव-भव में हे नाथ ! मुझे जिन दुःखों ने अति पेरा है ।
शस्त्र रूप दुःखदायी उनकी, स्मृति ने भी घेरा है ।।
तुम तो यह सब जानत ही हो, कृपया उनको दूर करो ।
भाव भक्ति से शरणागत हूं, अतः प्रमाण तुम्हीं अब हो ।।११।।

जीवन्धर ने मरण समय, कुक्कुर को तेरा मन्त्र दिया ।
वह भी मरकर स्वर्ग लोक की, सुख संपत् को प्राप्त हुआ ।।
निर्मल मणियों से तेरा जप, करता जन यदि पा जाये ।
इन्द्र सम्पदा अखिल जगत की, इसमें क्या संशय होवे ।।१२।।

शुद्ध ज्ञान शुचि चरण भले हों, सान्द्र भक्ति यदि नहिं तेरी ।
वह तो निरवधि सुख की कुंजी, मिलती जग संपत् सारी ।।
महामोह के दृढ कपाट को, शिवकांक्षी कैसे खोले ।
तब भक्ति बिन सम्यग्दर्शन, कैसे उसको मिल पाये ।।१३।।

निश्चित देव ! मुक्ति पथ यह तो, पाप-तमस चहुं आच्छादित।
और दुःख-गर्तों से वह तो, दुष्प्रवेश है रूपायित ।।
कोई तत्त्वज्ञानी वह तव, वाणी-रत्न द्वीप लेता ।
आगे-आगे नहिं बढ़ता तो, तत्पथ सहज कौन चलता ।।१४।।

आत्मज्योति-निधि कर्मपटल से, आच्छादित तो दिखती है ।
मिथ्यादृष्टि न उसको पाते, ज्ञानी नन्दित होते हैं ।।
भवद्-भक्ति को करने वाला, सभी संपदा को पाता ।
कर्म कठोर भूमि खोदन को, भक्ति-कुदाल ग्रहण करता ।।१५।।

स्याद्वाद नय-हिम पर्वत से, निकली मोक्ष उदधि जाती ।
तेरी चरण-कमल-भक्ति से, गंगा पूत हुई लगती ।।
रुचिवश उसमें डूबे मेरे, मन की धूलि क्षलित होती ।
राग-द्वेष से विगलित हो यदि, क्यों सन्देह-भूमि होती ।।१६।।

निश्छल सुखी विरागदेव हे !, बार-बार तुमको ध्याऊँ ।
मैं वह हूं जो आप विराजत , निर्विकल्प बुद्धि भाऊं ।।
यद्यपि यह असत्य बुद्धि है, तो भी निश्चल सुख मिलता ।
तव प्रसाद से दोषी जन भी, इच्छित फल निश्चित पाता ।।१७।।

मिथ्यावाद रूप मल को जो , धोकर स्वच्छ बनाता है ।
सप्तभंगियों की लहरों से, वचन-जलधि तव दिखता है ।।
विबुध शीघ्र तदावृत्ति से, अमृत अचल सुखी होते ।
अखिल भुवन भी उसको पाकर, चिर सन्तोषी बन जाते ।।१८।।

वही अलंकृत होता रहता, जो स्वभावतः विकृत रूप ।
शस्त्रों को भी वही धारता, जो शत्रु से विजित स्वरूप ।।
हो सर्वांग सुभग नाथ ! तुम, भूषण पुष्प न वस्त्र तुम्हें ।
तीक्ष्ण धार हथियारों से भी, होगा क्यों यह प्रेम तुम्हें ।।१९।।

तव सेवा यदि सुरपति करता, वह क्या तेरी आशंसा ।
भवलयकारी यह सेवा तो, विस्मृत उसकी ही शंसा ।।
तुम तो भव-सागर निस्तारी, सिद्धि-स्त्रीपति लोकप्रभो ।
यह स्तोत्र प्रशंसा तेरी, प्रभुता तेरी जगत विभो ।।२०।।

वचन-जाल मम अल्पज्ञों-सा, तुम तो प्रभु पा अनुपम हो ।
स्तुत्युद्गार हमारे कैसे, तुम तक पहुंचे, गुरुतम हो ।।
यदि नहिं पहुंचें तो भी भक्ति-सुधा से पुष्ट वचन होंगे ।
अभिमत फल देने भव्यों को, कल्पवृक्ष बन जायेंगे ।।२१।।

नहीं किसी पर कोप तुम्हारा, नहीं प्रसाद कहीं दिखता ।
निष्चित तेरा मन निरपेक्षी, परम उपेक्षा-भर रहता ।।
फिर भी तेरी आज्ञावश जग, तव सन्निधि ही चाहत है ।
भुवनतिलक ! ऐसा प्रभाव नहिं, हरि-हरादि में दिखता है ।।२२।।

देव-देवियों से कीर्तित तुम, सब पदार्थ के ज्ञाता हो ।
तेरी स्तुति जो भी करता, सबको मंगलकारी हो ।।
तेरे पथ पर जो चलते हैं, कर्मबन्ध उसके कटते ।
तत्त्वग्रन्थ स्मरण विषय में, मूर्छित नहीं कभी होते ।।२३।।

अनन्त चतुष्टय के धारी जिन !, जो तुमको चित धरता है ।
जो त्रिकाल में आदर पूर्वक, तेरी स्तुति करता है ।।
स्तवन मात्र से पुण्यप्रतापी, मोक्षमार्ग वह पाता है ।
पंच प्रकारक कल्याणक का, विनत पात्र बन जाता है ।।२४।।

सुरपति-पूजित चरण महेश्वर ! कोई न कीर्तन कर पाया ।
सूक्ष्मज्ञानी संयमधारी, समर्थ न कोई हो पाया ।।
हम सा कोई मन्द बुद्धि फिर, थुति-छल से आदर करता ।
वह आदर ही आत्मसुखी को, क्षेमक कल्पवृक्ष होता ।।२५।।

कैसा मोही यह संसारी, वीतराग को नहिं पूजत ।
पूजत उसको जो हिंसक है, कीचड़ से क्या पैर धुलत ।।
वादिराज की हृदयाकर्षक, इस थुति को जो भी ध्याये ।
"भागचन्द्र" जैसा मतिहीना, अजर अमर पद वह पावे ।।२६।।

७. विषापहार स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

स्वात्मस्थित हो सर्वगती हो, स्वज्ञ और निस्संगी हो ।
दीर्घायुष हो, अजर श्रेष्ठ हो, पुरापुरुष ! मम रक्ष करो ।।१।।

मुनि समर्थ नहिं स्तुति करने, हो अचिन्त्य युगभारी हो ।
वृषभ ! आज तव स्तुति करता, भानु न, दीप प्रवेशी हो ।।२।।

छोडा स्तुति-दर्प इन्द्र ने, मैं उद्योग न छोडूंगा ।
वातायन वत्, स्वल्प बोध से, अधिकार्थक पद बोलूंगा ।।३।।

सबदर्शी फिर भी अदृश्य हो, सब अवेद्य सब ज्ञाता हो ।
शक्ति न मेरी, तव स्तुति ही, कथ्य नहीं, तुम कैसे हो ।।४।।

आत्म-दोष-पीडित बालकवत्, तुमने जग नीरोग किया ।
नहीं विवेकहिता-हित सबको, बाल-वैद्य हो, स्वस्थ किया ।।५।।

अच्युत ! अशक्त यह सूर्य न देता-लेता आज-काल करता।
आशा देता काल गमाता, पर तूं नत को सब देता ।।६।।

सुमुख भक्त तव सुख पाता है, विमुख भावतः दुःखी दिखा ।
पर तुम दर्पणवत् उज्ज्वल हो, तुमने दोनों एक लखा ।।७।।

गहराई सागर की, गिरि की, ऊंचाई भी वहीं रही ।
गगन और पृथ्वी की पृथुता, तीनों तेरी त्रिजग रही ।।८।।

अनवस्था को परम तत्त्व कह, पुनरागमन न स्वीकारा ।
दृष्ट छोड अदृष्ट ही चाहा, विरुद्धवृत्त भी सुलझाया ।।९।।

नाथ ! काम को तुमने भस्मा, शिव कलंक से नहीं बचा ।
साथ विष्णु भी वृन्दा सोया, तुम्हीं जगे, क्या उसे मिला ।।१०।।

चाहे नीरज या पापी वे, दोषकथन नहिं तव गुणिता ।
महिमा स्वतः अम्बुराशि की, सरोवरादि से नहिं लघुता ।।११।।

कर्मस्थिति को जीव और वह, भी उसको सब गति करता ।
तूं नौ-नाविकवत् उनमें, भव-सागर नेतृभाव करता ।।१२।।

सुख हेतु दुःखों, गुण हेतु दोष को, धर्म हेतु पापाचरते ।
तव प्रतिकूली मूढ बालवत्, तेल काढते हैं रज से ।।१३।।

विषनाषक मणि औषधि मन्त्रों, और रसायन खोजत हैं ।
अहो ! तुम्हें स्मरण न करते, नामान्तर ही होते हैं ।।१४।।

नहीं चित्त में कुछ भी तेरे, तुझे चित्तधर सब पाया ।
सकल जगत जाना निजकरवत्, चित्तबाह्य भी सुख धारा ।।१५।।

तुम त्रिकालज्ञाता त्रिलोक-पति, यह संख्या तो यहीं रही ।
तेरा ज्ञान असीमित पर यदि, और वस्तु होतीं झलकीं ।।१६।।

इन्द्र तुम्हारी सेवा करता, तव उपकार, न उसका है ।
आतपहारी छत्र न सूरज, सुख तो उसी पथिक का है ।।१७।।

वीतरागता सुखोपदेषिता, विपरीतेच्छा वाद कहां ।
सकल जगत्प्रियता भी कैसी, तथ्य पदार्थ विवेक कहां ।।१८।।

उदारचित्त धनहीन जो देता, वह धनाढ्य नहिं दे पाता ।
पर्वत से तो नदी निकलती, सागर नदी न दे पाता ।।१९।।

तीन लोक सेवा व्रत पालन, दण्ड इन्द्र ने ग्रहण किया ।
प्रातिहार्य नहिं तेरा, उसका, हो तो कर्मयोग तेरा ।।२०।।

निर्धन कहता भला धनिक को, उसे न तुम बिन कोई भला ।
तमस खडा जन उजियाले में, थित को देखत, नहीं तुा ।।२१।।

निज निश्वास निमेष मात्र भज, मूढ न निज अनुभव करता ।
अखिल ज्ञेय ज्ञायक स्वरूप तुम, नहिं जग तुम्हें जान पाता ।।२२।।

उसके पिता पुत्र हो तुम हे नाथ ! जो कुल को बतलाते ।
वे यथार्थ में स्वर्ण प्राप्तकर, उपल-उपज कह तज देते ।।२३।।

लोक-विजय के मोह-पटह से, सुरासुरादि अभिभूत हुए ।
लोभ मोह को, तव विरोध भ्रम, बलवद्विरोध से जड टूटे ।।२४।।

तुमने देखा मुक्ति मार्ग को, पर ने चतुगति वन देखा ।
मैंने सब देखा उस मद से, कभी न भुज तेरा फैला ।।२५।।

सूर्य राहु को, अग्नि सलिल को, प्रलय पवन सागर नाशे ।
विरह भाव संसार भोग को, तुम ने ही क्षण में नाशे ।।२६।।

तुम्हें जान बिन नमन जो देता, अन्य देव जानत नहिं देत ।

काच बुद्धि से मणि धारक जन, मणि मणि गह से रिक्त न होत ।।२७।।

चतुर मधुरभाषी कषाय से, दग्ध हुए को कहते देव ।
बुझे दीप को बढा दीप कह, फूटे घट को मंगल सेव ।।२८।।

नानार्थक हितकारी तुमको, कौन आप्त नहिं मानेगा ।
ज्वर से मुक्त पुरुष के स्वर को, कौन नहीं पहचानेगा ।।२९।।

निरीच्छ तुम्हारी वचन प्रवृत्ति, नहीं कहीं वह नियम बना ।
शीतल चन्द्र उदधि को पूरा, करने कभी न उदित हुआ ।।३०।।

तेरे गुण गंभीर परम हैं, उज्ज्वल बहुविध बहुधारी ।
दिखते वे ही अन्त स्तुति में, थुति सिवाय गुण अन्त नहीं ।।३१।।

नहीं मात्र स्तुति से वांछित, स्मृति, प्रणति, भक्ति फलती ।
देव ! सदा मैं करता भक्ति, कोई भक्ति फला करती ।।३२।।

हे त्रिलोकपति परमज्योति, पर पुण्य हेतु ही शक्ति प्रखर ।
अवन्दितार तुम नित्य वन्द्य हो, करता हूं तव भक्ति प्रखर ।।३३।।

अरूप-गन्ध, अस्पर्श अशब्दी, नीरस तद्विषयज्ञ प्रभो ।
सर्वज्ञ अमेय जिनेश्वर हो, अनुस्मरण हूं करत विभो ।।३४।।

अगाध और मनसा अलंघ्य तुम, निर्धन धनियों से प्रार्थित ।
विश्व पार अदृष्ट पार हो, आया तेरी शरण पतित ।।३५।।

हे त्रिलोकगुरु ! तुम्हें नमन जो, वर्धभान भी निज-उन्नत ।
प्रथमशैल फिर अद्रिकल्प बन, मेरु नहीं क्या कुलपर्वत ।।३६।।

स्वयं प्रकाशक दिवानिशावत्, नहीं बाध्य-बाधक हो तुम ।
नहिं लाघव नहिं गौरव बन्दूं, कला अतीत एक हो तुम ।।३७।।

यह स्तुति कर दैन्य भाव से, वीतराग नहिं कुछ मांगत ।
छायातरु का जो आश्रय ले, छाया मिलती स्वतः च्वर ।।३८।।

आग्रह इच्छा देने की दो, लीन रहूं तव भक्ति में ।
दया करोगे देव भक्त पर, गुरु न प्रेम उपवासी में ।।३९।।

हे जिनेन्द्र ! हर भक्ति विनत को, वांछित फल दायक होती ।
तुम में मेरी स्तुति-भक्ति, सुख, यश धन, जय सब देती ।।४०।।
"भागचन्द्र" भी विनत भाव से, धनंजयी भक्ति करता ।
पथ हो एक, पथिक नेक हों, फल समान निश्चित होता ।।४१।।

८. जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

अभीष्ट वस्तु को देने वाला, कल्पवृक्ष-पद कान्ति समान ।
जिन-पद दर्शन प्रात सुहाता, पाता लक्ष्मी लीला धाम ।।
होता वह पृथ्वी का कुलगृह, कीर्ति हर्ष का पुण्यस्थल ।
सरस्वती का रतिकेतन भी, विजय रमा का क्रीडास्थल ।।१।।

देव आपका देह शान्त है, वचन कर्णप्रिय है मनहर ।
नाथ चरित्र लोक उपकारी, का है सदन प्रवर ।।
संसारी मरुथल पथिकों को, छायावृक्ष तुम्ही दिखते ।
श्रुत ज्ञाता गण तुमको पाकर, हर्षित, दुःख विस्मृत होते ।।२।।

जीव त्रिजग के नेत्र कुमुद हो, विकसित करने चन्द्र प्ररूप ।
सुधा-प्रवाही कान्ति-चांदनी, अक्षय पद आनन्द स्वरूप ।।
अतः आज मैं तव दर्शन कर, मातृकूप से निकला हूं ।
हुई दृष्टि उद्घाटित मेरी, सफल जन्म हो पाया हूं ।।३।।

सकल सहस्राक्षी मुकुटों के, अग्रभाग के सघन रतन ।
सिंहासन पर लगे हुए वे, दिखते मणिमय दीप गगन ।।
उसकी शोभा कहां और तव, निस्पृहता यह कहां प्रभो ।
तर्क अगोचर चरित्र महिमा, लोकोत्तर सर्वत्र प्रभो ।।४।।

तृणवत् छोडा शासन जिनवर ! इन्द्र चरण युग विनत खडा ।
त्रिभुवन-विजयी मोहमल्ल को, तुमने सहसा विजित किया ।।
ज्ञान रूप दर्पण में तुमने लोकालोक विषय देखे ।
तुम्हें छोड अन्यत्र कहां यह, विस्मय संभव, जग सोचे ।।५।।

श्रद्धालू हो एकबार भी, दर्शन प्रभु यदि किया कभी ।
ज्ञानधनी सद्वृत्ती को तब, नेक दान ही दिया सुधी ।।
तीव्र तपस्या पूजा संचित, सदा तुम्हारी मैंने की ।
अमल गुणों के साथ प्रतिज्ञा, शीलव्रत की धारण की ।।६।।

त्रिभुवन चूडामणि जिन ! हो मणि, भवसर्पों के विषहारी ।
कर्णहृदय में मन-मन्दिर में, गुण तेरे धर तुष्ट सुखी ।।
प्रज्ञापारमिता हो निश्चित, श्रुत-समुद्र को पार किया ।
गुणरत्नों का भूषण बन वह , सर्वप्रशंसा पात्र हुआ ।।७।।

देव समूहों से संचालित, चन्द्र किरण सम कान्ति जहां ।
रंजित मुक्ति पुरी तरुणीश्री, का कटाक्ष संचरण वहां ।।
सुरपति ऐसे धवल चमर ले, पूजा जिन ! तेरी करते ।
हो जयवन्त, जगत श्रेष्ठ हो, श्रद्धा से सब नत होते ।।८।।

छत्र त्रय, चामर, दिव्यध्वनि, तरु अशोक भी भामण्डल ।
पुष्पवृष्टि होती हो जिसके, देव दुन्दुभी सिंहासन ।।
प्रातिहार्य से शोभित सुरजन, के विकास में सूर्य प्रखर ।
भूपति-मुकुट बने पीठासन, कर रक्षा सब की जिनवर ।।९।।

कल्याणक-पूजा में आया, देव-देवियों का जमघट ।
ऐरावत दन्तों पर नर्तित, त्रिभुवन यात्रा हुई सुखद ।।
वाद्य-गीत-ध्वनि से संहर्षित, पुष्पदाम से शोभित कर ।
ऐसा देवागम जिसके हो, जय हो उसकी हे गुरुवर ।।१०।।

तव नेत्रों से अमृत झरता, हर्ष तेज उद्भासित मुख ।
दृश्य वस्तुओं की सीमा को, तोड रहा मम चक्षु युगल ।।
जिनवर ! तेरे दर्शन से मैं, स्वयं कृतार्थ हुआ भारी ।
लगता आज जगत में मैं ही, चक्षुष्मान् हुआ भारी ।।११।।

हे जिनेन्द्र ! यह अज्ञ जगत क्यों, अब भी सोचा करता है ।
ब्रह्मा विष्णु महादेव ने, कामदेव को जीता है ।।
सत्य तथ्य नहिं इसमें वे तो, कान्ता रमण किया करते ।
काममल्ल तो तुमने जीता, कामिनि-कटाक्ष व्यर्थ होते ।।१२।।

तेरे दर्शन की इच्छा से, पुण्य वृक्ष पल्लवित हुआ ।
पास पहुंचते ही वह जैसे, लगा शीघ्र किसलयित हुआ ।।
तव मुख-शशि दर्शन से जिनवर !, मन मेरा तो अब पुलकित।
गया व्यर्थ अब तक का जीवन, पुण्य वृद्धि भव जन्म फलित ।।१३।।

दर्पित कामदेव ने जग में, मद दावानल फैलाया ।
सदुपदेश जलवृष्टी करके, तुमने उसे प्रशान्त किया ।।
नाच उठा सुरपति मयूर भी, बन्धु मेघ को देखत ही ।
वह जयवन्त, श्रेष्ठ हो तुम ही, हर्षित हूं पा तुमको ही ।।१४।।

देव-मनुज के नेत्र भ्रमर की, क्रीडा को तुम लीलाधाम ।
अखिल जगत के कुमुद वर्ग को, लगता तूं ही चन्द्र समान ।।
तीन प्रदक्षिणा ने मन्दिर की, मम अंजलिपुट फैलाया ।
भवच्चरण छाया ने मुझको, भव तापों से मुक्त किया ।।१५।।

दर्पण-सा नखमण्डल तेरा, निसर्ग कान्ति से आशंसित ।
भक्तों ने अपना मुख देखा, मन अत्यन्त हुआ हर्षित ।।
श्री यश कीर्ति धैर्य गुण कारण, तुम हो शुभ मंगल दाता ।
कौन न उनको पा पायेगा, दर्शन तेरा सुख दाता ।।१६।।

सुर भूपति के लिए लक्ष्मी, अमृत निर्झर को पर्वत ।
अतिशय फलित धर्मतरु ऊपर, किसलय अग्रभाग शोभित ।।
उस पर लगी पताका श्रीगृह, ऐसा चैत्यालय अभिराम ।
जग में श्रेष्ठ नाथ जयवन्ता, मैं करता हूं विनत प्रणाम ।।१७।।

जिनके नख-शशि में प्रतिबिम्बित, सुर कान्ता के कुन्तल केश।
दश दिशि फैली उसकी द्युति है, चरण पूजते सभी नरेश ।।
कर्मशत्रु को जिसने जीता, मोह-तिमिर का नाश किया ।
वे जिनेन्द्र जयवन्त श्रेष्ठ हैं, भक्ति भाव से नमन किया ।।१८।।

मंगल प्राप्ति निमित्त कोई यदि, प्रातः सोकर उठते ही ।
मंगल वस्तु देखना चाहे, खोजत कोई अन्य नहीं ।।
तुम त्रिलोक के मंगल गृह हो, तेरा मुख ही मंगल है ।
मंगल सर्वोत्तम तूं सब को, तूं ही मंगल मंगल है ।।१९।।

धर्मोदय रूपी उपवन के, शुक जैसे तुम लगते हो ।
काव्य बन्ध की क्रम कीडा में, नन्दन कोकिल दिखते हो ।।
पुन्नाग कथा के सरसिज सरसी, हंस प्रवर हो नाथ तुम्हीं ।
गुण मणिमाला से उपलक्षित, मुकुट-प्रभा धारक तुम ही ।।२०।।

कितने ही जन चाहत शिवसुख, देवलक्ष्मी का संगम ।
पर वे दुःख पाशों से खुद को, बांधत, देख नहिं जंगम ।।
हम तो सदा यहां हे भूपति !, तव उपदेश गुना करते ।
अनायास ही मुक्ति स्वर्ग को, प्राप्त सुखी सब जन होते ।।२१।।

इन्द्रों ने अभिषेक किया तव, किया देवियों ने शुभ पाठ ।
गन्धर्वों ने शरद-चन्द्र सम, गाया उज्ज्वल तव यश गाथ ।।
शेष अखिल उन देवों ने भी, सेवा की अपने अनुसार ।
हमको अब क्या शेष बचा मन, चंचल होता बारम्बार ।।२२।।

जन्माभिषेक के समय इन्द्र ने , जिस नर्तन की रचना की ।
रोमांच-कंचुकों को धारण कर, नृत्य प्रक्रिया पूरी की ।।
सुर-सुन्दरियों के कुच तट से, वीणा की झंकार हुई ।
वर्णन कौन उसे कर सकता, अहो देव ! मति मुग्ध हुई ।।२३।।

अम्बुज-दल सम नयन आपके, तट प्रतिबिम्ब देखते हैं ।
नेत्र हमारे उनको लखकर, अचरज से भर जाते हैं ।।
महदानन्द यहां इतना, कल्याण काल कितना होगा ।
अनिमेष नयन प्रत्यक्ष देख, नन्दन सुर को कितना होगा ।।२४।।

जिन मन्दिर को देखा मैंने, धाम रसायन का देखा ।
निधियों का पद देख लिया है, सिद्धौषधि का घट देखा ।।
देख निकेतन चिन्तामणि का, सोचा इन से है क्या साध ?।
देखा आज मुक्ति-परिणय का, मंगलगृह, आनन्द अगाध ।।२५।।

हे जिनराज ! किये तव दर्शन, भूपति-नेत्र कमल फूले ।
आनन्दित विद्वच्चकोर है, स्तुति-जल अभिषेक किये ।।
आज निदाघज क्लेश दूर हो, गहन शान्ति मैंने पायी ।
चित्त आप में लगा हुआ है, तव दर्शन है स्थायी ।।२६।।

भूपाल प्रणीत चतुर्विंशति, स्तोत्र प्रभावक भारी है ।
सज्जन चकोर के लिए चन्द्रमा, वीतराग रसधारी है ।।
क्षेम पूर्ण जिन आगम वाणी, विश्वशान्ति उससे होवे ।
"भागचन्द्र" भी करता विनती, हम को आत्मशान्ति होवे ।।२७।।

९. अकलंक स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

त्रैलोक्य सकल सालोक द्रव्य, त्रिकाल जहां पर आलोकित ।
करतल सांगुलि रेखात्रय, वत् जिससे वे प्रत्यक्षित ।।
राग-द्वेष-भय-रोग-जरा-यम, लोभादिक भी तनिक नहीं ।
ऐसे जिन ही मुझ से वन्दित, महादेव अन्यत्र नहीं ।।१।।

काम-वाण-अग्नि से जिसने, पुरस्त्रियों को दग्ध किया ।
मत्त समान पितृवन नाचत, कार्तिकेय तत्पुत्र हुआ ।।
क्या मेरा वह शंकर होगा, शंकर तो मम वह होगा ।
क्रोध दुःख भय मोह क्षयी जो, जीवों का क्षेमक होगा ।।२।।

हिरण्यकश्यप को नखाग्र से, जिसने सश्रम छिन्न किया ।
अर्जुन का सारथि बन रण में, कौरव गण को मरवाया ।।
वह मम देव न विष्णु होगा, होगा ज्ञान निराबाधित ।
जगव्यापी महाविष्णु जिनेश्वर, इष्टदेव जो बुद्धिंगत।।३।।

उर्वशि चित्तहिं राग जनाकर, पात्र दण्ड जिसने धारा ।
अकृतार्थ हो धार कमण्डलु, अन्तर बाहर प्रगटाया ।।
वह ब्रह्मा मम देव न होगा, ब्रह्मा जो जिनदेव सही ।
क्षुधा तृषा सम राग रोग नहिं, हो कृतार्थ निर्दोष वही ।।४।।

मत्स्य मांस को खाया जिसने, जीव जगत को शून्य कहा ।
जो कर्ता वह, नहीं भोगता, यह मत जिसने फैलाया ।।
जिसने ज्ञान क्षणिक माना है, सकल पदार्थ न जाना है ।
वह मम देव न बुद्ध भी होगा, होगा युगपत् जाना है ।।५।।

अगर द्वेष है छिन्नलिंग क्यों, क्यों त्रिशूल धारी निर्भय ।
नाथ अगर क्यों भिक्षाभोजी, क्यों यति नारी संग परिणय ।।
सात्मज कैसे आर्दाजाता, सकलविज्ञ आत्मज्ञ नहीं ।
ज्ञानी कौन करे पशुपति का, आराधन जो स्वस्थ नहीं ।।६।।

ब्रह्मा है चरमाक्षसूत्रयुत, सुर-नारी-रस-विभ्रान्ती ।
उमा-काम से पीडित शंकर, महादेव हैं खट्वांगी ।।
गोप-सुतासेवी चक्राधिप, मोही कृष्ण विष्णु माना ।
निर्भय नहीं विरागी इनमें, अर्हत् आप्त नहीं जाना ।।७।।

सहस्र भुजा फैलाकर शिव, नाचत दिग्चक्री होते ।
शेष भुजंग भोग-शैय्या पर, ब्रह्मा मुख खोले सोते ।।
तिलोत्तमा का रूप देखने, ब्रह्मा चतुर्मुखी होते ।
फिर भी इनको विवुध मुक्ति पथ-दर्शक कह हर्षित होते ।।८।।

अखिल विश्व को जिसने जाना, भव-सागर को पार किया ।
पूर्वापर विरोध से विरहित, निष्कलंक जिनवचन दिया ।।
साधु वन्द्य परमातम गुणनिधि, वीतराग को मैं बन्दूं ।
ब्रह्मा बुद्ध वर्धमान शिव, या विष्णु हो, नमन करूँ ।।९।।

माया नहिं, नहिं जटा कपाला, मुकुट चन्द्र नहिं मूर्धाली ।
खट्वांग सर्प धनु शूल नहीं है, उग्रानन नहिं अस्त्र कडी ।।
नहीं काम नहिं कामिनि जिसके, बैल गीत नहिं नृत्य प्रखर ।
सूक्ष्म निरंजन वह शिव जिनपति, जग में सब की रक्षा कर ।।१०।।

नहीं वादियो ! इस जग को तुम, देखो ब्रह्मांकित भूतल ।
हरि शम्भू की मुद्रांकितमय, चन्द्र सूर्य या वज्र प्रबल ।।
गणेश बुद्ध या अग्नि यक्ष या, शेष नाग से व्याप्त नहीं ।
देखो जग को पूर्ण दिगम्बर, जिन मुद्रांकित आप्त सही ।।११।।

मौंजी दण्ड कमण्डलु भारी, नहिं ब्रह्मा के लांछन हैं ।
जटा मुकुट कपाल लंगोटी, नारी चिन्ह न शिव के हैं ।।
चक्र सुदर्शन शंख गदा को, चिन्ह विष्णु के मत मानो ।
रक्ताम्बर भी नहीं बुद्ध का, सही नग्न मुद्रा जानो ।।१२।।

मुण्डमाल नहिं वक्षस्थल में, खट्वांगी नहिं कर तेरा ।
नहीं देह पर भस्म शूल या, उमा न कर में नरमाला ।।
नहीं मूर्ध पर अर्धचन्द्र है, नहीं कण्ठ में मणिधर है ।
मेरा वन्दन उसको है जो, निर्भय वीतराग जिन है ।।१३।।

उनकी विवेक लहरों में डूबी, अर्थव्याप्त जिनश्रुत देवी ।
तारा शिर को कंपित करती, जैन ध्वजा जब फैलायी ।।
धर्म ज्योति विस्तारी जिसने, वह अकलंक विजेता है ।
रत्नत्रय महिमा से पूरित, क्या वह वंद्य न, जेता है ।।१४।।

तारा देवी निश्चित निज को भगवती मानती आयी थी ।
षण्मासावधि वाद रचाकर, वह ताडित विजित हुई थी ।।
अकलंक भट्ट की वचन तरंगों, से लज्जित विस्मित दिखती ।
मिथ्या बौद्ध मतों में ही वह, मन मज्जन करती लगती ।।१५।।

"भागचन्द्र" मिथ्यावादों से, दूर सदा ही रहता है ।
अकलंक भट्ट के पदचिन्हों पर, चल सन्तोष दिखाता है ।।
वीतराग-सा देव न कोई, जग में उसको दिखता है ।
इसीलिए नहिं कोई दर्शन, उसके मन में रमता है ।।१६।।

१०. महावीराष्टक स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

जिनके चेतन में झलकत हैं, युगपत्, दर्पणवत् सब भाव ।
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त सब, जीव अजीव पदार्थ स्वभाव।।
अन्तरहित भी जगसाक्षी भी, दिनकरवत् जो तमनाशक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित, नयन वसें मम पथदर्शक ।।१।।

निष्पन्द नेत्र जिनके अताम्र हैं, कमल युगल हम भविकों को ।
क्रोधाभाव व्यक्त करते हैं, प्रतिपल अन्तर में जन को ।।
जिनकी प्रतिकृति शान्तिमयी है, अतिनिर्मल है युगदर्शक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित नयन वसें मम पथदर्शक ।।२।।

जिनके चरण-कमल शोभित हैं, नमित देवजन मुकुटों से।
उनकी मणि-आभा से भूषित, घनीभूत रवि किरणों से।।
भवज्वाला की शान्ति हेतु वे, जल सम स्मृति दिग्दर्शक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित नयन वसें मम पथदर्शक ।।३।।

जिनकी पूजा मात्र भाव से, प्रमुदित मन संसारी जन ।
मेंढक देव बना क्षणभर में, गुण-समुद्र सुख-निधिवन ।।
यदि सद्भक्त मोक्षनिधि पायें, तब अचरज क्या सुखदायक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित, नयन वसें मम पथदर्शक ।।४।।

स्वर्णकान्तिवत् पर निर्देही, ज्ञानस्वरूपी गुणरूपी ।
भूपतिवर सिद्धार्थ पुत्र पर, जन्मरहित श्री श्रीशाली ।।
विगतराग भवबाधा से निर्मुक्त हुए जो गणनायक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित नयन वसें मम पथदर्शक ।।५।।

जिनकी दिव्यध्वनि नय-कल्लोलों से निर्मल दिखती है ।
ज्ञान-सलिल से नहलाती-सी, क्षेमंकारी होती है ।।
बुधजन मराल से परिचित अब भी, यह जिनवाणी भवनाशक।
वे तीर्थंकर महावीर नित नयन वसें मम पथदर्शक ।।६।।

त्रिभुवनजयी सुभट काम को, दुर्निवार सहजहिं जीता ।
तरुणावस्था में निज बल से, जिसने संयम से मीता ।।
स्फुरन नित्य आनन्द प्रशम-पद, रूप मनोहर जिननायक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित नयन वसें मम पथदर्शक ।।७।।

महामोहतम के नाशन में जो आकस्मिक वैद्य बने ।
निरपेक्षी जो बन्धु विरागी , महिमा मंगलकारी हैं ।।
साधुजनों के शरणारक्षक , भवभयहारक गुणधारक ।
वे तीर्थंकर महावीर नित नयन वसें मम पथदर्शक ।।८।।

इष्ट भक्ति से महावीर स्वामी की अष्टक स्तुति यह ।
विनत भाव से "भागचन्द्र" की सरस स्वभावी रचना यह ।।
भव दुःख विपदा नाश हेतु "भास्कर" ने इसको अनुवादा ।
जो भी इसको पढे सुनेगा, समझो पंचम गति पाया ।।९।।

११. सरस्वती स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

सूर्य चन्द्र की कान्ति जहां, निस्तेज हुआ करती है ।
चन्द्र किरण सम धवल वस्त्र को, जो धारण करती है ।।
कलहंसी ओंकार स्वरूपा !, सकल कामना पूरी कर ।
सरस्वती वागीश्वरि देवी ! प्रतिदिन मेरी रक्षा कर ।।१।।

स्याद्वाद अरु अनेकान्त दो बाजूबन्द तुम्हारे हैं ।
षट् द्रव्य रूप मणिहार तुम्हारे, ज्ञान द्रव्य को धारे हैं ।।
करुणा कुण्डल शुद्ध आत्मा, रूप मुद्रिका से भूषित ।
प्रमाण-मुकुट मुख-मण्डल शोभित, कितना है दिव्यालंकृत।।२।।

स्यादस्ति रूप मंजीर तुम्हारा, नास्ति रूप तो कंकण है ।
अस्ति-नास्ति किंकणी कनकमय, अवक्तव्य ही कांची है ।।
सद्धर्म-अहिंसा-सागर वृद्धिं-गत झंकृत बुध की धारा ।
चक्रवर्ति गणधर मुनिवर जग, करता अवगाहन सारा ।।३।।

महा-अणु-व्रत कर-पल्लव से, तरु अशोक भी हारा है ।
भेदज्ञान-कमलासन राजित, सप्तभंगि-मुखमण्डल है ।।
अर्धमागधी शौरसेनी भाषाओं से तूं समरंजित ।
दिव्य और प्रशान्त मूर्ति हे, देवी तूं जग-अभिवन्दित ।।४।।

अर्ध चन्द्र-नय जटा-प्रमाणी, योग सुखद लगता है ।
द्वादशांग श्रुत ज्योति-प्रभा से, जग द्योतित होता है ।।
सकल कलाओं में पारंगत, ज्ञान अभय मुद्रा धारे ।
जप माला पुस्तक लांछन हैं, सारे भव के भव तारे ।।५।।

धवल कण्ठहार मणियों का, सप्ततत्त्व वर्णन करता ।
नव पदार्थ के पूर्ण ज्ञान से, देह चन्द्र रुचिकर होता ।।
धवल कीर्ति में पूर्ण चन्द्रमा, नेत्रद्वय नय तेरे हैं ।
मृगशावक से चंचल दिखते, दिव्यकान्ति से चिन्हित हैं ।।६।।

इन्द्र नरेन्द्र मौलि मणियों से, चरण कमल तव वंदित हैं ।
नील वर्ण केशों से होता, कर्म रूप भी चित्रित हैं ।।
गजगामिनि ! तेरी वाणी से, श्रोतागण मुग्ध हुए हैं ।
तेरे वन्दन से संसारी, भव दुःख से मुक्त हुए हैं ।।७।।

सब को पावन करने वाली, उन्नत काम स्वरूपा ।
स्वर्ग-मुक्ति को देने वाली, पाप हारिणी श्रेया।।
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर, वदन-कमल उद्भूता ।
बहुविध भाषामयी भारती, मिथ्या तिमिर विनाशा ।।८।।

हंसस्कन्ध समारूढा तूं, वीणा पुस्तक लिये हुए ।
दिव्य कमल लोचन से शोभित, जगमाता तूं हिये रहे ।।
सरस्वती ब्रह्माणी वरदा, माता श्रुतदेवी कह लूं ।
वागीश्वरि तूं हंसगामिणी, विविध नाम से मैं अर्चूं ।।९।।

हे जिनवाणी ! अम्ब शारदा, सब को तूं पावन करती ।
जो भी तेरी पूजा करता, नन्दित हो झोली भरती ।।
शक्तिहीन मैं शब्दहीन हूं, भाव सहित वन्दन करता ।
वरद हस्त "भास्कर" शिर हो, यही कामना नित करता ।।१०।।

ॐ

१२. गोमटेश स्तुति

विशाल नेत्र मृणाल-संयुत, नीलकमल विराजते ।
मुख-चन्द्र-शोभित नासिका, चम्पक कुसुम सम शोभते ।।
जल सम विशुद्ध कपोल मण्डित, कर्ण कन्धों तक डुले ।
गजराज सुण्ड प्रलम्ब बाहु, गगनवत् निर्मल लहे ।।१।।

जिनका विलक्षण कण्ठ दिखता, दिव्य शंख सुहावना ।
वक्षस्थली हिमवत् बनी, समुदार पाद प्रभावना ।।
कटिदेश सुन्दर सुदृढ निर्मल, प्रेक्षणीय सुतीर्थ-सा ।
त्रैलोक्य भविजन तोषकारी, पूर्णचन्द्र प्रदीप-सा ।।२।।

प्रविभासते जो विन्ध्यगिरि पर, चैत्य सिंहामणि सदृश ।
काया लताओं से विधी-सी, कल्पवृक्षायत सदृश ।।
देवेन्द्र-वन्दित पादयुग्म-प्रभाव निर्भय जो खडे ।
संसार से उन्मुक्त साधक, हैं दिगम्बर वे बडे ।।३।।

सर्पादि जीवों से तनिक भी, भय नहिं निष्कम्प जो ।
निर्वस्त्र सम्यक् दृष्टि क्षायक, मोहनाशक सिद्ध जो ।
वांछा नहीं सुख की जिन्हें, भरतेश से वैराग्य है ।
निरुपाधि "भास्कर" वीतरागी, गोम्मटेश प्रणाम है ।।४।।

१३. मंगलाष्टक स्तोत्र

नख-चन्द्र-ज्योति जिनके चरणों की, द्योतित-सी सुर मुकुटों से।
प्रवचन रूप उदधि-वृद्धि से, नित्य चन्द्र लगते श्री से ।।
वन्दित होते योगिजनों से, वे परमेष्ठी सुखी करें।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु तव पाप हरें ।।१।।

तीन लोक फैला यश जिनका, तीर्थंकर चौबीस हुए ।
वृषभादि और भरतेश्वर आदि, चक्रवर्ति द्वादशी हुए ।
नारायण प्रतिनारायण नव, त्रेषठ महापुरुष सारे ।
पापक्षय वे करें और नित, सुखद रहें हर पद तेरे ।।२।।

ज्योतिर् व्यन्तर भवनवासि, वैमानिक मेरु कुलाचल पर ।
जम्बू शाल्मलि चैत्यवृक्ष, वक्षार आदि विजयार्धों पर ।
कुण्डल इक्ष्वाकर मानुषोत्तर गिरि नन्दीश्वर स्थित ।।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय सब, करें पापक्षय, सुखी नमित ।।३।।

गर्भ जन्म दीक्षा कल्याणक, केवलज्ञान सुमंगल हैं ।
कर्मविनाशक मोक्षप्रदायक, जो निर्वाण कल्याणक है ।।
सुरनर मिलकर सकल प्राणिजन, हर्षित आनन्दित होते ।
ऐसे सभी महोत्सव तेरे, करें पापक्षय नत होते ।।४।।

कैलाशनाथ आदिदेव की, महावीर की पावा है ।
चम्पा वासुपूज्य की है तो, नेमिनाथ की ऊर्जयन्त है ।।
शेष बीस तीर्थंकर जिन की, निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर।
तुम्हें सभी निष्पाप बनायें, सुखी करें जिननाथप्रवर ।।५।।

औषधि तप दर्शन स्पर्शन, घ्राण श्रवण ऋद्धिधारी ।
अष्टांग महानिमित्तविज्ञ भी, चारणाष्ट ऋद्धिधारी ।।
ज्ञान पंच बल तीन ऋद्धि के, बुद्धि ऋद्धि जो सर्वेश्वर ।
जगतपूज्य गणनायक तेरे, करें पापक्षय लोकेश्वर ।।६।।

दिशा अंगनाओं पर शोभित, चन्दन सुगन्धवत् यश वाले।
चक्रवर्ति बलभद्र भोगीन्द्र, कृष्ण आदि उद्भव वाले ।।
जिसके बिन नरकादि योनि में, दुःख सहते निश्चित प्राणी ।
स्वर्गादिक सुखदायक तेरी, रक्षा करे आप्त वाणी ।।७।।

बनती हारलता सर्प असि, पुष्पदाम जिससे बनते ।
अमृत बिष बन जाता हर पग, शत्रु मित्र भी हो जाते ।।
होकर देव प्रसन्न गगन से, रत्नों की वर्षा करते।
ऐसा धर्म तुम्हारा भी नित, बना रहे क्षेम करते ।।८।।

सौभाग्य सम्पदादायक यह जिन, मंगल अष्टक है नामी ।
तीर्थंकर कल्याण महोत्सव, पर जो सुने पढे ज्ञानी ।।
धर्मार्थकाम से युक्त मुक्ति के, आश्रय वे सज्जन बनते ।
"भास्कर" सम द्युति जग फैलाते, निज-पर कल्याणक होते ।।९।।

१४. बारह भावना

शुद्ध भावना, मुक्ति साधना, शुभ संकल्प सदा मन में।
जप अनुप्रेक्षा मन्त्र मनन भी, अर्थ परीक्षा हो मन में ।।
मन एकाग्र करो ध्यान से, चिन्तन वस्तु-स्वभावी हो ।
नौका होगी तट पर भव से, यदि तुम सम्यग्दर्शी हो ।।१।।

हर संयोग सदा नश्वर है, अध्रुव है, शाश्वत नहिं है।
हर क्षण देह बदलता रहता, वह भी अपना नहिं, सच है।।
नहीं मृत्यु से अब तक कोई, बच पाया है दुनियां में।
श्रुतज्ञान से भावित होकर , तन्मय हो जाओ जिन में ।।२।।

जाओ स्वयं शरण निज की में, पर-शरणा दुःखदायक है।
त्राण न कोई जग में साथी, है सद्धर्म शरण, सच है।।
दर्शन शरण आत्मा मेरी, रत्नत्रय ही साधन है।
कर विवेक जिनभक्ति कर ले, चेतन ही आराधन है ।।३।।

हर संसारी दुःखी रहा है, भव-चक्कर से नहिं बचता।
फिर भी उसमें सुख खोजत है, नये-नये दुःख को रचता।।
जन्म-मृत्यु की अमिट कहानी, हर संसारी में होती।
मोह छोड ध्रुव पर चिन्तन कर, निजता में निजता होती ।।४।।

हम सब एक अकेले जग में, चिन्तन हो एकत्व सही।
हर संयोग वियोग भरा है, दर्प न हो ममकार नहीं।।
नहीं कोई अपना संसारी, भरा स्वार्थ से सारा जग ।
मोही बन क्यों भव में रुलता, आतम भज, सत् पा ले मग।।५।।

देह आत्मा भिन्न-भिन्न है, तत्त्व तथ्य को पहचानो।
द्रष्टा मात्र न हो संवेदक, भेदज्ञान विवेक रखो।
देहाशक्ति न होगी मन में, यदि अन्यत्व भावना है।
योग-वियोग न जोडो निज से, कायोत्सर्ग साधना है ।।६।।

घृणित पदार्थ बहा करते हैं, हर पल नश्वर काया से ।
शोणित मांस मेद अस्थि सब, मज्जा शुक्र बहा करते ।।
नहीं शुद्ध होता है कोई, गन्ध फुलेल लगाने से ।
शुचिता नहीं कहीं काया में, ममत्व छूटता दर्शन से ।।७।।

राग-द्वेष हिंसा का क्षण है, कर्माश्रव को बन्द करो ।
मिथ्यातम को नाश करो वस, राग योग को दूर करो ।।
आशा एक विचित्र श्रृंखला, संसारी बंध जाते हैं ।
नहीं प्यास बुझ पाती उससे, जन्मान्तर ही बढते हैं ।।८।।

क्रुद्ध सांप की तरह वृत्तियां, संघर्षण करती रहतीं ।
भेदज्ञान जब तक नहिं होगा, संयम वृत्ति नहीं जगती ।।
इन्द्रिय-मन सम्यक् निरोध ही, संयम शक्ति बढाता है ।
संयम और निर्जरा से ही तत्त्व-अयोग हो जाता है ।।९।।

ध्यान साधना कर्म-निर्जरा का कारण बन जाती है ।
दमन नहीं यह रेचन कारी, संचित बाहर करती है ।।
मैं विलुप्त हो जाता है बस, मात्र बचा करता है ।
सब कुछ ज्योतिर्मय हो जाता, भेद सभी मिट जाता है ।।१०।।

धर्म प्राण है द्वीप, प्रतिष्ठा, धर्म-रूप का ध्यान करो ।
वर्तमान में जागरूक हो, इन्द्रिय-मन निर्मल कर लो ।।
वस्तु तत्त्व की खोज करोगे, अन्तर आलोकित होगा ।
मुक्त-कषायी समता पाओ, वीतराग दर्शन होगा ।।११।।

पूर्ण विश्व ही पुरुषाकृति है, चिन्तन लोक भावना है ।
वैविध्य और वैचित्र्य विचारो, समता सत्य प्रतिष्ठा है ।।
कच्छपवत् अन्तर प्रवेशकर, इन्द्रिय रक्षित हो जाओ ।
मान छोड निर्भय हो जाओ, निकट चेतना को पाओ ।।१२।।

मनुष्य जन्म महादुर्लभ है, सम्यक् बोधि और दुर्लभ ।
सम्यक्त्व प्राप्ति भी कठिन साधना, निश्छलता भी है दुर्लभ ।।
आत्मा ज्ञानमयी है उसका, बोध करो सम्यक् तप से ।
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य वस्तु है, "भास्कर" हो आत्मस्थिति से ।।१३।।

१५. आचार्य शान्तिसागर के प्रति विनयांजलि

चारित्र चक्रवर्ति गुणसागर, शांतिवीर, करुणानायक।
हे समाधिसम्राट् तपस्वी, श्रमण संघ के उन्नायक ।।
भवसागर में डूबे जग को, पतवार बने संयम साधक ।
ज्ञानी-ध्यानी तेजस्वी तुम थे परमातम के आराधक ।।१।।

उज्ज्वल ज्ञानाचार संग ले, धर्मज्योति के प्रावाहक।
वात्सल्य सुधा सागर गुरुवर, जिन श्रावक गण उद्धारक ।।
गौरवशाली मुनि परम्परा, पुनरुज्जीवित हुई तुम्हीं से
तपस्तेज आभा मण्डल से, जगती पावन हुई तुम्हीं से ।।२।।

तेरी वाणी जिनवाणी थी, दिव्य ध्वनि-सी कल्याणी
ग्राम-नगर में गुंजित होती, उद्बोधक थी तव वाणी।
ज्ञान भक्ति सत्कर्म भाव की, निर्मल धार बहायी थी ।
जीवन के कण-कण में तेरी, त्याग साधना छायी थी।।३।।

दक्षिण से उत्तर को जोड़ा, नैतिकता का पाठ दिया
संयम का उद्बोधन देकर, अध्यातम रस पान किया।
मिथ्यावादों का खंडन कर, निर्भय होकर निर्ममी बने
दुर्जन गण को क्षमा भाव से, शामिल कर तुम जयी बने ।।४।।

नारिकेल-सी रही कठोरता, अनुशासन के शासन में
पर अंतर से द्रवणशीलता, प्रतिबिम्बित तव चेतन में।
सत्यनिष्ठ चारित्र भरा था, जीवन के हर पर्तो में,
आचार्य नहीं तुम संस्था ही थे संघ विकास के हर पथ में ।।५।।

उपगूहन स्थिरीकरण के, तुम थे सच्चे उन्नायक।
उपसर्गो को झेल सदा ही, रहे सदा आनंददायक।।
सामाजिक उत्थान किया था, पुनर्विवाह को बंद किया।
बालविवाह का भी विरोध कर, नारी का उत्थान किया गया ।।६ ।।

ढेरों तेरे योगदान से, जैन समाज कृतकृत्य हुआ।
संयम वर्ष मनाकर तेरी, शिक्षा प्रसार कर धन्य हुआ।
यह तेरा अभिनंदन वंदन, करुणासागर ! पावन हो
नतमस्तक कृतज्ञ चरणों में, अर्चन भावन मुखरित हो ।।७।।

जिन मंदिर की परम शुद्धता, को प्राणों से प्यार किया।
समता और सहिष्णुता से ही, आंदोलन निश्तेज किया।
लोकोपकारिता, वीतरागता, निस्पृहता संयम साधक
श्रुतसंवर्धक कल्याणी मुनिवर, मानवता के आराधक ।।८।।

जन-जन ने तब योगदान को, हृदय-पटल पर आंका है।
जिनमूर्ति सी पूजाकर उसने मर्यादा को भांपा है।
बाहुबली के चरणभुंज से, दिव्य ज्योति संप्राप्त हुई।
निराकांक्ष निष्कंपित बनकर यात्रा यशस्वी हुई ।।९।।

१६. पणमामि णिच्चं हे अज्जिमाअं

बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्जीमाता ।
तेरी भक्ति का प्रसाद है, जोड़ूँ तुम से माता ।।
शुद्ध दूध से श्वेत, गुल्लिका, भरकर जब निकली,
मस्तकाभिषेकों की माला, मानों पहले ही पहनी।
बूढ़े चरणों में शक्ति पा, प्रतिदिन पर्वत चढ़ती
कोई मुझको भी अवसर दे, बार-बार कहती।
नहीं किसी ने तुमको पूछा, हर अनदेखी करता
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्जी माता ।।टेक।।१।।

बाहुबली भगवान ने देखा, शायद वे मुस्कराये
देवों ने भी देखा-परखा, शायद वे संग आये।
महामात्य चामुण्डराय ने, कलशों दूध ढहाया,
पदप्रक्षालन नहीं हुआ, वह नाभि तक ही आया।
तेरी निर्धनता से तुझ पर कहाँ ध्यान जाता,
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्जी माता ।।२।।टेक।।

चामुण्डराय का दर्प दमन करना था धर्म प्रकृति को।
सही सीख देनी थी शायद उनको इस धरती को।
काललला देवी माता की भी इच्छापूर्ति हुई थी।
श्रद्धा भक्ति की शक्ति भी, तुमसे प्रकट हुई थी।

देख रहा था सारा जग, तब कौन बढ़े कब आता
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्जी माता ।।३।।टेक।।

नेमिचन्द्र आचार्य देव को, सद्विचार तब आये,
कहा गुल्लिका देवी से, क्यों नहीं निवेदन करते।
चामुण्डराय की नम्र प्रार्थना, तेरे कान पड़ी थी
धन्यवाद दे, लुटिया लेकर, आगे त्वरित बढ़ी थी।
अखिल जगत तुमको निहारता, पलकों पर बैठाता,
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्जी माता ।।४।।टेक।।

मन प्रमुदित हो पुलक-पुलक उच्च मचान चढ़ी
बाहुबली स्वामी की जय हो, कहकर उठी बढ़ी।
दुग्धाभिषेक करते ही उसके, हुआ तुरंत पद प्रक्षालन,
रोमांचित चामुण्डराय के, हर्षाश्रु से भरे नयन।
निरभिमान हो तव चरणों में, अपना शीष झुकाता।
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्जीमाता ।।५।।टेक।।

पुष्पवृष्टि हुई गूँज उठी भू जयकारा की ध्वनि से,
कूष्मांडिनी देवी आयीं, मानों स्वर्ग धरा से।
गोम्मटेश के ही समक्ष तब मनमोहक मूर्ति बनी,

शासनदेवी पूर्ण कुम्भले, विनत आज भी हुई खड़ी।
आदर्श बनी आध्यात्मिकता की, सबको दे साता।
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्ञीमाता ।।६।।टेक।।

मणिप्रभा-सी तेज कांति को, धर ललाट मुस्कायी
केशकलाप चांदी सा लेकर, शारद लक्ष्मी पायी।
कल्पवृक्ष-सी बनकर आयी, भद्रप्रकृति गहरायी
हर्ष जनित अश्रुधारा से, सबको शीष नवायी।
मैं भी तेरी छाया में हैं, अन्तर्गुंजित करता,
बारम्बार नमन करती हूँ, हे अज्ञीमाता ।।७।।टेक।।

१७. ऐसा हो जीवन-दर्शन

पंच व्रतों की गंगा में, निशिदिन हो अवगाहन।
अनेकांत के सीधे पथ पर, अविचल हो आरोहण ।।१।।

सम, संयम, सद्भाव समन्वित, महावीर की जिनवाणी।
सहअस्तित्व और मानवता, से आपूरित कल्याणी।।२।।

शिक्षाव्रती बनकर सामायिक, प्रतिक्रमण का आलोचन।
पूर्वाग्रह से मुक्त दृष्टिपथ, कर्तव्यभाव से पूरित मन ।।३।।

सभी दृष्टियों का आदर कर, द्वन्द्व न मन में ले आओ ।
सदाचार की सम्यक् धारा, राग-द्वेष के भाव न हो।।४।।

संसार नाम है द्वन्द्व कथा का, दूर करो उसके कारण।
आप्रासंगिक कैसे होगा, महावीर का जिन-दर्शन।।५।।

आत्मतुला संकल्पशक्ति, जीवन में विकसित होगी।
वीतरागता, जागरूकता, प्रामाणिकता निश्चित होगी।।६।।

रमणीय प्रकृति का सौम्य भवन, मत कुचलो पद चापों से।
अभिशप्त बनी जीवनधारा, सींचो सम्यक् धारा से।।७।।

महावीर प्रभु की दृष्टि में, निज-पर का कल्याण करो।
प्राणी मात्र से मैत्री कर लो, मानवता की भूमि धरो ।।८।।

सत्य अहिंसा का यदि सच्चा, हो अनुपालन हम सबसे।
विश्वशांति का निश्चित ही, प्रस्थापन होगा ढंग से ।।९।।

अहं ग्रंथि को तोड़ो जड़ से, स्वाध्याय सम ध्यान करो।
ममकार का करो विसर्जन, तप से भरो आत्मशोधन ।।१०।।

आत्म नियंत्रण, अनेकांत को, केन्द्र बिन्दु यदि मानोगे।
अष्टकर्म का दहन करोगे, सिद्ध-शिला को पाओगे ।।११।।

वर्तमान सन्दर्भो में भी, महावीर उपयोगी हैं।
जाति और वर्गीय द्वन्द्व से, मुक्त कराते योगी हैं।।१२।।

चारित्तं खलु धम्मो धारी, समता का आचमन करें।
क्षमाशीलता सहिष्णुता को, भलीभांति स्वीकार करें।।१३।।

सामाजिक समरसता साधो, जियो सभी को जीने दो।
लोकमांगलिक भाव सम्हारो, विकास सभी का होने दो।।१४।।

१८. कैसे गाऊँ मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में

कैसे गाऊँ मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में
जिसे दूर भगाना चाहा वही निकट आ जाता है।
जिस बंधन को तोड़ा था वह नया रूप ले लेता है।
मन का उन्मादीपन देखो कहां दौड़ता फिरता है।
संसार चक्र में हर प्राणी का चरण घूमता चलता है।।
अंधा विवेक चल पड़ता है जब नास्तिकता गलियों में
कैसे गाऊँ मुक्तिगीत को महावीर के चरणों में ।।१।।

दीपक खुद जलकर पदार्थ को, भरसक प्रकाश में लाता है।
स्वयं राख होकर जन जन को, मार्ग दिखाता जाता है।।
मानव आनंदित होता पर, पर को दुःखदायी होने में।
आसक्ति के बंधन बंधते आग सुलगती आंखों में।।
रूपों को पी-पीकर भी वह तृप्त नहीं होता मन में
कैसे गाऊँ मुक्तिगीत को महावीर के चरणों में ।।२।।

मृग मरीचिका के पीछे यह मानव दौड़ा जाता है
हालाहल को पीकर के वह सीमालंघन करता है।।
ममकारी ममता से जकड़ा तूं निज स्वरूप से भटका है।

कर्मकांड के घन चक्कर में धर्म अधर में लटका है।।
भौतिकता की पूजा करता, राग द्वेष की माया में।
कैसे गाऊँ मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में ।।३।।

पर पदार्थ से नाता तोड़ो मिथ्या भ्रम को धो डालो।
पश्चात्ताप करो अतीत पर, वर्तमान को पा जाओ।।
भावी जीवन की उज्ज्वलता में मन के कटु बंधन तोड़ो।
वीतराग प्रभु की वाणी से आत्मशक्ति को पहिचानो।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित को पालो आत्म जगत में ।।
कैसे गाऊँ मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में ।।४।।

आशा का पच जाना कोई सीधा सरल नहीं है।
वह है महा सोमरस जो विषधर से हीन नहीं है।।
करुणा प्रेम परस्पर सहयोगी बन नश्वरता परखो।
सत्य अहिंसा अनेकांत की धारा में बहना सीखो।।
पाऊं भेदज्ञान को कैसे कैसे चल दू निज स्वरूप में ।।
गगन समान अनंत वासनाओं से मैं संतृप्त रहा।
तृष्णा सीमा नहीं टूटती राग द्वेष में झुलस रहा।
भौतिकता की चकाचौंध में समता सांसों दूर हुई।।
मन मलीनता और वढी आध्यात्मिक श्रद्धा सुप्त हुई।
रमना चाहूँ भी तो कैसे, कैसे परमातम पद में ।।
कैसे गाऊँ, मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में ।।५।।

उपादान की प्रतिभा किरणों से सारा तम हर जायेगा।
नहीं रूप का बंधन होगा मोहपाश कट जायेगा।।
आकुलता की लौह श्रृंखला भस्मसात हो जायेगी।
मानवता की सौम्य चेतना जीवन सुरभित कर देगी।
समता अक्षर फूट पड़ेगें स्वानुभूति की रागों में ।।६।।

मैं जिनवर कुछ नहीं मांगता बस निमित्त तो बने रहो।
मेरा भी पुरुषार्थ रहेगा तुम दीपक बन खडे रहो।।
नहीं बुझेगा साहस मेरा संसारी झांझावातों से
नौका पर अब बैठ चला हूँ युद्ध करूँगा भवरों से ।।
मंजिल पाकर मिल जाऊँगा समुद्र दीप की बाहों में।।
कैसे गाऊँ मुक्ति गीत को महावीर के चरणों में।।७।।

१९. तुमको मेरा शत्-शत् वंदन

हे आदिपुरुष संस्कृति उन्नायक, ज्योतिर्धर षड्विद्याकारक।
महाश्रमण, हे ऋषभदेव तुम ज्ञानसूर्य हो धर्माराधक ।
तुमने दिया विकास महापथ, तिमिर हटा आलोक दिखाया
षड्द्रव्यों का ज्ञान कराकर, कानन से पत्तन पहुँचाया।
सारी पृथ्वी के हे नंदन, तुमको मेरा शत्-शत् वंदन ।।१।।
असि-मसि कृषि वाणिज्य दिखाया, विद्याशिल्प सभी बतलाया।
अध्यात्म देवता, हे परमेश्वर, स्वतंत्रता का दीप जलाया।
तुम शिव रूपी, भव विद्रूपी, शांति प्रदाता, आत्म स्वरूपी।
हमको भी वह शक्ति दिखा दो, बन जायें हम भी सद्रूपी,
करुणाशाली जगदानंदन, तुमको मेरा शत्-शत् वंदन ।।२।।
उत्तर से दक्षिण को जोड़ा, पूर्व और पश्चिम सहलाया।
मध्यदेश को केन्द्र बनाकर, जैनधर्म को ही चमकाया।
आतम रस की वर्षा करके, रत्नत्रय को धुरी बनाया।
परम विशुद्ध त्रिवेणी संगम, में सबको युगपद् नहलाया ।
महाबली योगी वृषचंदन, तुमको मेरा शत्-शत् वंदन ।।३।।
जातिवाद का भेद मिटाया, समता के आयामी स्वर में।
सत्य अहिंसा की व्याख्या दी, अपरिग्रह की शाही आभा में।

२०. उन गणेश वर्णी के चरणों में

जिनके बचनों की गंगा में, शुचिता भी पावन होती।
जिनकी वीणा अन्तर स्वर दे, आत्मचेतना भर देती।।
सपनों के मीठे महलों को, तोड जगाया है जिसने।
अन्तर्हित हीरा दर्शाकर, हमको चौंकाया जिसने ।।१।।

ज्ञान-राशि फैलायी जिसने, जैनधर्म का पालन कर।
स्याद्वाद, मोराजी खोले विद्यालय, समता रखकर।।
विद्वत्सागर उदित हुआ था, जिनकी निश्छल वाणी से।
हुआ समाज भी रूढिमुक्त तब, धन्य चिरोंजा बाई से।।२।।

सरल स्वभाव मधुर वाणी से, जिसने सब को अपनाया।
निर्द्वन्द्व और निष्पक्ष भाव से, अध्यातम रस पान किया।।
बुन्देलखण्ड की माटी जिसने, अपने मस्तक से चूमी।
श्रद्धा की सरगम धारा में, शंखध्वनि जिसने फूंकी ।।३।।

ज्ञान ज्योतिधारा में जिसने अवगाहन कर कुछ पाया।
गली गली द्योतितकर जिसने अपना जीवन चमकाया।।
जिनकी वाणी सुनकर ही तो, बंधी मुट्ठि खुल जाती थी।
भीतर ज्योति जगी सी दिखती, अनबुझी पहेली बुझती थी ।।४।।

उन गणेश वर्णी के चरणों, "भास्कर" शीश झुकाता है।
टूटे फूटे शब्द भाव से, नया गीत लिख देता है।।
जिनका दर्शन पुण्य पुञ्ज था, अन्तश्चेतन था पावन।
जिनका आशीष पारस पत्थर, सब कुछ हो जाता सावन।।५।।

आज भले ही अर्थशास्त्र की, सीमा से जो बाहर हों।
राजनीति पंकी प्रांगण में, उनका कोई सत्त्व न हो।।
पर जिनके दर्शन कर तत्क्षण आंसू भी झर जाते थे।
लगता जीवन व्यर्थ हुआ है, स्वर पुलकित हो जाते थे।।६।।

ऐसे जाग्रत संतों के बिन, जन समाज भी मुर्दा है।
क्या बबूल का पेड कभी भी आम उसे दे सकता है।
अनुपम जिनका योगदान है, कोई नहीं भुला सकता।
'भागचन्द्र' सब झुक जाते हैं, स्मृति से आँसू झरता।।७।।

ॐ

२१. श्रद्धा के गौरीशंकर

तपोनिष्ठ हे ज्ञाननिष्ठ, चारित्रनिष्ठ हे गुरुवर।
तव प्रशान्त छाया शीतलतम, मन अशान्त बैठा तरुवर।।
आभामण्डल तेरा पावन, ज्योतिर्मय जीवन है।
आध्यात्मिक सरिता बहती, मंगलमय अर्पण है।।१।।

ज्ञानसिन्धु के विद्यासागर, सारस्वत हो, निर्भय हो।
वीतराग पथ के साधक, मूलाचारी श्रुतधर हो।।
धन्य तुम्हारी वत्सलता है, सर्वोदय समता पूरित।
श्रद्धा पांखें दयोदयी हैं, होती रहें प्रफुल्लित।।२।।

पावन चरणों से तीर्थो की, भूमि बनी सुर नक्षरी।
डगर-डगर पद-चिन्हित गलियां, भरती दिखती गगरी।।
जीवन का सुन्दर यह उपवन, सबको सुरभित कर देता।
शस्य श्यामला से शोभित मन, जिनवाणी से भर देता।।३।।

जो भी तुमने दिया समाज को, अनुपम निश्चित अगणित है।
साहित्य और उपदेश सभी कुछ, स्वानुभूति से भावित है।।
अनुयोगों से सिंचित वाणी, प्रतिभा से अनुशासित है।
सारा वर्ग समुन्नत होगा, भाग्योदय अनुरक्षित है।।४।।

पाषाण बने चेतन तुझसे, जन-जन का कल्याण किया।
ज्ञानोदयी श्रृंखला पनपी, सर्वोदय को खडा किया।।
तीर्थों की काया पलटी, नये तीर्थ का जन्म हुआ।
ज्ञान रश्मियाँ चतुर्दिशा में बिखरीं समन्तभद्र किया।।५।।

निरोगमयी हो तेरा जीवन, ज्ञानामृत वर्षा होवे।
सम्यग्ज्ञानी जग हो जाये, तमस तिमिर भी नश जावे।।
जो भी तुमने पाया अब तक, सोपान और भी आगे हैं।
अध्यात्म-साधना की झोली में रत्नत्रय के धागे हैं।।६।।

ये धागे जोडें समाज को, नहीं कभी कोई टूटे।
तेरी ममता से बंध जायें, राग-द्वेष से सब छूटें।।
निज-पर का कल्याण करो हे, वीतराग विद्यासागर।
चिदानन्द से आप्लावित हो, श्रद्धा पूरित गौरीशंकर।।७।।

दशो दिशायें पूजा करतीं, तेरे पावन चरणों में ।।
नये गीत का स्वर उभरा है, विनयी मेरे मानस में ।।
चंचल मन से कब उभरूंगा, कब समझूंगा जिनवाणी ।।
"भागचन्द्र" भी वीतराग हो, हो जाऊं सम्यग्ज्ञानी।।८।।